# जैनसिद्धान्त-भास्कर ।

ज्ञान भंडार
बाजार इन्दौर
सिद्धांत भास्कर

## श्रीजैनसिद्धान्त-भवन आराका

ऐतिहासिक मुखपत्र ।

भाग १] जुलाई से सेप्टेम्बर १९१२ आषाढ़ से भाद्र वीरनि० २४३८ [किरण १

सम्पादक और प्रकाशक

**पदमराज रानीवाला ।**

वार्षिक मूल्य ३) रु० एक प्रतिका १) रु०

नं० ६२ काटन ष्ट्रीट, कलकत्ता "कृष्ण प्रेस" में राधाकृष्ण टीबड़े वाला द्वारा मुद्रित ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

## विषय-सूची।


| विषय | पृष्ठ | लेखक |
|---|---|---|
| १ मङ्गलाचरण ... ... | १ | सम्पादक |
| २ भारतीस्तवन ... ... | २ | पं० हरनाथ द्विवेदी प्रधान पुस्तकालयाध्यक्ष-श्रीजैन-सिद्धान्त-भवन आरा। |
| ३ समर्पण ... ... | २-४ | सम्पादक |
| ४ पत्रका मुख्योद्देश्य और सम्पादकीय वक्तव्य | ५-१० | ,, |
| ५ श्री१०८ अन्तिम श्रुतकेवली भद्रवाहु स्वामी और उनके शिष्य मगधाधिपति महाराज चन्द्रगुप्तका इतिहास ... ... | ११-१४ | ,, |
| ६ चन्द्रगिरि पर्वतकी चन्द्रगुप्त वस्तीका शिलालेख | १५ | ,, |
| ७ संस्कृत शिलालेखका संक्षिप्त भाषानुवाद | १५-१६ | पं० झम्मनलाल द्वारा अनुवादित |
| ८ महापुराणका परिचय ... ... | १७-२० | सम्पादक |
| ९ आदि पुराणके मंगलाचरण और प्रशस्ति | २१-२५ | ,, |
| १० उत्तरपुराणके मङ्गलाचरण और प्रशस्ति | २५-२९ | ,, |
| ११ आदिपुराण और उत्तरपुराणकी प्रशस्ति और मङ्गलाचरणका संक्षिप्तभाषानुवाद | २९-३६ | पं० झम्मनलाल द्वारा अनुवादित |
| १२ संस्कृत पट्टावली ... ... | ३७-३९ | सम्पादक |
| १३ पट्टावलीका भाषानुवाद ... | ३९-४३ | पं० झम्मनलाल द्वारा अनुवादित |
| १४ श्री१०८ भगवज्जिनसेनाचार्य और गुणभद्र स्वामीके पारमार्थिक वंशवृक्ष और इनका परिचय ... ... ... | ४४-५४ | सम्पादक |
| १५ श्रुतस्कन्ध यन्त्रका चित्रपरिचय (पद्य) | ५५ | पण्डित हरनाथ द्विवेदी |
| १६ श्रुतस्कन्ध यन्त्रके चित्रका परिचय (गद्य) | ५६-६० | सम्पादक |
| १७ शास्त्रोंके जीर्ण पत्र-वृक्षका चित्रपरिचय (पद्य) | ६१ | पं० हरनाथ द्विवेदी |
| १८ शास्त्रोंके जीर्ण पत्र-वृक्षका चित्रपरिचय (गद्य) | ६२-६३ | सम्पादक |
| १९ श्रीजिनवाणीकी वर्त्तमान हीनावस्थाका चित्रपरिचय (पद्य) ... ... | ६३-६४ | पं० हरनाथ द्विवेदी |
| २० श्रीजिनवाणीकी वर्त्तमान हीनावस्थाका चित्रपरिचय (गद्य) ... ... | ६५-६६ | सम्पादक |
| २१ राष्ट्रकूटवंशीय महाराजाओंका इतिहास | ६७-८० | मन्त्री सि० भ० आरा |
| २२ आवश्यक सूचना और समाचार | ८१-८४ | सम्पादक |


Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

स्वर्गीय श्रीमान् बाबू देवकुमारजी,
संस्थापक श्रीजैनसिद्धान्तभवन, आरा।

ART PRINTERS, 14, College Sq., Cal.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

श्रीजिनवाण्यैनमः ।

# भास्कर

ऐतिहासिकपत्र ।

भाग १] जुलाई से सेप्टेम्बर १९१२ आषाढ़ से भाद्र वीर नि० २४३८ [किरण १

## मङ्गलाचरण ।

"जनयति मुदमन्तर्भव्य-पाथोरुहाणां, हरति तिमिर-राशिं या प्रभा भानवीव ।
कृतनिखिलपदार्थद्योतना भारतीद्धा, वितरतु धुतदोषा सार्हती भारती वः" ॥ १ ॥

"वाणी कर्म्मकृपाणी द्रोणी संसारजलधिसन्तरणे ।
वेणीजितघनमाला, जिनवदनाम्भोजभासुरा जीयात्" ॥ २ ॥

भावार्थ—कमलरूपी भविकोंके मनमें आनन्द उपजाने वाली, सूर्य्यसम्बन्धिनी प्रभा कीसी अन्धकारको नष्ट करनेवाली तथा सभी सांसारिक और पारमार्थिक पदार्थोंको समुद्भासित करनेवाली ज्योतिर्मय सरस्वती आप (पाठकों)की रक्षा करें ॥ १ ॥ (श्रीअमितगत्याचार्य्य)

भावार्थ—ज्ञानावरणादि अष्टकर्मोंको नष्ट करनेके लिये कृपाण कीसी, संसार-समुद्रसे पार होनेके लिये नौका कीसी और अपनी वेणीसे मेघसमूहको भी जीतनेवाली श्रीजिनेन्द्र भगवानके मुखकमलकी प्रकाशमयज्योति श्रीजिनवाणी की सदा जय हो ॥ २ ॥ (महाकवि हरिश्चन्द्र)

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

# भारतीस्तवन।

भारती माता तुम्ही त्रिभुवन-प्रथा-संचालिका।
तीन लोकोंकी तुम्ही गरिमा तुम्ही गुणमालिका। १।
हैं सदा सत्कीर्तियां निर्भर सबोंकी आपपर।
हो रहीं बातें सुसम्पादित सबोंकी आपपर। २।
हो यहां जिनधर्म्मकी प्राचीनताकी जाग्रति।
जैन-साहित्यादिकोषोंकी समुन्नति जाग्रति। ३।
जैनधर्म्मीकी अविद्याका सदा निर्मूल हो।
कायमनकर्म्मोंसे विद्याकी व्यसनता मूल हो। ४।
था समुन्नत देश भारतवर्ष फिर हो उस तरह।
मान, मर्यादा, दया, शुभ-सन्तति हो उसतरह। ५।
इन समुन्नतियोंके साधनको बतानेके लिये।
जैन-सिद्धान्तोंकी बातोंको दिखानेके लिये। ६।
है कलेवर "जैनभास्कर" का ये प्रथमोदय भी है।
आपके मृदु-जलज-हस्तोंमें समर्प्पित सविध है। ७।
क्रूर कुत्सित कायरोंकी चालवन छाये नहीं।
विघ्न वाधाएं इसे मनसे भी अपनाये नहीं। ८।
ज्ञानमय-किरणोंकी पूंजीकी सदा बढ़ती रहे।
पत्र-गुण-ग्राहोकी चेष्टा चौगुनी चढ़ती रहे। ९।
आपका यह कार्य्य है तुम स्वामिनी इस कार्य्यकी।
सर्वथा रक्षा करो उन्नति करो इस कार्य्यकी। १०।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

# समर्प्पण

प्रिय धर्म्म-धौरेय-विज्ञ-पाठक-महोदयो !

श्री जिनवाणीके कृपा-कटाक्षसे "श्रीजैन-सिद्धान्त-भवन"—संरक्षित प्राचीन धार्म्मिक-महत्वका कुछ अंश उपहार-रूपसे लेकर आज हम आपलोगोंकी सेवामें उपस्थित हुए हैं। महोदयो ! यह वही उपहार है जिसके अस्तित्वका दृढ़करनाही हमारे पूर्वाचार्य्यों तथा महर्षियोंने अपना पारमार्थिक मुख्योद्देश्य समझ रक्खा था, यह वही उपहार है जिसकी कारण-विशेषतया उच्छृङ्खलतासे औरोंकी समझमें जैन-धर्म्मका यथार्थरूप सन्देह-दोलारूढ़ हो रहाहै और यह वही उपहार है जो अब तक अज्ञानान्धकारमें रह कर भी अन्यान्य विद्वानोंके दृष्टिगत होनेसे ही उनके चित्त-पटलपर अपने पुरातन-प्रभावका सहसा चित्र खींच देता है।

इस उपहारका नाम "भास्कर" है। प्राचीन तथा आधुनिक कवियोंने यद्यपि चन्द्रमा ही की चन्द्रिका को जगदाह्लादिनी मान रक्खा है तौभी हमारे इस "भास्कर" की किरणोंकी प्रचण्डता केवल अज्ञान ही को मुर्झाने, सन्तप्त करने और हटानेके लिये नहीं है किन्तु विज्ञोंकी धार्मिक-प्रतिभा-पद्मको सदा प्रस्फुटित करने और संसारमें प्रकटित तथा गुप्त प्राचीन पदार्थोंको दिक्‌दिगन्त तक समुज्ज्वलित करने लिये है। इस प्रथमोदित-बाल-"भास्कर" की किरणें हमारे विज्ञ-पाठकोंके सन्देह-समूह-शीतका अशेष परिशोषण और उनका मुकुलित अपनी प्राचीनताका गौरव-विचार विकसित करें ऐसी चेष्टा हमने यथासाध्य इस छोटेसे उपहारमें अवश्य की है किन्तु इसका फल सुविज्ञ पाठकोंके विचार पर निर्भर है। यद्यपि आजकल प्रायः सबकोई नव्य-पदार्थाभिलाषी होगये हैं किन्तु नवीनताकी अत्यधिकतासे तथा अल्पज्ञव्यक्ति-द्वारा मनमानी कपोल-कल्पनासे विद्वानोंकी दृष्टि साम्प्रतिक नयी वस्तुओंसे एकदम मुड़ी हुई है इस लिये नये उपहारोंसे सबोंको नाक सिकुड़ाते हुए देख कर हमने प्राचीनाचार्य्य-रचितही उपहारको भेट करना एक धार्म्मिक-कर्तव्य समझा है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

यद्यपि अनेक उपन्यास-प्रेमी और अद्भुत-घटना-संयोजक व्यक्ति इस उपहारके ऐतिहासिक विषयको नीरस समझकर इससे अनिच्छा प्रकट करेंगें किन्तु हमने उन्ही सुविज्ञ समाजहितैषी और धर्म्महितैषी महोदयोंका ध्यान आकर्षित करनेके लिये इस विषयको छेड़ा है जिनके मस्तिष्कमें पहलेहीसे आरोपित-समाजोपकार वीज अव अङ्कुरितोन्मुख हो रहा है। सुविज्ञो! इस पत्रके उद्देश्यसे तो आप सबोंको मालूमही होगा कि यह एक बड़ा गहन तथा जटिल विषय है और जबकि आज तक हमने किसी एक साधारण पत्रका भी सम्पादन नहीं किया है और न मेरा यह काम ही है किन्तु श्रीजिनवाणी महाराणीके दया-दाक्षिण्य, जैन-समाजकी वर्त्तमानहीनावस्था और प्राचीन इतिहासके अभावहीने इस महत्कार्य्यके सम्पादनका दुर्वहनीय भार उठानेको हमे सहसा प्रोत्साहित किया है। इस उपहारका संग्रह एक महती-संस्थासे हमने किया है इस लिये यदि हमारी अवहुदर्शितासे संग्रह करनेमें कुछ त्रुटि रह गयी हो तो आप सब वह हमारी त्रुटि समझें नकि इस संस्थाकी। क्योंकि सांसारिक मनुष्यकी मनुष्यताका लक्षण 'भूल' है अतः मनुष्य मात्रको अनवधानताका विस्तृत-क्षेत्र समझ कर इसकी त्रुटिकी ओर विशेष ध्यान न देकर आपलोग अपनी गुण-ग्राहकता ही का परिचय देंगे। यह कार्य्य एक बड़े राजा महाराज तथा प्राञ्जल विद्वान् का है तौभी यदि मेरा उत्साह और श्रीजिनवाणीकी ऐसीही अपरिमेय अनुकम्पा बनी रही तो हम इसको सर्वोत्तम बनानेका सदा अध्यवसाय करते रहेंगें। अन्तमें हम उसी भव्य-भारतीके पाद-पाथोजमें इस उपहारको सविनय समर्प्पित कर आशा करते हैं कि हमारी सम्पादन-शैली तथा कार्य्य-तत्परताकी परिवृद्धि उत्तरोत्तर हुआ करेगी।

समर्प्पयिता।

सम्पादक

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

# पत्रका उद्देश्य और सम्पादकीय वक्तव्य।

प्यारे सज्जनो ! जिस देशमें समाचारपत्रोंकी बहुलता और उसके पढ़नेकी शैली परिष्कृत रहती है वही देश आजकल समुन्नत समझा जाता है। किन्तु लोगोंका यह विचार आधुनिक देशोन्नतिका कारण मानना भ्रमसा जान पड़ता है क्योंकि पत्रके प्रथमसञ्चालकने पत्रका कुछ औरही उद्देश्य निश्चित कर रक्खा था और आजकलके पत्र अपने मनमाने उद्देश्य निश्चित कर अलगही अपनी अपनी डफली बजाते फिरते हैं। पत्र वह चीज है जिससे सभी देशोंकी भाषाओंका साहित्य सर्वाङ्ग-सुन्दर तथा परिपूर्ण हों और पत्र वह चीज है जिससे देशोंकी भाषा और विद्वत्ताका गौरव मालूम पड़े। यद्यपि इस समय कोई देश, प्रान्त, नगर तथा ग्राम ऐसा नहीं है जहांके लोग पत्र-प्रवाहकी उद्वेलित-लहरोंसे परिप्लावित न हों किन्तु इने गिने दो ही चार पत्र ऐसे हैं जिनसे सामाजिक उन्नतिकी सम्भावना कुछ की जा सकती है। वास्तविकमें पत्रोंके मुख्योद्देश्य येही हैं कि प्राचीन पूर्व-पुरुषोपार्ज्जित ऐतिहासिक सामग्रियां और उनकी कीर्त्ति जो अन्धकारमें छिपी हुई हैं उनको प्रकाशित कर समाजको उनके अनुसार चलने और अपने अपने सामाजिक अभिमान करनेकी सर्वोत्कृष्ट शिक्षा दें किन्तु आजकल इसी सर्वमान्य विषयकी अवहेलना करनेसे सभी सामाजिक-बन्धन तथा धार्म्मिक-बन्धन जीर्ण शीर्ण हो शिथिलताको प्राप्त होरहे हैं। विशेष कर जैन-समाजको इतिहासके विषयमें सबसे पीछा पड़े देख कर हम लोगोंने "श्रीजैन-सिद्धान्त-भवन"-द्वारा संग्रहीत जैनइतिहास, शिलालेख, पट्टावली और चित्र आदि प्रचीनता-प्रदर्शक चीजोंका संग्रह कर एक पत्र निकालनेका विचार किया।

वर्त्तमान समयमें जितने उन्नतियोंके साधन हैं उनमें ऐतिहास बातोंको जानना, पूर्वाचार्य्य, महर्षि और अपने पूर्व-पुरुषोंकी कीर्त्तियोंको जानना भी उन साधनोंका एक मुख्य अंग है। यदि ऐसी उत्कृष्ट ऐतिहासिक-सामग्रियां हम लोगोंके पास न होतीं तो इस स्वर्णभूमि-भारतके बड़े बड़े विद्या-धुरन्धर और वीरपुरुषोंके चरित्रोंका जानना दुर्लभ हो जाता और हम लोग कैसे जानते कि

Ac. Gunratnasuri MS  Jin Gun Aradhak Trust

समयके फेरसे ऐसीही उन्नति और अवनति हो सकती है। किसी समय यह जैन-धर्म्म भी इस सारे भारतवर्षका धर्म्म था और किसी समय जैनाचार्यों द्वारा ही इसके साहित्यकोशकी बड़ी भारी पूर्त्ति हुई है। हम बड़े गौरवके साथ कह सकते हैं कि जैसी विपत्तियां (१) इस जैनधर्म्मपर आई हैं यदि और किसी धर्म्मपर ऐसी आतीं तो शायद वह धर्म्म संसारमें अपना अस्तित्व ही न रख सकता।

परन्तु हमारे पूर्वाचार्य्योंने अपने बुद्धि-बल, विद्या-बल और प्रभावसे उन विपत्तियोंका यथासाध्य निराकरण किया और यह उसीका फल है कि आज तक भी जैनधर्म्मावलम्बियोंको अपने पूर्वऋषियों द्वारा कथितअलङ्कार, साहित्य, न्याय, व्याकरण, ज्योतिष और वैद्यक आदि सभी ग्रन्थोंको सर्वोच्च और सर्वश्रेष्ठ कहनेका गौरव प्राप्त है इसीलिये हम कहते हैं कि जब तक हम लोग अपनी परम्पराको जान कर उन महर्षियोंका यथा-नुसरण न करेंगे तब तक हम लोगोंकी उन्नति नहीं हो सकती। देखिये इस समय भारतवर्ष तथा अन्यान्य देशोंमें यह बात प्रसिद्ध हो रही है कि जैनधर्म्म बौद्ध-धर्म्मकी एक शाखा मात्र है। भला कहिये तो सही इस भ्रान्तिका क्या कारण है? यदि विचार कर देखा जाय तो मालूम होगा कि इसके कारण केवल दो हैं। प्रथम समाजने पूर्वाचार्य्योंकी कीर्त्तियोंकी रक्षा नहीं की कि हमारे पूर्वज हमारे लिये कैसे कैसे अमूल्य रत्न छोड़ गये हैं और दूसरा यह है कि हम लोग इस बातपर दृष्टि ही नहीं देते कि आधुनिक समयमें दूसरे लोग जैनधर्म्मके विषयमें क्या कह रहे हैं तथा उनके भ्रान्त प्रश्नोंके उत्तरके लिये हमारे पास कौनसी प्रचीन सामग्री है। यदि हम लोग उन सामग्रियोंकी ओर एक बार भूल कर भी दृष्टि-पात करतें तो आज यह दुस्सह कलङ्क हम लोगोंके माथे नहीं मढ़ा जाता। जिस मतके खंडनके लिये हमारे परमपूज्य विद्वच्छिरोमणि भट्टाकलङ्कदेवने छः महीनों तक अविरल परिश्रम किया था सो आज यह जैनधर्म्म उसी धर्म्मकी शाखा बतलायी जाय? कहिये भाइयो! यह जैनियोंके लिये थोड़ी लज्जाकी बात है?

भाइयो! आज भी उन आचार्य्योंके बनाये लाखों ग्रन्थ मौजूद हैं। यदि हम अब भी सचेत हो जायँ और उनकी रक्षा करें तो हम लोगोंके पास बहुत कुछ सामग्री है। यह भी हमी लोगोंकी अज्ञानताका कारण है कि

नोट (१) यदि होसकेगा तो हम इसका पूर्ण वृत्तान्त अगले अंकमें देंगे।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

हमारे धर्मके लाखों ग्रन्थ जिनसे जैनधर्मकी विद्याका पता लगता था उनमें से बहुत कुछ नष्टहो गयें तथा जो बचे बचाये हैं भी तो उनके खोजनेवाले, उनको भलीभांति रक्षा करनेवाले और उनके विषयको समझनेवाले आज कोई नहीं देख पड़ते। जैसे जैसे उनका नाश हुआ जाता है वैसे वैसे हमारे ज्ञान-भण्डारमें भी कमी हो रही है। दूसरा यह कि हम लोग अपनी करनी से आप अज्ञानान्धकारमें निमग्न होते जाते हैं। अभी तक जो कुछ बचा है हम लोगोंके लिये बहुत है। उन आचार्य्योंके लेखों तथा बची बचायी सामग्रियोंसे संसारपर भली भांति यह बात विदित होती है कि प्राचीन समयमें जैनधर्म्म क्या था और इसका महत्व कहां तक फैला हुआ था किन्तु खेदका विषय है कि आज हम लोग अपनी आंखों देख रहे हैं कि कैसे महत्व-पूर्ण तथा प्रभावशाली मन्दिर, कीर्त्तिस्तम्भ और शिलालेख आदि जो एक समय बड़े आदरकी दृष्टिसे देखे जाते थे तथा जिनकी प्रतिष्ठा और रक्षासे जैनधर्म्मकी प्रतिष्ठा तथा रक्षा थी, वही सब प्राचीन वस्तुऐं आज हीनावस्थाको प्राप्त होरही हैं। हम लोगोंकी अनवधानतासे अन्यधर्म्मावलम्बियोंने हम लोगोंके आचार्य्योंके बनाये हुए अमूल्य और अलभ्य ग्रन्थोंको इधर उधर उलट फेर कर अपना बना लिया और बनाते जाते हैं बल्कि आचार्य्योंके नाम मिटाकर उनकी कीर्त्ति विलुप्तकर अपने नाम की ध्वजा संसारमें फैला रहे हैं। इसमें दूसरों का दोषही क्या है जब हम अपनी सम्पत्ति अपनी नहीं समझते, उसकी रक्षा नहीं करते तथा प्रगाढ निन्द्रामें खर्राटे ले रहे हैं तब लुटेरे हमारा सर्वस्व लूट ले जायँ, हमे दरिद्र बना छोड़ें इसमें उनका दोषही क्या है? देखिये एक दृष्टान्त हम आपके सामने उपस्थित करते हैं। महाराज अमोघवर्षकी बनाई हुई "प्रश्नोत्तररत्न-माला" के मंगलाचरण और प्रशस्तिके श्लोक बदल कर भिन्न भिन्न मतावलम्बियोंने उसे अपना लिया।

इस समय जैन-समाजकी दशा कुछ और ही तरहकी दीख पड़ती है। सब लोग यही चाहते हैं कि ऐसा कोई काम करें जिसमें मेरा नाम मेरे बाद भी वर्त्तमान रहे। वह समझते हैं कि प्राचीन सामग्रियोंकी रक्षा करनी व्यर्थ है क्योंकि उनमें से तो कुछ सड़ गल गयीं और जो बची बचाई टूटी फूटी मिलती भी हैं तो वे किसी कामकी नहीं। यह विचार हमारे पढ़े लिखे भाइयोंका है और जो पढ़े लिखे नहीं हैं उनको भला इन प्राचीन वस्तुओंका पताही क्यों कर लगे। अर्थात् किसीको पुरानी चीजोंकी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

रक्षा करनी मनसे नहीं भाती इस लिये नवीन कीर्त्तियां ही करनी ठीक जंची हैं। भला यह तो कहिये जब आपने बड़े बड़े महर्षियों, आचार्य्यों तथा अपने पूर्वजोंकी कीर्त्तियां अपनी अनवधानतासे मिटा दीं तो आपकी भी तो सन्तान आपही का अनुकरण करेंगी। तब भला कहिये आपकी नयी कीर्त्ति कितने दिनके लिये है। इसके अतिरिक्त तनिक विपक्ष-भावसे विचारिये तो कि विशेष लाभ आपकी नयी कीर्त्तिमें है या पुरानी कीर्त्तियोंमें? प्राचीन सामग्रियोंके सञ्चय करनेसे हम लोगोंके महान् पुरुषोंका नाम सदा वर्त्तमान रहेगा और उनकी कीर्त्तियां देखकर मनमें उत्साह-तरङ्ग-वलियां अविरत तरङ्गित हुआ करेंगी, इससे हम लोगोंको यह बार बार स्मरण रहेगा कि हम किसकी सन्तान हैं और हमारे पूर्वज कैसे थे। सम्भव है उनके सदाचरणोंका स्मरण और अनुसरण करते करते हम लोग भी अपने पूर्वगौरवको प्राप्त करलें तथा हम लोगोंकी वर्त्तमान हीनावस्था स्वप्नसी हो जाय। किन्तु इस अवनता-वस्थामें अपने पूर्वजोंको तथा उनकी कीर्त्तियोंको भूल बैठें और अपना नाम करना चाहें तो हमे दृढ विश्वास है कि हम लोगोंके नाम, यश और धर्म्म कदापि विद्यमान नहीं रह सकते वरञ्च हम लोग दिन दिन नीचेकी ओर गिरते जायंगे। इन्ही बातोंको सोच विचार कर स्वर्गीय बाबू देवकुमारजीने अपने पूर्वजोंकी कीर्त्तियोंकी ही रक्षा करनी अपना कर्त्तव्य समझा था इसी लिये जैनधर्म्म-सम्बन्धी प्राचीन सामग्रियोंका सावधानता-पूर्वक सञ्चय किये जानेके लिये इस "श्रीजैन-सिद्धान्त-भवन" को स्थापित किया और इसीको सूचित करनेके लिये हम लोगोंने भी आप विज्ञ भाइयोंके सामने उपस्थित होना उचित समझा है। पाश्चात्य विद्वानों और जर्मन विद्वानोंकी जितनी प्रशंसाकी जाय थोड़ी है। क्योंकि जैनधर्म्म उनका धर्म्म नहीं, प्राचीन कीर्त्तियां उनके पूर्वजोंकी कीर्त्ति नहीं तौभी करोड़ो रुपये व्यय करके उन लोगोंने हमारे जैनमतकी सर्व-प्राचीनताका पता लगाया है और बल्कि आज हम लोग उन्हींसे धर्म्मकी शिक्षा पाते हैं। अर्थात् इन लोगोंने हम लोगोंकी बहुत सी प्राचीन वस्तुओंकी खोजकी है। इस लिये ये लोग हम सबोंके आदर्श योग्य हैं।

सब भाइयोंकी राय हुई कि कोई ऐसा उपाय किया जाय जिससे सर्व साधारण भाइयोंको भी इस "भवन" से लाभ पहुंचे। पीछे निश्चित किये जाने पर यही ठीक जंचा कि एक ऐतिहासिक पत्र निकाला जाय जिसका पहला उद्देश्य यह होगा कि इस पत्रमें "भवन" की संग्रहीत वस्तुओंका विवरण

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

दियाजाय, उनका पूरा हाल लिखा जाय जिसमें बची बचायी चीजोंका अब अधिक अधःपतन नहीं होने पावे और हस्तलिखित प्राचीन ग्रन्थोंके मंगला-चरण, तथा प्रशस्ति दी जायं कि जिससे लोग फेर बदल कर आचार्यों और इष्टदेवोंका नाम हटाकर अपना कर प्रसिद्ध नहीं करने पावें। दूसरा उद्देश्य यह है कि अभी बहुत से जैन-ग्रन्थ ऐसे हैं जिनका पता ठिकाना सर्व-साधारण-को मालूम नहीं है; उनके नाम तथा रचयिताके नाम प्रकाशित किये जायँ कि जैन-समाजको अधिक लाभ पहुंचे। इस पत्रका एक यह भी उद्देश्य है कि "भवन" में जैनधर्मके शिलालेख, ताम्रपत्र, चित्र और सिक्के आदि अलभ्य सामग्रियोंका संग्रह तथा रक्षाकी जाय। आशा है कि इससे भी सर्व-साधारणको अन्यसामग्रियोंकी अपेक्षा कम लाभ नहीं होगा। इसका अनुभव इतिहास-लेखकोंको ही होगा कि इनसे उन्हें कितना लाभ पहुंचा है। इनसे प्राचीन समयका हाल तथा सम्बत् आदिका निर्णय ठीक ठीक हो जाता है। यदि सिक्के, शिलालेख और चित्र आदि प्राचीन सामग्रियां नहीं होतीं तो आज भारतवर्षकी प्राचीनावस्थाका पूर्ण-वृत्तान्त एकदम अन्धकार ही में छिपा रहता। इतिहासका जीर्णोद्धार मानो इन्हीं चीजों द्वारा हुआ है। इन्हीं सब बातोंको विचार कर विद्वानोंकी बहुसम्मतिसे यह पत्र निकाला जाता है, जिससे सबको लाभ पहुंचे और वे अपनी प्राचीनावस्थाको स्मरण कर अपना कर्त्तव्य-पालन करें और समाजकी उन्नति करें।

महोदयो! ऐसे पत्रके सम्पादनका भार हमसे अल्पज्ञोंके लिये यद्यपि दुस्सह है तथापि हम लोगोंने अपने पूर्वमहर्षियों ही के प्रतिभा-बल तथा प्रसाद-बलसे इसके सम्पादन करनेका साहस किया है। क्योंकि जब बड़े बड़े आचार्य्योंने अपने अमोघ-विद्या-कौशलसे अनेक गौरव-पूर्ण ग्रन्थोंको भी रच रच कर अन्तमें अपनी च्युतिकी सम्भावनाकी क्षमा मांगी है तो हमें तो उन की प्रथाका पीछा करना परमावश्यक है। हम लोग इस बातको तो बड़े अभिमानके साथ कह सकते हैं कि इस पत्रिकामें जितनी बातें तथा जितने विषय सन्नियोजित होंगे वे प्रसिद्ध प्रसिद्ध विद्वानों, शिला-लेखों तथा पूर्वाचार्य्य-कृत ग्रन्थोंके अकाट्य-प्रमाणोंसे परिप्लावित होंगे इसलिये यदि कहीं विद्वानोंको सन्देह हो वे हमसे पूछकर प्रमाणों द्वारा अपना सन्देह-निवारण करसकते हैं। सच बात तो यह है कि जैनियोंके ऐतिहासिक विषयका उल्लेख करना बड़ा कठिन है क्योंकि अन्य धर्मावलम्बियोंने अपने इतिहासकी सामग्री बहुत दिनोंसे



Ac. Gunratnasuri MS　　Jin Gun Aradhak Trust

ठीक कर रक्खी है और जब बहुतसे बहुदर्शी विद्वानोंने जैनधर्म्म बौद्धधर्म्मकी शाखा समझ कर जैनइतिहास तथा सिद्धान्त बौद्ध-धर्म्मके इतिहासों और सिद्धान्तोंके अन्तर्गत मान रक्खे हैं तब अजैन विद्वानोंके मस्तिष्कमें मुद्दतसे प्रौढ़-रीतिसे जमी हुई मीमांसाको प्रचालित करना ज़रा जटिल विषय है। किन्तु हम लोग समझते हैं कि अपने पूर्व-महर्षियों ही की कृपासे तथा उनके पाद-परागके स्पर्शानुभवसे यह कार्य्य सुसम्पादित होगा। यदि कहीं प्रमाद-वश त्रुटि रह गयी हो तो विद्वद्गण बाल्य-क्रीड़ावत् हमलोगोंकी भूलोंकी ओर ध्यान न देकर इसे अनुमोदन करते हुए उन त्रुटियोंकी सूचना हमे देकर उत्साह बढ़ायेंगें।

---

## पत्रका मुख्योद्देश्य

इस पत्रका मुख्योद्देश्य यह होगा कि इसमें ऐतिहासिक विषयकी चर्चा तथा "भवन"में सुरचित-शास्त्रोंके परिचयके सिवाय और पत्रोंके से राजनैतिक और सामाजिक विषयका उल्लेख बिल्कुल ही नहीं रहेगा और यहभी इसका एक मुख्योद्देश्य रहेगा कि किसी समाचारपत्रके विषयोंकी आलोचना नहीं करना तथा उनके निस्सार और निष्प्रयोजन आक्षेपोंकी ओर दृष्टि-पात भी नहीं करना किन्तु सत्य-सिद्धान्त और परिपुष्ट-प्रमाणके प्रकाशित करनेमें यदि किसीके मन्तव्यों तथा सिद्धान्तोंसे विरोध पड़ता हो तो यह "भास्कर" उसकी ओर कुछ ध्यान नहीं देकर "शत्रोरपि गुणा वाच्या दोषा वाच्या गुरोरपि" इस नीति वाक्यको स्मरण करता हुआ अपनेको 'उचितवक्ता' कहलानेकी सदा चेष्टा करेगा क्योंकि हमारे आचार्य्योंने अपने धार्म्मिक-विचार और सैद्धान्तिक-बातोंको प्रकट करने में कभी किसीकी परवाह नहीं की है। परन्तु "भास्कर"के ऐतिहासिक-विषयके सच्चे जिज्ञासु और मर्मज्ञ विद्वद्गणोंको यदि इसके विषय-स्तम्भोंमें किसी प्रकार की शङ्का होगी तो वे जैसे चाहेंगें; पत्रद्वारा, अन्य समाचारपत्र-द्वारा अथवा भास्करही द्वारा हम आचार्य्योंके प्रख्यात-प्रमाणों और प्राचीनतर-पट्टावली आदिसे उनकी शङ्का-सन्ततिको दूर करनेका उद्योग करेंगे। हमे आशा है कि इस उद्देश्यको सभी विद्वन्मण्डली सहर्ष अनुमोदन करेगी।

---

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

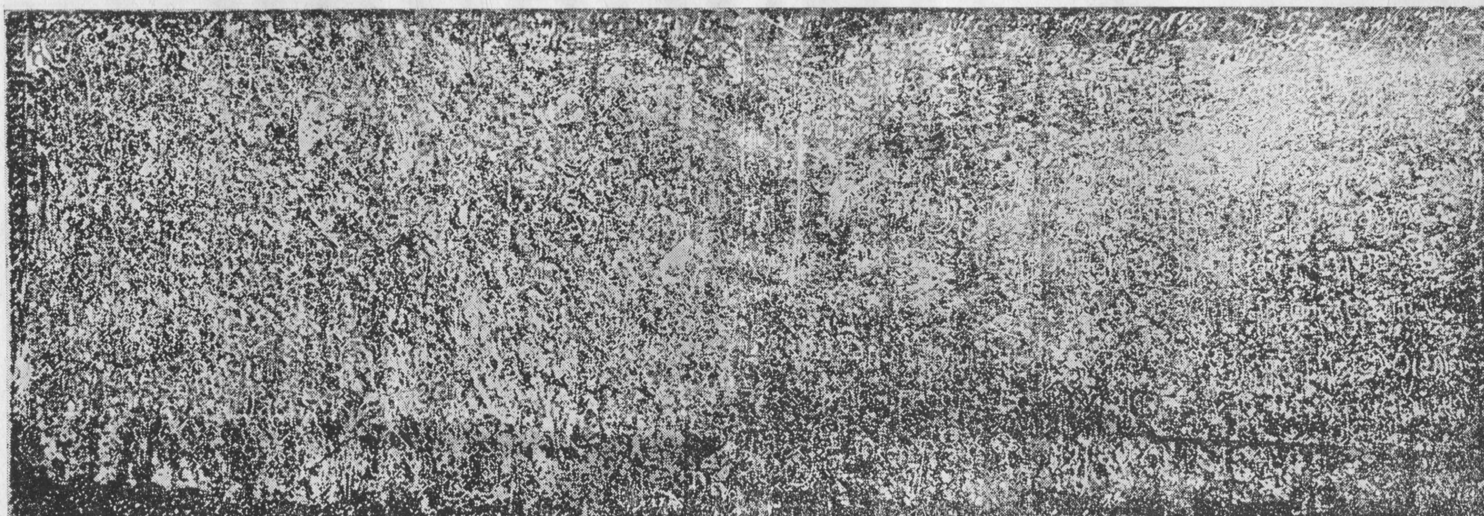

५

चन्द्रगिरि पर्वतपर श्री१०८ भद्रवाहु स्वामीका शिलालेख।

Ac. Gunratnasuri MS
Jin Gun Aradhak Trust

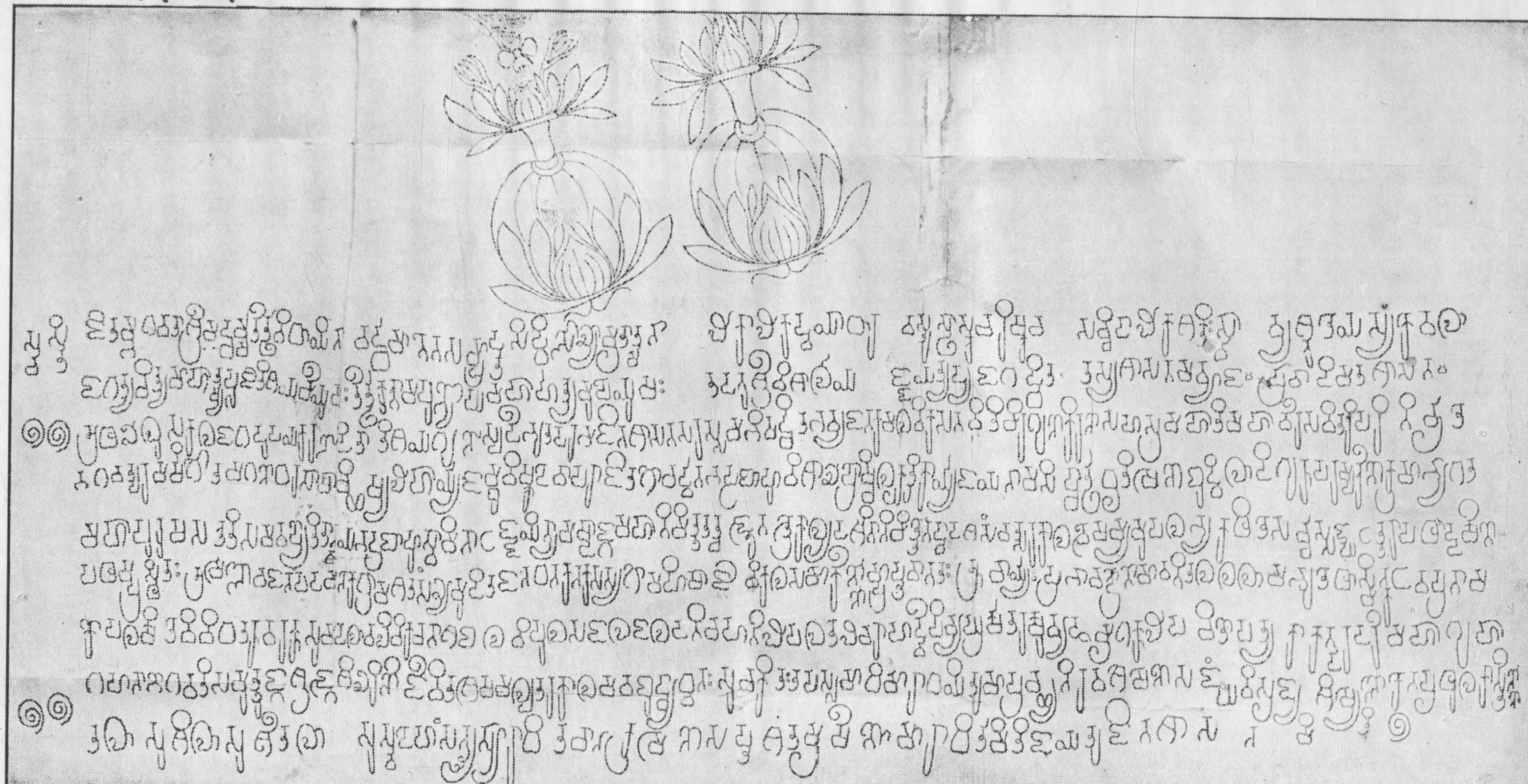

४

चन्द्रगिरि पर्वतके शिलालेखकी स्पष्ट प्रतिलिपि ।

Ac. Gunratnasuri MS
Jin Gun Aradhak Trust

# श्री १०८ अन्तिम श्रुतकेवली भद्रबाहु स्वामी और उनके शिष्य मगधाधिपति महाराज चन्द्रगुप्तका इतिहास।

मगधाधिपति महाराज चन्द्रगुप्तका नाम प्राय: सभी इतिहास-प्रेमियोंने सुना होगा और जहाँ तक हमे मालूम है हम यह कहनेमें भी अत्युक्ति नहीं समझते कि सभ मतावलम्बी आचार्योंने और पुराण-कारोंने अपने अपने पुराणों तथा ग्रन्थोंमें इनका नाम किसी न किसी प्रकारसे उल्लेख किया है। और कहाँ तक कहा जाय आधुनिक कवि विशाखाचार्यने भी "महाराज चन्द्रगुप्त" का वर्णन अपने "मुद्राराक्षस" नामक नाटकमें किया है। महाराज चन्द्रगुप्त अपने समयके एक बड़े भारी प्रभावशाली राजा थे और आपके समयमें बड़ी बड़ी प्रसिद्ध ऐतिहासिक घटना हुई है। जैसे ग्रीकके शाहंशाह का भारतपर आक्रमण, उनके प्रधान-सेना-ध्यक्षके साथ महाराज चन्द्रगुप्त का युद्ध और इनकी सन्धि इत्यादि। भारतवर्षके इतिहासमें उस समय एक नवीन युग हुआ था इसीलिये महाराज चन्द्रगुप्तकी भारतवर्षके इतिहासों में बड़ी प्रसिद्धि है। परन्तु अबतक कुछ दिनोंसे यह बात प्रसिद्ध हो रही है कि मगधाधिपति महाराज चन्द्रगुप्त बौद्ध थे किन्तु हम अपने पाठकोंके सम्मुख यह प्रमाणित करना चाहते हैं कि महाराज चन्द्रगुप्त जैन थे नकि बौद्ध। ये पंचम श्रुतकेवली स्वामी भद्रबाहुके मुख्य-शिष्योंमें से थे। इन्हींसे इन्होंने जिन-दीक्षा ग्रहण की थी और यही कारण है कि अन्यमतावलम्बी विद्वानों में चन्द्रगुप्तके राज्य-शासनके समय-निर्णयमें मतभेद होता है। अर्थात् उनकी दीक्षा लेनीही मतभेदका कारण है। महावंशके ग्रन्थकर्ता कहते हैं कि चन्द्रगुप्तने ३४ वर्ष तक राज्य किया और वायुपुराणके कर्ता २४ ही वर्ष बतलाते हैं। इस विषयमें भी मतभेद है कि चन्द्रगुप्तने पुत्रको राज्य-शासनका भार देकर इस असार संसारको छोड़ा वा राज्यावस्थामें ही उनका मरण हुआ। परन्तु आगे उद्धृत-शिलालेखसे आप महानुभावोंको पूर्णतया प्रतीत हो जायगा कि उन्होंने राज्य-सम्पत्तिको तृणवत् जान अपने पुत्र सिंहसेन अपर नाम विन्दुसारको राज्य दे

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

दीक्षा ग्रहण की थी। पंचम श्रुतकेवली भद्रबाहु स्वामी वीर-नि० सम्वत् (१) १६२ में मौर्यवंशी महाराज चन्द्रगुप्तके समयमें हुए थे। एक समय उज्जयिनी नगरी में कार्त्तिक शुक्ला पूर्णिमाके दिन महाराज चन्द्रगुप्तने रात्रीके पिछले पहर में १६ स्वप्न देखें। उनमें अन्तिम स्वप्न एक १२ फणका नाग देखा। तब महाराज चन्द्रगुप्तने अपने गुरु श्रीभद्रबाहु स्वामीसे उन स्वप्नोंका फल पूछा तो स्वामीने अन्तिम स्वप्नका फल उत्तर भारतवर्षमें बारह वर्षका घोर दुर्भिक्ष बतलाया। इसके बाद एक दिन भद्रबाहु स्वामी अपने शिष्योंके साथ नगरमें आहारके लिये गये और एक व्यक्तिके द्वारपर जा पहुँचे परन्तु वहाँ एक बालक इतने ज़ोरसे रो रहा था कि इनके बारह बार पुकारने पर भी किसीने उत्तर नहीं दिया। तब इनको यह निश्चय हो गया कि १२ वर्षका दुर्भिक्ष यहां आरम्भ हो गया। राजमन्त्रीने इस आपत्तिके हटानेके लिये अर्थात् दुर्भिक्ष-शान्तिके लिये अनेक यज्ञ होमादि और कई प्रकारके बलिप्रदानादि करनेकी चेष्टा की परन्तु चन्द्रगुप्त इस पापसे भयभीत हो कर अपने पुत्र सिंहसेन अपर नाम बिन्दुसारको राज्य-भार सौंप कर इस असार संसारसे विरक्त हो अपने गुरु भद्रबाहु स्वामीसे दीक्षा लेली। सिंहसेनके मन्त्रीने "नामाल्वभाषिटक" नामक ब्राह्मणसे यज्ञ करानेकी और बलिदानादिककी सम्मति ली और इधर जैन ब्राह्मणोंको भी एक स्थानपर एकत्रित कर यज्ञमें पशुहिंसा करनेके विषयमें दोनोमें खूब वाद विवाद कराया परन्तु "धर्म्मकी सदा जय होती है" इस कथनानुसार अन्तमें जैन ब्राह्मणोंकी ही बात रही। भद्रबाहु स्वामीने देखा कि यह घोर दुर्भिक्ष विन्ध्य तथा नीलगिरि पर्वतके मध्यमें होगा, इसके प्रभावसे अनेक प्राणी कालकवलित होंगे तथा इस समयमें मुनिधर्म्म भी पालना कठिन हो जायगा यानि उनका भी धर्म्म भ्रष्ट हो जायगा। ऐसा विचार कर बारह हजार मुनियोंका संघ लेकर दक्षिण देशको प्रस्थान किया। महाराज चन्द्रगुप्त भी गुरुके साथही साथ चले गये। कटवप्र नामक एक रमणीय पर्वतके निकट पहुंचने पर किन्हीं चिन्हों द्वारा भद्रबाहु स्वामीको यह मालूम होगया कि हमारी आयु बहुत थोड़ी रह गई है और हमारा अन्तिम समय निकट है इसलिये स्वामीने श्रीविशाखाचार्य मुनिके साथ सर्व संघको दक्षिण चोलपाण्ड देशमें भेजा और केवल चन्द्रगुप्त मुनिको अपने पास रहनेकी आज्ञा दी। जिन्होंने अपने गुरुके अन्त काल तक उनके साथ रहकर उनकी अन्तिम-क्रिया की तथा असीम गुरु-

नोट—१ वीर-निर्वाण सम्वत् १६२ = विक्रम सम्वतसे ३०७ वर्ष पूर्व अर्थात् ३६४ बी० सी०।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

भक्ति दिखायी। उधर श्रीविशाखाचार्य १२ वर्ष तक चोलपाण्ड्य देशमें धर्मोपदेश करते हुए विहार करते रहे। जब १२ वर्षका समय व्यतीत हो गया तब विशाखाचार्य अपने शिष्योंके साथ विहार करते हुए उत्तर कर्णाटक देशमें जहां उन्होंने अपने गुरु श्रीभद्रवाहु स्वामीको छोड़ा था वहीं आये। वहाँ आकर उन्होंने देखा कि स्वामीका देहान्त होगया है, श्रीचन्द्रगुप्त मुनि गुरुकी चरण-सेवा कर रहे हैं और उनेक वाल वहुत वड़े वड़े हो रहे हैं। विशाखाचार्य मुनिको देखकर बड़े सम्मानके साथ चन्द्रगुप्त मुनिने नमस्कार किया परन्तु यह विचार कर कि चन्द्रगुप्त मुनिने इस दुर्भिक्ष कालमें कन्द मूलादि खाकर अपना धर्म्म भ्रष्ट किया होगा अतएव उन्होंने चन्द्रगुप्तके नमस्कारका कुछ भी उत्तर न दिया किन्तु उनकी वन्दना स्वीकार कर उनसे अपने गुरु भद्रवाहु स्वामीके अन्तिम-समय की सारी बात पूछी और उस रोज सब मुनियोंने उपवास किया। दूसरे रोज यह समझ कर कि इस निर्जन देशमें हमारी भिक्षाविधिका पालन दुर्लभ है इसलिये वहांसे यात्राका विचार किया परन्तु चन्द्रगुप्त मुनि उन सब संघको जङ्गलके निकटवर्त्ती एक वस्तीमें लेगये और वहां श्रावकोंने बड़ी भक्तिके साथ उन लोगोंको अत्युत्तम अहार दिया। जब सब मुनि आहार कर कर अपने अपने स्थान पर आये तो मालूम हुआ कि संघमेंसे एक मुनि अपना कमण्डलु उस ग्राममें छोड़ आये हैं इसीलिये वह मुनि उसको लानेको गये। जब वह मुनिमहाराज वहां पहुंचे तो उनको बड़ा बिस्मय हुआ कि उस स्थानपर न तो कोई ग्रामही है और न कोई श्रावकोंके घरही हैं। केवल उनका कमण्डलु एक वृक्षकी डालमें लटक रहा है। उन्होंने आकर सब वृत्तान्त विशाखाचार्यको कह सुनाया। यह सुन कर उनको निश्चय हो गया कि चन्द्रगुप्तने विद्या-बलसे उनलोगोंको भोजन कराया है इसलिये यह बात अनुचित है। यह विचार कर चन्द्रगुप्तको केशलोंचन करनेका प्रायश्चित्त दिया और अपने सर्व संघको उस भोजन करनेका यथायोग्य प्रायश्चित्त करा उस स्थानसे विहार कर गये। इस घटनाके कुछ कालके बाद महाराज भास्कर अपर नाम अशोक महाराज सिंहसेन अपर नाम विन्दुसारके पुत्र अर्थात् चन्द्रगुप्तके पौत्र बड़े समारोहके साथ अपने गुरु भद्रवाहु और अपने पितामह चन्द्रगुप्तके चरणारविन्दकी वन्दना और पूजा करनेके लिये आयें और यहां कुछ काल रह कर कई चैत्यालय बन वाये जोकि आज तक चन्द्रगुप्त वस्तीके नामसे प्रसिद्ध है और एक नगर बसाया जिसका नाम अब श्रवणवेलगुल

Ac. Gunratnasuri MS　　Jin Gun Aradhak Trust

है तथा इन्होंने ही यह शिला-लेख लिखवाया कि जिसका समय प्राय २६० बी० सी० अर्थात् (१) श्रीवीर-नि० सम्वत् २६६ का निश्चय होता है और हमारे इस कथनकी पुष्टि पाश्चात्यविद्वान् लुईसराईस साहेबने भी की है। यह शिलालेख श्रवणवेल गुलमें चन्द्रगिरि पर्वतपर चन्द्रगुप्त (२) बस्तीके मन्दिरके सामने एक १५ फीट ७ इंच लम्बे तथा ४ फीट ७ इंच चौड़े चट्टानपर हेल कनड़ीलिपिमें खुदा हुआ है और इसी शिलालेख(३)से मालूम होता है कि राजा चन्द्रगुप्तका दीक्षा-नाम प्रभाचन्द्र रक्खा गया था। इस विषयकी विशेष पुष्टि राजवलि-कथासे होती है। यह ग्रन्थ मैसूरकी रानी देवी रम्भाके लिये मल्लूरके देवचन्द्रजीने कनड़ी भाषामें लिखा था तथा भद्रबाहुचरित्र से भी इस विषयकी पूर्णतया पुष्टि होती है। इसके सिवाय जेम्स बार्गेस जौन बीट आदि पाश्चात्य विद्वानोंके मतमें भी मौर्यवंशी महाराज चन्द्रगुप्त और उनके पुत्र बिन्दुसार जैन थे तथा महाराज अशोकने अपने राज्याभिषेकके १३ वें वर्ष पर्यन्त तो जैन धर्म्मही पालन किया। इसके बाद उन्होंने बौद्धधर्म्म धारण किया। इनके २५० बी० सी० अर्थात् विक्रम सम्वत् १९३ वर्ष पूर्वके अनेक शिलालेख जैनधर्म्म-सम्बन्धी मिलते हैं। अस्तु अब इसमें कोई सन्देह ही नहीं रहता कि महाराज चन्द्रगुप्त जैन थे। इन्होंने बौद्ध-धर्म्म कभी नहीं अङ्गीकार किया। आधुनिक विद्वानोंका जो यह कथन है कि चन्द्रगुप्त बौद्ध थे उनका मूल कारण यह मालूम होता है कि एक तो उन्होंने जैन और बौद्धको एक सा मान रक्खा है दूसरी बात यह कि उन लोगोंने जैन और बौद्धकी प्रतिमाओंमें भी जो भेद हैं उनको नहीं जाना है। यही कारण है कि अनेक स्थानों पर जैन-तीर्थ और जैन-तीर्थंकरोंको बौद्ध बताया गया है परन्तु अब यह बात प्रमाणित हो चुकी है कि जैन और बौद्धमें बड़ा अन्तर है और उनको एक मानना बड़ी भ्रान्ति है।

क्रमशः

---

नोट—(१) बी० सी० अंग्रेजी सम्वत्से पूर्वको कहते हैं अर्थात् आजसे १९१२ + २६० = २१७२ वर्ष पूर्व।

नोट—(२) दक्षिण-देशमें मन्दिरोंके समूहको "वस्ती" कहते हैं।

नोट—(३) हम इस शिलालेखसे सम्बन्ध रखने वाले अनेक शिलालेखोंका जो वर्णन कर आये हैं वे तथा भद्रबाहु स्वामी और चन्द्रगुप्तका जीवन-चरित्र उनके समयका विचार आदि क्रमशः अन्यान्य अंकोंमें दिया जायगा।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

# चन्द्रगिरि पर्वतकी चन्द्रगुप्त वस्तीका शिलालेख।

जितं भगवता श्रीमद्धर्म्मतीर्थविधायिना।
वर्द्धमानेन सम्प्राप्त-सिद्धिसौख्यामृतात्मना ॥ १ ॥
लोकालोकद्वयाधारवस्तु स्थास्नु चरिष्णु च।
सच्चिदालोकशक्तिः स्वा व्यश्नुते यस्य केवला ॥ २ ॥
जगत्यचिन्त्य-माहात्म्य-पूजातिशयमीयुषः।
तीर्थकृन्नामपुण्यौघमहार्हन्त्यमुपेयुषः ॥ ३ ॥
तदनुश्रीविशालेयञ्जयत्यद्य जगद्धितम्।
तस्य शासनमव्याज' प्रवादिमतशासनम् ॥ ४ ॥

अथ खलु सकलजगदुदयकरणोदितातिशयगुणास्पदीभूतपरमजिनशासनसरस्समभिवर्द्धितभव्यजनकमलविकशनवितिमिरगुणकिरणसहस्रमहोतिमहावीरसवितरि परिनिर्वृत्ते भगवत्परमर्षि-गौतमगणधर-साक्षाच्छिष्य-लोहार्य-जम्बु-विष्णुदेव-अपराजित-गोवर्द्धन-भद्रबाहु-विशाख-प्रोष्ठिल-क्षत्रिकार्य-जयनाम-सिद्धार्थ-धृतषेण-बुद्धिलादिगुरु-परम्परीण क्रमाभ्यागतमहापुरुषसन्तति समवद्योतितान्वय भद्रबाहुस्वामिना उज्जयिन्याम् अष्टाङ्गमहानिमित्त-तत्वज्ञेन त्रैकाल्यदर्शिना निमित्तेन द्वादशसम्वत्सरकालवैषम्यमुपलभ्य कथिते सर्वसङ्घ उत्तरापथात् दक्षिणापथं प्रस्थितः आर्षेणैव जनपदं अनेकग्रामशतसंख्यमुदितजनधनकनकशस्यगोमहिषाजाविकलसमाकीर्णम् प्राप्तवान् अतः आचार्य्यप्रभाचन्द्रेणामावनितलललामभूतेऽथास्मिन् कटवप्रनामकोपलक्षिते विविधतरुवरकुसुमदलावलिविकचनशवलविपुलसजलजलदनिवहनीलोपलतले वराहद्वीपिव्याघ्रर्क्षतरक्षुव्यालमृगकुलोपचितोपत्यका कन्दर-दरी-महागुहा-गहनभोगवति समुत्तुङ्गशृङ्गे शिखरिणि जीवितशेषम् अल्पतरकालं अववुध्याध्वनः सुचकितः तपःसमाधिम् आराधयितुम् आपृच्छ्य निरवशेषेण संघम् विसृज्य शिष्येणैकेन पृथुलकास्तीर्णतलासु शिलासु शीतलासु स्वदेहम् सन्न्यस्याराधितवान् क्रमेण सप्तशतम् ऋषीणाम् आराधितम् इति जयतुजिनशासनं इति ॥

## संस्कृत शिलालेखका संक्षिप्त-भाषानुवाद।

अन्तरंग अनन्त चतुष्टयादि ( अनन्त ज्ञान, दर्शन सुख, वीर्य ) वहिरंग समवशरणादि लक्ष्मीसे युक्त सम्यक्दर्शन ज्ञान चारित्र रूपरत्नत्रय धर्म्मके कहने वाले और मोक्ष प्राप्त करने वाले श्रीवर्द्धमान भगवान् स्वामी अन्तिम

Ac. Gunratnasuri MS　　Jin Gun Aradhak Trust

तीर्थंकर नित्य अनन्त-सुखपिण्डस्वरूप सर्वोत्कर्षको प्राप्त हुए हैं।

अनेक सुरेन्द्र नरेन्द्र सुर खगाधिपत्यादि शतेन्द्रोद्वारा पूज्य तीर्थंकर श्रीवर्द्ध-मान स्वामीका केवलज्ञान सम्पूर्ण पदार्थोंको भूत, भविष्यत और वर्तमान त्रिकालवर्ती अनन्त पर्यायोंको प्रकाश कर रहा है।

उन वर्द्धमान (महावीर) स्वामी तीर्थंकरके पीछे यह नगरी लक्ष्मीसे शोभायमान है और आज उसमें जगतके हितकारी परवादियोंके मतको सुशासन करनेवाले, छल-कपट-रहित सत्य-स्वरूप उन वर्द्धमान स्वामीका शासन अर्थात् जिनशासन (जैनधर्म्म) सर्वोत्कृष्टतासे वर्तमान है। भावार्थ—इस नगरीमें जैनधर्म्म बड़े प्रभावसे वर्तमान है।

यह उपर्युक्त वस्ती समस्त संसारके कल्याण करने वाली और परमोत्तम जिनशासन ( जैनधर्म )से शोभायमान है। भव्य-पुरुषोंके आनन्दकारक और अज्ञानान्धकार दूर करने वाले ऐसे श्रीमहावीर भगवानके मोक्ष होते भगवान् परम ऋषि गौतमगणधरके साक्षात् शिष्य श्रीलोहाचार्य, जम्बू स्वामी, विष्णुदेव अपराजित, गोवर्धन, भद्रवाहु, विशाखाचार्य, प्रोष्ठिल, क्षत्रियाचार्य, जयनाम, सिद्धार्थ, धृतसेन, बुद्धिल आदि गुरुपरम्परासे चली आई महापुरुषों की सन्तान उसीमें हुये भद्रवाहु स्वामी श्रुतकेवली उज्जयिनी नगरीमें अष्टांगमहा-निमित्त-शास्त्रकथिततत्वके ज्ञाता अर्थात् ज्योतिषशास्त्रके परमविद्वान् निमित्त-ज्ञान (ज्योतिष)से यह बात जानकर कि यहां १२ वर्षका महादुर्भिक्ष पड़ेगा इसलिये सङ्घके सब मुनियोंसे दक्षिणदिशाको प्रस्थान करनेको कहा और आप भी चलदिये। सर्व सङ्घके साथ बड़े बड़े देशोमें होते हुए श्रीभद्रवाहु स्वामी आचार्य प्रभाचन्द्र(१)के साथ इस वस्तीमें आये और अत्यन्त रमणीय शोभायमान अनेक प्रकारके फूल फलोंसे भरा तथा अनेक सिंह व्याघ्रादिकोंसे भरी गुफाओं सहित कटवप्रनामक प्रसिद्ध पर्वतपर आयुकी स्थिति बहुत थोड़ी जानकर समाधि आराधनाके लिये ( समाधिमरण करनेके लिये ) समस्त सङ्घको विदाकर एक शिष्यके साथ वहां रह चार आराधनाओं को आराधते भये। अर्थात् समाधिसहित मरण किया। सङ्घके ७०० मुनियोंने भी उचित उचित समय पर आराधना आराधी। इस प्रकार श्रीजिनशासन जय शाली रहे।

यह संस्कृत शिलालेखका संक्षिप्त भाषानुवाद है जिन महाशयोंको उक्त शिलालेखके प्रत्येक अक्षरका अर्थ समझना हो वे संस्कृत शिलालेखसे समझें।

नोट···(१)······येही प्रभाचन्द्र स्वामी महाराज चन्द्रगुप्त थे इनका दीक्षानाम प्रभाचन्द्र हो गया था।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

# "श्रीजैन-सिद्धान्त-भवन" आराके संरक्षित 'श्रीआदिपुराण' और 'उत्तरपुराण' जिनको लोग 'महापुराण' भी कहते हैं उनका संक्षिप्त परिचय।

आज हम अपने सुविज्ञ-पाठकोंको जैन-समाजके चिर-परिचित आचार्य्य और एक महान् ग्रन्थका परिचय कराना चाहते हैं। श्रीमहापुराणका स्वाध्याय प्रायः सभी जैनियोंने किया होगा और प्रायः सभी जैनी इसके नामसे परिचित होंगे। परन्तु हम नहीं कह सकते कि कितने महानुभावोंने इस महापुराणमें सन्निवेशित अनेक अपूर्व-रत्नोंका मर्म समझा हो। क्योंकि जहां तक देखा जाता है तो यही मालूम होता है कि श्रीआदिपुराणके स्वाध्यायके समय हम लोगोंकी दृष्टि उसके कथा-भागों पर विशेष रहती है और उसके मूलभावों से हम लोग कोशों दूर रहते हैं। जिन महानुभावोंने इस परमोत्कृष्ट ग्रन्थका स्वाध्याय विचारपूर्वक किया होगा उनको यह मालूम होगा कि कैसे महत्व तथा इतिहासों के अनेक अभावोंका पूर्तिकारक यह ग्रन्थ है। इतिहास केलिये जितनी सामग्रियों की ज़रूरत है हमारे आचार्य्य-प्रवरने प्रायः सभी विषयोंका समावेश इसकी रचनामें किया है।

यह भारतवर्षका एक सच्चा सर्वाङ्ग-पूर्ण इतिहास माना जाय तो इस में कुछ अत्युक्ति न होगी। आज तक बहुत से पाश्चात्य-विद्वानोंने भारतवर्षके अनेक इतिहास लिखे हैं। परन्तु वे भारतवासी विद्वानों की दृष्टि में सर्वाङ्ग-पूर्ण तथा प्रमाणित विश्वस्त-रूपसे परिगणित नहीं होते क्योंकि विदेशीय विद्वानों द्वारा रचित होने से उनमें अनेक त्रुटियां रहजाती हैं और जिन हमारे भारतवर्षीय विद्वानोंने भारतवर्षके इतिहास लिखे हैं, उन लोगोंने भारतवर्षके महान् महान् विद्वानों और आचार्य्योंके विरचित-अपूर्व-इतिहास-रत्न-ग्रन्थों की पर्य्यालोचना नहीं की इसलिये उनमें भूलोंकी भरमार है। परन्तु हमारे आचार्य्य-प्रवरने बड़ी योग्यता तथा विद्वत्ताके साथ उन त्रुटियों की पूर्त्ति पहलेही से कर रक्खी है और इस ग्रन्थमें अनेक ऐसे विषयोंका भी सन्निवेश किया है कि जिनका पता अभी तक बहुतसे विद्वानोंको नहीं मालूम है। इसलिये इनका न मालूम होनाही भारतवर्षके आधुनिक रचित-इतिहासमें त्रुटियोंका कारण है।



Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इसमें भरतचक्रवर्त्ती जिनके नामही से भारतवर्ष प्रसिद्ध है, उनका आद्योपान्त वृत्तान्त, वर्णाश्रमके स्थापनके कारण और समय, गृहस्थोंके छः प्रकारकी जीविकाओंकी विधि, वैवाहिक-प्रणालीका प्रचार, गर्भाधान से लेकर मरण पर्य्यन्त तक तिरपन क्रिया, भारतवासियोंकी रहन-सहन, देश, ग्राम, आहार, व्यवहार, वस्त्राभूषण, राजनीति, समाजिक-नीति आदि अनेक आवश्यक-विषयोंका सविस्तर उल्लेख बड़ीही प्राकृतिक और आनुभविक विद्वत्तासे हमारे चरित्रनायकोंने किया है। इसके परिशीलन करनेसे उस समय की बहुतसी रीति और घटनाओंका अनुभव सहजहीमें होने लगता है। यह आदिपुराण कविता की सर्वोत्कृष्टताका एक उदाहरण-स्वरूप कहाजाय तो इसमें कुछ अत्युक्ति नहीं होगी। इसके प्रत्येक श्लोक, पद, वाक्य तथा अक्षरसे ग्रन्थ-कर्त्ताकी बहुज्ञता, उपदेश-प्रियता, कवित्वोत्कर्षता आदि गुण स्पष्ट विदित होते हैं। हमारे कवि-कुल-कमल-दिवाकर श्री १०८ जिनसेनस्वामीने और कवियोंकी भांति स्त्रियोंके स्तनपर हार ढुराने वाली ही कविताकी रचनामें अपने पाण्डित्यकी इतिश्री नहीं की। इन्होंने शृङ्गारवर्णन किया भी है तो धर्म्महीरूपसे। और इस ग्रन्थसे यह बात भी निर्विवाद प्रमाणित हो जाती है कि धर्म्मोपदेश करते हुए धार्म्मिक-ग्रन्थोंमें भी पूर्णतया काव्य-सम्बन्धी नवरस, नायक नायिकाका समावेश और सभी अलङ्कारोंको ग्रन्थ-कर्त्ता प्रयुक्त कर सकते हैं।

हमारे आचार्य्य-प्रवरको केवल इतिहासही के अपूर्व-विषयोंका उल्लेख करनेसे सन्तुष्टि नहीं हुई किन्तु इन्होंने और भी अनेक अपूर्व प्रयोजनीय विषयोंका अच्छा समावेश किया है। आपने अपने मङ्गलाचरणमें कवियोंकी अच्छी समालोचना की है और कवियोंको हितकर तथा यशःप्रसारक अनेक उपदेश दिये हैं।

परेषां दूषणाज्जातु न विभेति कवीश्वरः।
किमुलूकभयाद्धुन्वन् ध्वान्तं नोदेति भानुमान् ॥ ७५ ॥
परे तुष्यन्तु वा मा वा कविः स्वार्थं समीहताम्।
न पराराधनात् श्रेयः श्रेयः सन्मार्गदर्शनात् ॥ ७६ ॥

पाठको! देखिये उल्लिखित-श्लोकोंमें हमारे आचार्य्य-प्रवरने कवि-निरङ्कुशता की परिपुष्टि बड़े मुक्तकण्ठसे की है। आप कहते हैं कि कवीश्वर दूसरोंके आक्षेपोंकी ओर दृष्टिपात नहीं करते। क्या कोई कहसकता है कि उलूकके भयसे सूर्य्य अन्धकारको नष्ट करता हुआ कभी उदित नहो।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

• और भी आप कहते हैं कि—कवियोंको रचनासे दूसरे सन्तुष्ट हों वा न हों। वे अपने उद्देश्योंकी पूर्त्ति किये बिना नहीं रहते। क्योंकि दूसरोंकी शुश्रूषासे कभी मङ्गल नहीं होता, सच्चे-मार्गका दिखाना ही मङ्गलका कारण है। आपका भावार्थ यह है कि दूसरेकी चाटुकारिता तथा हांमें हां मिलानेसे कुछ सिद्धि नहीं होती। कवियोंको किसीकी परवाह न कर सच्ची राह दिखानाही परम कर्त्तव्य है। आपका प्रत्येक वाक्य तथा श्लोक ऐसा श्रेयस्कर तथा सार-गर्भित है कि यह सुवर्णाक्षरोंमें लिखकर आदर्श-रूपसे रक्खा जा सकता है। आपकी कवि-समालोचनाके जो श्लोक हैं उनमें से कुछ भावार्थ-सहित नीचे उद्धृत किये जाते हैं।

धर्म्मानुबन्धिनी या स्यात् कविता सैव शस्यते।
शेषा पापास्रवायैव सुप्रयुक्तापि जायते॥ ६४॥
केचिन्मिथ्यादृशः काव्यं ग्रथ्नन्ति श्रुति-पेशलं।
तत्त्वाधर्म्मानुबन्धित्वान्न सतां प्रीणनक्षमम्॥ ६५॥
अव्युत्पन्नतराः केचित् कवित्वाय कृतोद्यमाः।
प्रयान्ति हास्यतां लोके मूका इव विवक्षवः॥ ६६॥
अनभ्यस्तमहाविद्याः कलाशास्त्र-बहिष्कृताः।
काव्यानि कर्त्तुं मीहन्ते केचित्पश्यत साहसं॥ ७२॥
तस्मादभ्यस्य शास्त्रार्थानुपास्य च महाकवीन्।
धर्म्यं शस्यं यशस्यं च काव्यं कुर्वन्तु धीधनाः॥ ७४॥

भावार्थ—धर्मानुबन्धिनी ही कविता प्रशंसित होती है। शेष तो योंही पाप बढ़ाने वाली है। कितने कवि केवल श्रवण-सुखद-कविता बनाते हैं। किन्तु उसमें धर्मका लेश नहीं रहनेसे सज्जन कभी उससे सन्तुष्ट नहीं होते। बहुतसे अधपढे कवि भी काव्य कर बैठते हैं। किन्तु उनकी हंसी ऐसी होती है जैसे गूंगा बोलना चाहे। भली भांति सारी विद्या नहीं पढ़ने वाले और कला शास्त्रको नहीं जानने वाले यदि काव्यरचना करना चाहें तो उनका दुस्साहस ही समझना चाहिये इसीलिये जो सब शास्त्रोंका भली भांति परिशीलन कर महाकवियोंकी सेवा करता है वही प्रशंसनीय, धार्मिक और यशस्कर कविता बनाता है।

उपर्युक्त वाक्योंसे यह बात स्पष्ट मालूम होती है कि हमारे महाकवि श्री जिनसेनाचार्यने इस ऐतिहासिक-ग्रन्थमें अपनी कवित्व-शक्तिका अतुलनीय

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

परिचय दिया है। हमारे कविश्रेष्ठने जब इस ग्रन्थको प्रारम्भ किया था तो उस समय उनका यही अभिप्राय था कि इसी आदिपुराणमें चौबीस तीर्थङ्कर और शलाका-पुरुषोंका पूर्णवृत्तान्त समावेश कर इसीको अद्वितीय ग्रन्थ बनावें। हम यह भी मुक्तकण्ठसे कह सकते हैं कि स्वामीजीने जिस प्रकारसे इस ग्रन्थकी भूमिका बांधी है यदि इन्हींकी विद्वत्ता-पूर्ण लेखनीसे कहीं इसकी समाप्ति होती तो एक सर्वाङ्ग-सुन्दर और अपूर्व-रचना होती। परन्तु बड़े खेदके साथ कहना पड़ता है कि इस कुटिल-काल-राहुने हमारे अखिल-पदार्थ-प्रकाशक और अज्ञानान्धकार-विद्रावक आचार्य्य-मार्त्तण्डकी कीर्त्तिरश्मिकी प्रखरदीप्तिको सहन न कर मध्याह्न कालही में यानि बयालिस ही अध्याय तक लिखे जानेपर ग्रस लिया। अर्थात् श्री १००८ आदिनाथ स्वामीका चरित्र अधूराही छोड़ कर आपने अपनी मानव-लीलाका संवरण किया तथा अपने परम-पवित्र-पादपाथोज-परागसे स्वर्गधामको पवित्र किया। यद्यपि हम लोगोंके दुर्भाग्य-वश स्वामीजीकी सरसलेखनीसे इस अपूर्व ग्रन्थकी निष्पत्ति नहीं हुई तो भी उनकी लेखनी-प्रसूत जितनी रचना है वही भारतवर्षके इतिहासके सर्वाङ्ग की पूर्त्तिके लिये पर्याप्त है। महापुराणमें चौबीस तीर्थङ्कर और शलाका-पुरुषोंका चरित्र लिखने का जो सङ्कल्प श्री १०८ जिनसेन स्वामीका था उसकी पूर्त्ति उनके प्रिय शिष्य श्रीगुणभद्राचर्य्यने बड़ी विद्वत्तासे की है। प्रथमही आपने पांच अध्याय और रचकर आदिपुराणकी समाप्ति की तत्पश्चात् उत्तरपुराण नामक एक नया पुराण रचकर शेष तीर्थङ्करोंका चरित्र भारतवर्षमें प्रसिद्ध किया। और अपने गुरु जिनसेन स्वामीके सङ्कल्पित उद्देश्योंकी पूर्त्ति बड़ी विद्वत्तासे की। इन्होंने अपने गुरुकी काव्य-रचना-प्रणाली का अनुसरण बड़ी योग्यतासे किया है। एकही पुराणमें तेईस तीर्थङ्करोंकी कथा स्पष्टतासे शृङ्खला-बद्ध करनी यह गुणभद्राचार्य्य ही का काम है। येही उपर्युक्त दोनों ग्रन्थ अर्थात् नं० १ श्रीआदिपुराण और नं० २ श्रीउत्तरपुराण मिला कर 'महापुराण' कहे जाते हैं।

इसी महापुराणके आधारपर हमने एक संक्षिप्त जैनधर्म्मसम्बन्धी भारतवर्षका इतिहास लिखा है, सम्भव है कि इसको सर्वसाधारण अच्छी तरह समझ सकेगें। यह इतिहास इसी पत्रिकाके प्रत्येक अङ्कमें क्रमशः प्रकाशित होता रहेगा। नं० १ श्रीआदिपुराणकी भाषा टीका पण्डित दौलतरामजी कासलीवाल बसवानीने सम्वत् १८२४ में जयपुरमें की है।

नं० २ उत्तरपुराणकी भाषा वचनिका पं० खुशालचन्दजी सांगानेरीने

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जहानाबादमें सम्वत् १७८९ में लिखी है। ये दोनों प्रतियां "भवन" में संरक्षित हैं। भाषा-प्रेमी इन्हें पढ़ सकते हैं।

---

## आदिपुराण।

नं० १

विषय—ऐतिहासिक ( प्रथमानुयोग )

ग्रन्थकार—श्रीजिनसेनाचार्य्य और गुणभद्राचार्य्य।

भाषा—संस्कृत और हिन्दी।

लिपि—नागरी, कनड़ी, द्राविड़ी।

ग्रन्थ विवरण—अति प्राचीन, हस्तलिखित, मूलप्रति पत्र ३०५ श्लोक १२००० अध्याय ४७, ग्रन्थकी प्रतिलिपि करनेका समय—सम्वत् १७३५

---

## मङ्गलाचरण।

ॐ नमो सिद्धेभ्यः।

श्रीमते सकलज्ञान-साम्राज्य-पदवीयुषे।
धर्म्मचक्रभृते भर्त्रे नमः संसारभीमुषे॥ १॥
नमस्तमःपटच्छन्नजगदुद्योत-हेतवे।
जिनेन्द्रांशुमते तत्त्व-प्रमा-भा-भार-भासिने॥ २॥
जयत्यजय्यमाहात्म्यं विशासित-कुशासनम्।
शासनं जैनमुद्भासि मुक्तिलक्ष्म्यैकशासनम्॥ ३॥
रत्नत्रयमयं जैनं जैत्रमस्त्रं जयत्यदः।
येनाव्याजं व्यजेष्टार्हन् दुरितारातिवाहिनीम्॥ ४॥
यः साम्राज्यमधःस्थायि गीर्वाणाधिपवैभवम्।
तृणाय मन्यमानः सन् प्राव्राजीदृषभः पुमान्॥ ५॥

* * *

कवयः सिद्धसेनाद्याः वयञ्च कवयो मताः।
मणयः पद्मरागाद्याः ननु काचेऽपि मेचकाः॥ ३९॥

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

यद्वचोदर्पणे कृत्स्नं वाङ्मयं प्रतिविम्बितम्।
तान् कवीन् वहु मन्येऽहं किमन्यैः कविमानिभिः॥ ४०॥
नमः पुराण-कारेभ्यो यद्वक्त्राब्जे सरस्वती।
येषामन्यकवित्वस्य सूत्रपातायितं वचः॥ ४१॥
प्रवादिकरियूथानां केशरी नयकेशरः।
सिद्धसेनकवि र्जियाद्विकल्पनखराङ्कुरः॥ ४२॥
नमः समन्तभद्राय महते कविवेधसे।
यद्वचोवज्रपातेन निर्भिन्ना कुमताद्रयः॥ ४३॥
कवीनां गमकानाञ्च वादिनां वाग्मिनामपि।
यशः सामन्तभद्रीयं मूर्द्ध्नि चूड़ामणीयते॥ ४४॥
श्रीदत्ताय नमस्तस्मै तपःश्रीदीप्तमूर्त्तये।
कण्ठीरवायितं येन प्रवादीभप्रभेदने॥ ४५॥
विदुष्विणीषु संसत्सु यस्य नामापि कीर्त्तितं।
निखर्वयति तद्गर्वं यशोभद्रः स पातु नः॥ ४६॥
चन्द्रांशुशुभ्रयशसं प्रभाचन्द्रकविं स्तुवे।
कृत्वा 'चन्द्रोदयं' येन शश्वदाह्लादितं जगत्॥ ४७॥
चन्द्रोदयकृतस्तस्य यशः केन न शस्यते।
यदाकल्पमनाम्लानि सतां शेखरतां गतं॥ ४८॥
शीतीभूतं जगद्यस्य वाचाराध्य चतुष्टयं।
मोक्षमार्गं स पायान्नः शिवकोटि मुनीश्वरः॥ ४९॥
काव्यानुचिन्तने यस्य जटाः प्रवलवृत्तयः।
अर्थान् स्मानुवदन्तीव जटाचार्य्यः स नोऽवतात्॥ ५०॥
धर्म्मसूत्रानुगा हृद्या यस्य वाङ्मणयोऽमलाः।
कथालङ्कारतां भेजुः काणभिक्षु र्जयं त्यसौ॥ ५१॥
कवीनां तीर्थकृद्देवः कितरां तत्र वर्ण्यते।
विदुषां वाङ्मलध्वंसि तीर्थं यस्य वचोमयं॥ ५२॥
भट्टाकलङ्क-श्रीपाल-पात्रकेशरिणां गुणाः।
विदुषां हृदयारूढ़ा हारायन्तेऽतिनिर्म्मलाः॥ ५३॥
कवित्वस्य परासीमा-वाग्मित्वस्य परं पदम्।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

गमकत्वस्य पर्यन्तो वादिसिंहोऽर्च्यते न कैः॥ ५४॥
श्रीवीरसेन इत्यात्तभट्टारकपृथुप्रथः।
स नः पुनातु पूतात्मा वादिवृन्दारको मुनिः॥ ५५॥
लोकवित्वं कवित्वञ्च स्थितं भट्टारके द्वयम्।
वाग्मिता वाग्मिनो यस्य वाचा वाचस्पतेरपि॥ ५६॥
सिद्धान्तोपनिबन्धानां विधातुर्मद्गुरोश्चिरम्।
मन्मनःसरसि स्थेयान्मृदुपादकुशेशयं॥ ५७॥
धवलां भारतीं तस्य कीर्त्तिं च शुचिनिर्मलाम्।
धवलीकृतनिःशेषभुवनां तं नमाम्यहम्॥ ५८॥
जन्मभूमिस्तपोलक्ष्म्याः श्रुतप्रशमयोर्निधिः।
जयसेन गुरुः पातु बुधवृन्दाग्रणीः स नः॥ ५९॥
स पूज्यः कविभिर्लोके कवीनां परमेश्वरः।
वागर्थसंग्रहं कृत्स्नं पुराणं यः समग्रहीत्॥ ६०॥
कवयोऽन्येऽपि सन्त्येव कस्तानुद्देष्टु मप्यलम्।
सत्कृता ये जगत्पूज्यास्ते मया मङ्गलार्थिना॥ ६१॥

## श्रीआदिपुराणमें श्री१०८ गुणभद्राचार्य्यका उत्थान।

श्रियं तनोतु नः श्रीमान् वृषभो वृषभध्वजः।
यस्यैकस्य गतेर्मुक्तिमार्गश्चित्रं महानभूत्॥ १॥
... ... ...
निर्मितोऽस्य पुराणस्य सर्वः सारो महात्मभिः।
तच्छेषे यतमानानां प्रासादस्येव नः श्रमः॥ ११॥
पुराणे प्रौढशब्दार्थे सत्पत्रफलशालिनि।
वचांसि पल्लवानीव कर्णे कुर्वन्तु मे बुधाः॥ १२॥
अर्द्धं गुरुभिरेवास्य पूर्वं निष्पादितं परैः॥
परं निष्पाद्यमानं सच्छन्दोवर्णाभिसुन्दरम्॥ १३॥
इक्षो रिवास्य पूर्वार्द्धमेवभावि रसावहम्।
यथा तथास्तु निष्पत्तिरिति प्रारभ्यते मया॥ १४॥

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

... ... ... ...

अथवायं भवेदस्य विरसं नेति निश्चयः।
धर्म्मायं ननु केनापि नादर्शि विरसं क्वचित्॥ २०॥
गुरूणामेव माहात्म्यं यदपि स्वादु मद्वचः
तरूणां हि स्वभावोऽसौ यत्फलं साधु दृश्यते॥ २१॥
निर्यान्ति हृदयाद्वाचो हृदि मे गुरवः स्थिताः।
ते तत्र संस्करिष्यन्ति मम तत्र परिश्रमः॥ २२॥

... ... ... ...

मतिर्मे केवलं सूते कृतिं राज्ञीव तत्सुताम्।
धियस्तां वर्त्तयिष्यन्ति धात्रीकल्पा कवीशिनाम्॥ ३९॥
सत्कवेरर्जुनस्येव शराः शब्दास्तु योजिताः।
कर्णं दुस्संस्कृतं प्राप्य तुदन्ति हृदयं भृशम्॥ ४०॥

... ... ... ...

पुराणं मार्गमासाद्य जिनसेनानुगा ध्रुवम्।
भवाब्धेः पारमिच्छन्ति पुराणस्य किमुच्यते॥ ४६॥

---

## अन्तिमभाग।

योऽभूत् पञ्चदशो विभुः कुलभृतां तीर्थेशिनां चाग्रिमो
दृष्टो येन मनुष्यजीवनविधि र्मुक्तेश्च मार्गो महान्।
बोधोरोधविमुक्तवृत्तिरखिलो यस्योदयाद्युत्तमः
स श्रीमान् जनकोऽखिलावनिपतेराद्यः सदद्याच्छ्रियं॥ १११॥
साक्षात्कृतप्रथितसप्तपदार्थसारः, सद्धर्म्मतीर्थ-पथपालन-धर्म्महेतुः।
भव्यात्मनां भवभृतां सपरार्थसिद्धिमिक्ष्वाकुवंशवृषभो वृषभो विदध्यात्॥११२॥
यो नाभेस्तनयोपि विश्वविदुषाम्पूज्यः स्वयम्भूरिति
त्यक्ताशेषपरिग्रहोऽपि सुधियां स्वामीति शब्दायते।
मध्यस्थोऽपि विनेयसत्वसमितेरेवोपकारीमितो
निर्द्वानोऽपिबुधै रुपास्यचरणो यः सोऽस्तु वः शान्तये॥ ११३॥

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इत्यार्षे भगवद्गुणभद्राचार्य्य-प्रणीते त्रिषष्ठि-लक्षण-महापुराण-संग्रहे प्रथम तीर्थङ्कर-चक्रधर-निर्वाण-गमन-पुराण-परिसमाप्ति सप्तचत्वारिंशत्तमं पर्व: ॥ ४७ ॥

रुद्रेन्दुना स्थिता संख्या प्रवाच्या सुमनीषिभि: ।
ज्ञेय मादिपुराणाब्धि गणितं सुसमाहितम् ॥

१२००० द्वादश सहस्र संख्या ।

श्रीहरिक्रष्ण अविनाशी ब्रह्म श्रीनिरूपण श्रीब्रह्मचक्रवर्त्तिराज्य-प्रवर्त्तमाने गैवदलबल-वाहन विद्यौघ-दुष्टघनघटा-विदारण साहसिकम्लेच्छनिवह-विध्वंसन महावली श्रीमहाकवीशी गैवीछत्रत्रय-मण्डित सिंहासन अमर-मण्डली सेव्यमान सहस्रकिरणिवत् महातेजभासुरनृपमणि-मस्तक-मुकुट-सिद्धशारद परमेश्वर परमप्रीति उरस्थान ध्यानमण्डित सुरनरेश्वरा: श्रीहरिक्रष्णसरोजराजिराजितपद-पङ्कज सेवत मधुकर सुभटवचन भाक्कुततनुश्रंकज । यह पूरण लिख्यौ पुराण तिन शुभशुभ कीरतिके पठन कौ जगमगतु जगम निज सुभटल शिष्य सुगिरिधर परसराम कौ कथन कौ ॥   शुभं भवतु मङ्गलम्

---

## उत्तरपुराण ।

नं० २

विषय—ऐतिहासिक ( प्रथमानुयोग )

ग्रन्थकार—गुणभद्राचार्य्य ।

भाषा—संस्कृत और हिन्दी ।

लिपि—नागरी ।

ग्रन्थ विवरण—अति प्राचीन, हस्तलिखित, शुद्धप्रति पत्र ३०६ श्लोक ८०००

ग्रन्थकी प्रतिलिपि करनेका समय—सम्वत् १८१५

---

## मङ्गलाचरण ।

ॐ नमो वीतरागाय ।

श्रीमांजिनोऽजितो जीयाद्यद्वचांस्यमलान्यलम् ।
क्षालयन्ति जलानीव विनेयानां मनोऽमलम् ॥ १ ॥
पुराणं तस्य वक्ष्येऽहं मोक्षलक्ष्मी-समागमम् ।
श्रुतेन येन भव्यानाम् अव्याहत-महोदय: ॥ २ ॥



Ac. Gunratnasuri MS    Jin Gun Aradhak Trust

## छिहत्तरवें अध्यायका कुछ भाग।

लोकालोकावलोकैका लोकमित्यवलोकनम्।
तन्निर्वाणक्षणे भावी, जम्बूनामान्त्यकेवली ॥ १५ ॥
अन्त्यकेवलिना तस्मिन् भरते यः प्रकल्प्यते।
नन्दीमुनिस्ततः श्रेष्ठो, नन्दिमित्रोऽपराजितः ॥ १६ ॥
गोवर्द्धनश्चतुर्थोऽनु, भद्रबाहु र्महातपाः।
नाना नय-विचित्रार्थ-समर्थः श्रुतपूर्वतः ॥ १७ ॥
एते क्रमेण पञ्चापि प्राप्स्यन्त्यात्मविशुद्धयः।
ततोभावी विशाखार्य्यः प्रोष्ठिलः क्षत्रियांककः ॥ १८ ॥
जयनामानुगांकः स्यात्, सिद्धार्थो धृतषेणकः।
विजयी बुद्धिलो गङ्गदेवश्चक्रमशोमताः ॥ १९ ॥
एकादश सह श्रीमद्धर्म्मसेनेन धीमता।
द्वादशांगार्थ-कुशलाः दशपूर्वधराश्च ते ॥ २० ॥
भव्यानां कल्पवृक्षाः स्युः जैनधर्म्म-प्रकाशनात्।
ततो नक्षत्रनामाच यशःपालश्च पाण्डुना ॥ २१ ॥
ध्रुवसेनोऽनुकंसार्य्यो विदितैकादशांगकाः।
सुभद्रश्च यशोभद्रो भद्रबाहुः प्रकृष्टधीः ॥ २२ ॥
लोहानामा चतुर्थः स्यादाचाराङ्गविद स्त्वमी।
जिनेन्द्रवदनोद्गीर्णं पावनं पापलोपनं ॥ २३ ॥
श्रुतं तपोभृता मेषां प्राप्स्यति परम्परम्।
शेषैरपि श्रुतज्ञानस्यैकोदेशस्तपोधनैः ॥ २४ ॥
जिनसेनानुगैः प्राप्तवीरसेनैः महर्द्धिभिः।
समाप्ते दुःखमायाः प्राक् प्रायशो वर्त्तयिष्यति ॥ २५ ॥

## अन्तिमभाग।

श्रीमूलसंघवाराशौ, मणीनामिवसार्चिषाम्।
महापुरुषरत्नानां स्थानं सेनान्वयोजनि ॥ १ ॥

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

तत्र वित्रासिताशेषप्रवादिमदवारण: ।
वीरसेनाग्रणी वीरसेन भट्टारको बभौ ॥ ४ ॥

... ... ...

अभवदिवहिमाद्रे र्देवसिन्धुप्रवाहो-
ध्वनिरिव सकलज्ञा त्सर्वशास्त्रैकमूर्त्तिः ।
उदयगिरि-तटाद्वा भास्करो भासमानो
मुनिरनु जिनसेनो वीरसेनादमुष्मात् ॥ ८ ॥
यस्य प्रांशु-नखांशुजालविसरद्धारान्तराविर्भव-
त्पादाम्भोजरजः पिशङ्गमुकुटप्रत्यग्ररत्नद्युतिः ।
संस्मर्त्ता स्वममोघवर्षनृपतिः पूतोऽहमद्येत्यलम्
स श्रीमाञ्जिनसेन-पूज्यभगवत्पादो जगन्मङ्गलम् ॥ १० ॥

... ... ...

दशरथगुरुरासी त्तस्यधीमान् सधर्म्मा
शशिन इव दिनेशो विश्वलोकैकचक्षुः ।
निखिलमिद मदोपि व्यापि तद्वाङ्मयूखैः
प्रकटितनिजभावं निर्मले र्धर्म्मसारैः ॥
सद्भावः सर्वशास्त्राणाम्, तद्भास्वद्वाक्यविस्तरे ।
दर्पणार्पितबिम्बाभो, बालैरप्याशु बुध्यते ॥ १४ ॥
प्रत्यक्षीकृतलक्ष्यलक्षणविधि र्विश्वोपविद्यान्तरा-
त्सिद्धान्ताध्यवसान-यान-जनित-प्रागल्भ्य-वृद्धेद्धधीः ।
नानानूननय-प्रमाण-निपुणो गण्यै र्गुणै र्भूषितः
शिष्यः श्रीगुणभद्रसूरितनयो रासीज्जगद्विश्रुतः ॥ १५ ॥

... ... ...

कविपरमेश्वरनिगदित-गद्यकथामातृकं पुरोश्चरितं ।
सकलच्छन्दोलङ्कृतिलक्ष्यं सूक्ष्मार्थ-गूढपदरचनं ॥ १८ ॥

... ... ...

जिनसेन-भगवतोक्तं मिथ्याकविदर्पदलन-मतिललितम् ।
सिद्धान्तोपनिबन्धन-कर्त्ता भर्त्ता विनेयानाम् ॥ २० ॥
अतिविस्तरभीरुत्वा दवशिष्टं संग्रहीत ममलधियाम् ।
गुणभद्रसूरिणेदं प्रहीनकालानुरोधेन ॥ २१ ॥

Ac. Gunratnasuri MS  Jin Gun Aradhak Trust

... ... ...

विदितसकलशास्त्रो लोकसेनोमुनीशः
कविरविकलवृत्त स्तस्य शिष्येषुमुख्यः।
सततमिह पुराणे प्राप्य साहाय्य मुच्चैः
गुरुविनय मनैषो मान्यतां स्वस्यसद्भिः॥ २९ ॥
यस्योत्तुङ्गमतङ्गजा निजमदस्रोतस्विनी-संगमा-
द्गागं वारि कलङ्कितं कटुमुहुः पीत्वा प्यगच्छ त्तृषः।
कौमारं घनचन्दनं वन मपां पत्युस्तरंगानिलै-
र्मन्दान्दोलितमस्तभास्करकरच्छायं समाशिश्रियन्॥ ३०॥
दुग्धाब्धौ गिरिणा हरौ हतसुखा गोपीकुचोद्घट्टनैः
पद्मे भानुकरै र्भिदेलिमदले रात्रौ च सङ्कोचिते।
यस्योरः शरणे प्रथीयसि भुजस्तम्भान्तरोत्तम्भिते
स्थेये हारकलापतोरणगुणे श्रीः सौख्य मागाच्चिरम्॥ ३१॥
अकालवर्षभूपाले पालयत्यखिलामिलां।
तस्मिन् विध्वस्तनिःशेषद्विषि वीध्रयशोजुषि॥ ३२ ॥
पद्मालयमुकुलकुलप्रविकासकसत्प्रतापततमहसि।
श्रीमति लोकादित्ये प्रध्वस्तविततशत्रुसन्तमसे॥ ३३ ॥
चेल्लपताके चेल्लध्वजानुजे चेल्लकेतनतनूजे।
जैनेन्द्रधर्मवृद्धिविधायिनि स्वविधुवीध्रपृथुयशसि॥ ३४ ॥
वनवासदेशमखिलं भुञ्जति निष्कण्टकं सुखं सुचिरं।
तत्पितृनिजनामकृते ख्याते बंकापुरे पुरेष्वधिके॥ ३५ ॥
शकनृपकालाभ्यन्तरविंशत्यधिकाष्टशतमिताब्दान्ते।
मङ्गलमहार्थकारिणि पिङ्गलनामनि समस्तजनसुखदे॥ ३६ ॥
श्रीपञ्चम्यां बुधार्द्रायुजि दिवसवरे मन्त्रिवारे बुधांशे,
पूर्वायां सिंहलग्ने धनुषि धरणिजे वृश्चिकार्कौ तुलायाम्।
सार्पे शुक्रे कुलीरे रविजसुरगुरौ निष्ठितं भव्यवर्य्यैः
प्राप्तेज्यं शास्त्रसारं जगति विजयते पुण्यमे तत् पुराणम्॥ ३८ ॥
धर्म्मोऽत्र मुक्तिपदमत्र कवित्वमत्र तीर्थेशिनां चरितमत्र महापुराणे।
यद्वा कवीन्द्रजिनसेनमुखारबिन्दनिर्यद्वचांसि न मनांसि हरन्ति केषां॥ ३९ ॥
कविवरजिनसेनाचार्य्यवर्य्यार्य्यमासौ मधुरिमणि न वाचो नाभिसूनोः पुराणे।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

तदनु च गुणभद्राचार्य्यवाचो विचित्राः सकलकविकरीन्द्रव्रातसिंह्यो जयन्ति ॥ ४० ॥
यदि सकलकवीन्द्रप्रोक्तसूक्तप्रचार-श्रवणसरसचेता स्तत्त्वमेवं सखे स्याः।
कविवरजिनसेनाचार्य्यवक्त्रारविन्दप्रणिगदितपुराणाकर्णनाभ्यर्णकर्णः ॥ ४१ ॥

धर्म्मः कश्चिदिहास्ति नैतदुचितं वक्तुं पुराणं महत्
श्रव्याः किन्तु कथास्त्रिषष्टिपुरुषाख्यानं चरित्रार्णवः।
कोप्यस्मिन् कवितागुणोऽस्ति कवयो प्येतद्वचोप्यालयः
कोऽसावत्र कविः कवीन्द्रगुणभद्राचार्य्यवर्य्यः स्वयम् ॥ ४२ ॥

इत्यार्षे भगवद्गुणभद्राचार्य्यप्रणीते त्रिषष्टिलक्षणमहापुराणसंग्रहे पुराणसमाप्तौ प्रशस्तिवर्णनं सप्तसप्ततितमं पर्वः।

---

## आदिपुराण और उत्तरपुराणके मङ्गलाचरण और प्रशस्तिका संक्षिप्त भाषानुवाद।

केवलज्ञान-साम्राज्य की पदवी धारण करनेवाले, धर्म्म-चक्रको भी धारण करनेवाले और संसारके भयको हटानेवाले श्रीआदिनाथ तीर्थङ्करको मेरा नमस्कार है ॥ १ ॥

अज्ञानान्धकाररूपी वस्त्रसे ढंपेहुए संसारको प्रकाश करनेमें एकमात्र कारण और तत्व तथा प्रमाणके गौरवको प्रकाशित करनेवाले श्रीजिनेन्द्ररूपी सूर्य्य को नमस्कार है ॥ २ ॥

जिनका माहात्म्य नहीं जीतागया है, कुमार्ग (असदुपदेश) को हटानेवाले मुक्तिलक्ष्मीका एक शासन प्रकाशमय जैनशासनकी जय हो ॥ ३ ॥

जिससे अर्हन्त भगवान्‌ने पापरूपी सेनाको निष्कापट्यपूर्वक जीता है। उस सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्‌चरित्ररूपी विजयशील जैनअस्त्रकी जय हो॥४

इन्द्रादिक देवताके सम्पत्तिशाली, पृथ्वीपर रहनेवाला चक्रवर्त्ती राज्यको तृणके समान मानते हुए आदिपुरुष श्रीऋषभनाथजीने दीक्षा धारण की ॥ ५ ॥

---

### अन्तिम भाग।

कवि नामको सार्थक करनेवाले श्रीसिंहसेनादि कवि थे। हम लोग कवि नहीं कहा सकते। क्योंकि पद्मरागादि मणि ही मणि कहला सकती;

Ac. Gunratnasuri MS  Jin Gun Aradhak Trust

मेचकवर्णके ( सांवले रङ्गके ) कांच नहीं मणि कहला सकते ॥ ३९ ॥

जिनकी कवितामें समस्त द्वादशाङ्गश्रुत प्रतिबिम्बित होते हैं उन्हीं कवियोंको मैं बहुमानपूर्वक मानता हूं। झूठ मूठ अपनेको कवि कहनेवालोंसे हमें कुछ प्रयोजन नहीं ॥ ४० ॥

मैं उन पुराणकर्त्ताओंको नमस्कार करता हूं कि जिनके मुखकमलमें सरस्वती विराजमान रहती हैं। क्योंकि इन्हीं कवियोंकी उक्ति अन्य कविकेलिये सूत्रपात सी होती है ॥ ४१ ॥

प्रवादीरूप गजसमूहोंके लिये न्यायरूपी केशर ( कन्धेका बाल ) को धारण करनेवाले सिंहकेसे और नानार्थ विचार करनेमें तीक्ष्ण नख यानि प्रखरबुद्धिवाले श्रीसिंहसेन कविकी जय हो ॥ ४२ ॥

कविशिरोमणि श्रीसमन्तभद्राचार्य्यको नमस्कार है। क्योंकि जिनके वचनरूपी वज्रपातसे कुमतरूपी पर्वत टूक टूक होगये ॥ ४३ ॥

बड़े २ नैयायिकों, वादियों तथा वाचालों और कवियोंके शिरपर समन्तभद्रस्वामीका यश चूड़ामणिका सा समलङ्कृत करता रहता है ॥ ४४ ॥

देदीप्यमान मूर्त्तिवाले श्रीदत्त आचार्य्यको मेरा नमस्कार है। इन्होंने प्रवादीरूपी हाथीको विदलित करनेमें अपनेको सिंहके ऐसा दिखलाया ॥४५॥

विद्वन्मण्डलीमें जिनके नाम सुननेसे लोगोंका गर्व नष्ट होता था वह यशोभद्र हमारी रक्षा करें ॥ ४६ ॥

चन्द्रमाके ऐसा शुभ्रयश वाले प्रभाचन्द्र कविकी मैं स्तुति करता हूं क्योंकि इन्होंने चन्द्रोदय नामक काव्य बनाकर जगत को परमाह्लादित कर दिया ॥ ४७ ॥

भला कहिये तो 'चन्द्रोदय' बनानेसे जो इन्हें यश हुआ उसकी कौन नहीं प्रशंसा कर सकता है। क्योंकि इनका स्वच्छ यश कल्पपर्य्यन्त सज्जनोंसे शिरोधार्य्य था ॥ ४८ ॥

जिनके उपदेशसे चतुष्टय ( सम्यक्ज्ञान, सम्यक्चरित्र, सम्यग्दर्शन और तप ) की आराधना करके संसार समुज्ज्वल होगया। वह शिवकोटि मुनीश्वर हमारे मोक्षमार्गकी रक्षा करें ॥ ४९ ॥

काव्य-परिशीलन करनेमें जिनकी जटारूपी प्रबल वृत्तियां ( टीकाएँ अथवा श्लोक ) काव्याभिप्रायको कहती हुई मालूम पड़ती हैं वह जटाचार्य्य हमारी रक्षा करें ॥ ५० ॥

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

धर्मसूत्रका पीछा करनेवाली और मनोहर जिनकी वाणीरूपिणी मणियोंने पुराणको सुशोभित किया, ऐसे काणभिक्षु की जय हो ॥ ५१ ॥

कवियोंमें कितने तीर्थङ्कर भी होगये हैं, किन किनका वर्णन किया जाय। इन लोगोंके वचनमय-तीर्थने विद्वानोंके वाङ्मलको नष्ट कर दिया ॥ ५२ ॥

श्रीअकलङ्क भट्ट और श्रीपाल आदि आचार्य्योंके गुण गुण विद्वानोंके हृदय होकर हारके से दीख पड़ते हैं ॥ ५३ ॥

कविताकी अन्तिमसीमा, वक्तृताका परम-सुन्दर-स्थान और न्यायशास्त्रके अनन्य-ज्ञाता श्रीवादिसिंह को भला कौन नहीं पूजा करेगा। यानि सब विद्वद्गण इनको सम्मानित करेंगे ॥ ५४ ॥

माननीय भट्टारकोंमें यशस्वी श्रीवीरसेन जी हैं। इसलिये कविकदम्ब के मुनि और पवित्रात्मा यह वीरसेन हमें पवित्र करें ॥ ५५ ॥

इन भट्टारक महात्मामें लौकिकज्ञता और कविता दोनों टिकी हुई हैं और दूसरी बात यह है कि वाग्मी श्रीबृहस्पतिजीसे भी इनकी वाचालता बढ़ी चढ़ी है ॥ ५५ ॥

सिद्धान्तशास्त्र ( जयधवल महाधवल ) के बनानेवाले उपर्युक्त हमारे गुरु ( श्रीवीरसेन ) जीके कोमल चरणारविन्द मेरे मनरूपी सरोवरमें चिरकाल तक रहें ॥ ५६ ॥

उक्त वीरसेनजीकी वाणी कैसी समुज्ज्वल है और इनकी पवित्र तथा स्वच्छ कीर्त्ति भी चारो तरफ फैली हुई है। ऐसे सारे संसारको प्रकाशमय करनेवाले श्रीवीरसेन गुरुको मैं अनन्त प्रणाम करता हूं ॥ ५७ ॥

तपोलक्ष्मीके जन्मस्थान और पाण्डित्य तथा शान्ति परिणामिताके तो मानो निधि, पण्डितगणा-अगण्य श्रीजयसेन गुरु हमें रक्षा करें ॥ ५८ ॥

जिसने वाणी और अर्थभरे सब पुराणका संग्रह किया, वही कविपरमेश्वर संसारमें कवियोंसे पूज्य है ॥ ५८ ॥

और बहुतसे कवि हैं। इस समय उनकी चर्चा करनी व्यर्थ है। जो जगत्में पूज्य हैं वेही मुझ मंगलार्थीसे समादृत हैं ॥ ६० ॥

## आदिपुराणमें श्रीगुणभद्राचार्य्यकी उत्थानिका।

श्रीधर्मध्वज वृषभदेव स्वामी हम लोगोंको अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन,

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अनन्त वीर्य्य, अनन्त सुख दें। क्योंकि इनका मुक्तिमार्ग बड़ा ही परिष्कृत है॥ १॥

महात्मा श्रीजिनसेनाचार्य्यने इस पुराणका सारा तत्व वर्णन कर दिया। इसके शेषभागको पूर्त्ति करनेके लिये मेरा उद्योग एक बड़े कोठेके बन जानेपर उसमें कुछ छुटे हुए कार्य्यकी पूर्त्तिका सा है॥ ३॥

सुन्दर पत्र तथा सत्परिणामरूपी फलसे शोभायुक्त और प्रौढ़ शब्दोंके अर्थसे भरे इस पुराणमें जो मेरी उक्ति है उसको पल्लवके ऐसा विद्वज्जन अपने श्रवणमें संलग्न करें यानि सुने॥ १२॥

मेरे पूज्यपाद श्रीगुरुजीने इसका पूर्वार्द्ध बनाया किन्तु परार्द्ध भी उन्हींका सा सदलंकार और सच्छन्दसे युक्त हो ऐसी मुझे आशा नहीं॥ १३॥

इसमें सन्देह नहीं कि ऊखके मूलगत रसके ऐसा पूर्वभाग बहुत ही सरस हुआ है, किन्तु मैंने किसी प्रकार इसकी समाप्तिके लिये प्रारम्भ किया है अर्थात् उतनी सरसता होनेकी आशा नहीं।

पर मुझे यह भी निश्चय है कि इसका शेषभाग भी विरस नहीं होगा, क्योंकि धर्म्म-सम्बन्धिनी बातें आजतक किसीने विरस कहीं ही नहीं॥ २०॥

यदि मेरा वचन सरस होतो वह मैं अपने गुरुही की महिमा समझता हूं क्योंकि सुस्वादु फल होनेका कारण वृक्षही होता है॥ २१॥

मेरे हृदयमें गुरुजी महाराज विराजमान हैं और वहीं से वाणी निकलेगी तो हमे चिन्ताही किस बातकी; क्योंकि वे वहां बैठे बैठे मेरी वाणीका संस्कार करें होंगे। इसलिये इसमें मेरा परिश्रम नहीं समझना चाहिये॥ २२॥

जैसे पटरानियां केवल सन्तान उत्पन्न करती हैं, उसका रक्षण उनकी दासियां करती हैं। उसी तरह मेरी बुद्धि इस कविता-कृतिको समुद्भूतकरती है। इसका प्रचार तथा रक्षा बुद्धिशाली कवीश्वरही की वुद्धि करेगी॥ २३॥

अर्ज्जुनरूपी सत्कविके वाणरूपी शब्द प्रयुक्त होकर कर्णरूपी दुष्ट मनुष्यकों व्यथित करते हैं॥ २४॥

जिनसेन मतानुयायीजन उनके पुराणमार्गका अवलम्बनकर संसार-समुद्रसे पार होते हैं तो मेरेलिये भला पुराणका पार होना कौन बड़ी बात है॥ २५॥

---

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

## प्रशस्ति ।

कुलकरोंमें पन्द्रहवें कुलकर और तीर्थङ्करोंमें आदितीर्थङ्कर श्रीऋषभदेव स्वामीने कर्म्मभूमिके आदिमें प्रजाओंको जीवन-विधि और मोक्ष-मार्ग प्रकट किया। इनको नवक्षायिक-लब्धियोंमें उत्कृष्ट तथा निरावरण केवल-ज्ञान हुआ। वही समस्त पृथ्वीके पिता आदितीर्थङ्कर श्रीऋषभनाथ स्वामी मङ्गल करें।

सप्तपदार्थके तत्वोंको प्रत्यक्ष करनेवाले, समीचीन धर्म्मरूपी मार्गके पालक तथा धर्म्मके हेतु इक्ष्वाकु-कुल-तिलक श्रीऋषभनाथ स्वामी भव्य-प्राणियोंका उत्कृष्ट सिद्धि-साधन करें।

नाभिराजाके पुत्र होनेपर भी विद्वज्जनोंसे पूजनीय साक्षात् स्वयम्भू हुए। समस्त परिग्रहसे रहित होनेपर भी समस्त ज्ञानियोंके स्वामी कहे जाते थे। उदासीन होने पर भी प्राणि-गणोंके सच्चे उपकारी थे। दानरहित होनेपर भी विद्वज्जनोंसे पूज्यपाद थे। वे आपलोगोंको शान्तिके लिये हों।

---

## उत्तरपुराण ।

### मङ्गलाचरण ।

जिनके निर्मल-वचन शिष्ट-मनुष्योंका मनो-मालिन्य अशेष प्रक्षालित करते हैं, वह श्रीमान् अजित जिन जयशाली होवें॥ १॥

उनको मोक्षलक्ष्मीको सिद्धिका समागम करनेवाले पुराणको मैं कहता हूं, क्योंकि इसके श्रवणमात्रसे भविकोंको अप्रतिहत सिद्धि होती है॥ २॥

## छिहत्तरवें अध्यायका कुछ भाग।

इस भरतक्षेत्रमें अन्त्यकेवलियोंमें जम्बूनाम केवली अन्तमें हुए। इनका ज्ञान लोकालोकके प्रकाशित करनेमें एक प्रकाशमय है॥ १५॥

इनके बाद अत्यन्त विशुद्ध परिणामके धारक नन्दीमुनि, नन्दीमित्र, अपराजित, गोवर्द्धन और भद्रबाहु ये पांच श्रुतकेवली हुए॥ १६॥ १७॥

तत्पश्चात् विशाखाचार्य्य, प्रोष्ठिल, क्षत्रिय, जयनाम, सिद्धार्थ, धृतषेण, विजय, बुद्धिल, गङ्गदेव और क्रमण ये ग्यारह मुनिराज बुद्धिमान श्रीधर्म्मसेनके साथ साथ दशपूर्वके धारी हुए॥ १८॥ १९॥

इसके उपरान्त नक्षत्राचार्य्य, यशःपाल, पाण्डु, ध्रुवसेन और कंसाचार्य्य ये



Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पांच मुनि जैनधर्मके प्रकाशक, भव्योंके लिये कल्पवृक्षकी तरह ग्यारह अङ्गके पण्डित हुए ॥ २० ॥ २१ ॥

सुभद्र, यशोभद्र, प्रकष्टज्ञानी भद्रबाहु और चौथे लोहाचार्य्य ये सब एकाचारांगके पाठी हुए ॥ २२ ॥

जिनेन्द्रके मुखसे निकला हुआ पवित्र तथा पापको नष्ट करनेवाला शास्त्र इन उपर्य्युक्त मुनियोंको परस्पर उज्जीवित करता रहा ॥ २२ ॥ २३ ॥

जिनसेन हैं शिष्य जिनके ऐसे महर्द्धिशाली तपोधन वीरसेनादि मुनियोंने श्रुतज्ञानका उपदेश दिया कि इस दुःखमय पञ्चम-कालमें संसारकी ऐसी ही व्यवस्था रहेगी ॥ २४ ॥ २५ ॥

## अन्तिम भाग।

श्रीमूलसंघरूपी जलनिधिमें देदीप्यमान मणिकी तरह महापुरुषोंका स्थान सेनसंघ हुआ ॥ ३ ॥

इसी सेनसम्प्रदायमें अनेक प्रवादीरूप हस्तियोंको पराजित करनेवाले शूराग्रणी श्रीवीरसेन भट्टारक हुए ॥ ४ ॥

... ... ... ... ...

इन वीरसेनके शिष्य जिनसेन हिमालयसे गङ्गाकी नाईं, सर्वज्ञसे अखिल-शास्त्रकी एकमूर्त्ति दिव्यध्वनिकी तरह और उदयाचल पर्वतसे चमकते हुए सूर्य्यकी तरह हुए ॥ ५ ॥

जिन जिनसेनके उन्नत नखांशु-जालसे निकले हुए जलसे उत्पन्न होते हुए चरणकमल की धूलिसे धूसर होगयी है मुकुटाग्र-रत्नद्युति जिसकी ऐसे अपनेको परम पवित्र माननेवाले अमोघवर्ष हैं शिष्य जिनके वही श्रीमान् जिनसेनाचार्य्यके चरण-कमल संसारके मङ्गलकारी हो ॥ १० ॥

... ... ... ... ...

चन्द्रमाके सहवर्त्ती आकाशके एकनेत्र सूर्य्यके से दशरथगुरु श्रीजिनसेनाचार्य्यके सहधर्म्मी हुए। इनके स्वच्छ धर्मतत्व भरे ज्ञानोपदेशसे यह सारा संसार प्रकाशमय हुआ ॥ १३ ॥

इनके प्रदीप्तवाक्य-समूहमें आयनेमें दिखते हुए विश्वमण्डलके ऐसा, बल्कि

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इसमें सब शास्त्रोंका ऐसा सद्भाव भरा हुआ है कि एक लड़का भी उसको बहुत शीघ्र समझ सकता है ॥ १४ ॥

न्यायशास्त्रका तत्व प्रकट करनेवाले, सांसारिक तथा पारमार्थिक विद्याके सिद्धान्तोंको परिशीलन करनेसे परिवर्द्धित बुद्धिवाले, अनेक नय तथा प्रमाणमें निष्णात, और प्रशंसनीय गुणोंसे समलङ्कृत दशरथ गुरु और गुणभद्राचार्य्य जिनसेनाचार्य्यके प्रिय शिष्य हुए ॥ १५ ॥

... ... ... ... ...

सभीछन्द और अलङ्कारका लक्ष्य, सूक्ष्मार्थ तथा गूढ़पद की रचनावाली एक "गद्यकथा" कविपरमेश्वरने बनायी ॥ १८ ॥

... ... ... ... ...

जिनसेन भगवान् की उक्तिने कवियोंके मिथ्या अभिमान मर्दित कर दिये। जिनसेनाचार्य्य सिद्धान्तोंके रचयिता तथा शिष्योंके सदुपदेष्टा थे ॥ २० ॥

गुणभद्राचार्य्यने थोड़ा समय शेष रहनेकी वजहसे तथा बहुत बढ़ जानेके भयसे बुद्धिशाली श्रीजिनसेनाचार्य्यका शेषभाग संग्रह किया ॥ २१ ॥

... ... ... ... ...

सकल-शास्त्र-वेत्ता, सच्चारित्रधारी ( निर्ग्रन्थचारित्रके धारक। ऐसे "लोकसेन" मुनीश, कविवर जिनसेनाचार्य्यके मुख्य शिष्योंमें थे, उनकी इस पुराणमें बहुत सहायता पाकर सत्पुरुषोंके द्वारा अपने गुरुकी विनयत था अपनी मान्यता दिखलायी ॥ २८ ॥

अकालवर्षके हाथियोंकी प्यास जब अपने मदरूपी नदियोंके धारा-प्रवाहसे सराग तथा कड़ुए जल पीकर नहीं गयी तब इन्होंने कौमार नामक घने चन्दनवाले, समुद्रजल-कणोंसे ठंढी ठंढी हवासे कम्पित वृक्षवाले और सूर्य्यास्तहोनेसे छायाप्रधानवाले वनकी शरण ली ॥ ३० ॥

दुग्ध-समुद्रमें पर्वतके साथ रहनेसे, कृष्णकी छातीमें गोपियोंके कुचोद्घट्टनसे और पद्मकी रात्रिमें सङ्कुचित होनेसे जो लक्ष्मी चिरदुःखिनी थी उन्होंने भुजास्तम्भसे जकड़ी हुई, मुक्तामालाके दुरनेसे तोरणयुक्त और खूब चौड़ी अकालवर्षकी छातीमें बहुत कालों तक सुखपूर्वक निवास किया ॥ ३१ ॥

स्वच्छ यशके धारी, सारे शत्रुओंको ध्वस्त करनेवाले अकालवर्ष जब सारी पृथ्वीपर अपना अप्रतिहत शासन कररहे थे ॥ ३२ ॥

पद्मकी कलियोंके समूहको प्रकाश करनेवाले, सत्कीर्त्ति-व्रातसे प्रकाशित

Ac. Gunratnasuri MS    Jin Gun Aradhak Trust

और अखिल-शत्रु-समूहरूपी अन्धकारको नष्ट करनेवाले श्रीमान् लोकादित्यके रहते रहते ॥ ३३ ॥

चेल्लध्वजके छोटे भाई, "चेल्लकेतनके लड़के चन्द्रमाके ऐसे उज्ज्वल कीर्त्ति-वाले "चेल्लकेतन" के जैनेन्द्रधर्मकी उन्नति करते समय ॥ ३४ ॥

सब वनवास देशको निष्कण्टक बहुत दिनों तक शासन करने पर, सब नगरोंमें श्रेष्ठ, अपने पुरुषोंसे नाम रक्खे हुए बँका पुरमें ॥ ३५ ॥

मङ्गल करनेवाले, सारे जनको सुख देनेवाले पिङ्गलनामके शक सम्वत् ८१० आषाढ़ कृष्ण पञ्चमी गुरुवारको सिंहलग्न, कर्कराशिस्थ सूर्य्य, पूर्वाभाद्रपदस्थ चन्द्र, धनुराशिस्थित मङ्गल, मिथुनका बुध, वृषराशिस्थित वृहस्पति, कर्कराशिस्थित शुक्र, वृश्चिकराशिस्थित शनि और तुलाराशिस्थित राहुके रहने पर यह उत्तर-पुराण समाप्त हुआ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥

इस पुराणमें धर्म्म, कविता, सुक्तिपद और तीर्थङ्करोंका चरित्र है। अथवा यों कहिये कि जिनसेनके मुखसे निकली हुई जो बात है वह किसका मन नहीं हरण कर सकती ॥ ३९ ॥

श्रीकवि-वर जिनसेनाचार्य्य-रचित ऋषभदेवजीके इस सुन्दरपुराणकी निन्दा नहीं करनी चाहिये। विशेष बात तो यह है कि इसमें गुणभद्राचार्य्यकी उक्ति बड़ी ही विचित्र है। और कहांतक कहा जाय सभी कवि-करीन्द्रोंके लिये सिंहिनीकी सी गुणभद्राचार्य्यकी उक्ति है इसलिये उनकी जय हो ॥ ४० ॥

मित्रो! यदि तुमलोग सभी कविरत्नोंकी समीचीन उक्तिके सुननेसे सरस-चित्त होना चाहते हो तो केवल इस "महापुराण" त्रिषष्ठिशलाका पुरुषोंके चरि-त्रार्णवकी कथा सुनो। इसमें कवितागुण तो श्लोक श्लोकमें भरा हुआ है। विशेष प्रशंसा कहां तक की जाय क्योंकि इस पुराण ( उत्तरपुराण ) के कवि स्वयं गुणभद्राचार्य्य ही तो हैं ॥ ४२ ॥

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

# उपर्युक्त महापुराणके कर्त्ता श्री १०८भगवज्जिनसेनाचार्य्य और श्री१०८ भगवद्गुणभद्राचार्य्य की परिचय-पट्टावली।

वन्दे जिनवरम्।

पट्टावली: श्रीसेनगणस्य

स्रग्धरावृत्तम्।

श्रीमन्मेरवाचलोद्यच्छिखरिगतलसत्पाण्डुकासारपीठे
देवेन्द्रानूनवाहाभरणमितमहारत्नकुम्भैः प्रपूर्णैः।
दुग्धाम्भोराशिनीरैः सकलगुणनिधि स्नापितस्तापलोपः
पायाद्भव्यानजस्रं वृषभ-जिनपतिः श्रीपति र्भूपतीशः॥

गद्य।

देव! स्वस्ति समस्तवस्तुविस्तारकवाचस्तोष्पतिप्रमुखचतुर्णिकायामरनिकरविपुलतरललितमौलितलकलित-माणिक्यमयूखमालालङ्कृतक्रमकमलयुगलस्य विंशतिसहस्रसोपानविराजमानधूलिशालाद्येकादशभूम्यभिरामधनदविरचितसमवसरण—विराजमानश्रीराजहंसावतारस्य श्रीमदादिपरमेश्वरस्य मुखकमलविनिर्गत 'पञ्चास्तिकाय' 'षड्द्रव्य' 'सप्ततत्व' 'नवपदार्थ' पारावारपरायणश्रीमूलसङ्घश्रीमन्महावृषभसेनगणधरान्वयपारपर्यागते श्रीवृषभसेन--श्रीसिंहसेन-चारुसेन-वज्रनाभि-चामरवलदत्त-अनगार-कुन्थु-धर्म्ममन्दर-जय-अरिष्टसेन-वज्रायुध-स्वयम्भू--कुम्भ-विशाखमल्लि-सुप्रभ-वरदत्त-स्वयम्भूगौतमाश्वेति सभामुख्यगणधरदेवानाम्॥ १॥

श्रीमति श्रीमहावीरतीर्थङ्करपरमदेवमोक्षं गते द्वाषष्ठिवर्षपर्य्यन्तशुद्धधर्म्मोपदेशकर्त्तृणां, मिथ्यात्वान्धकारसमूहस्य समूलनाशकरपरमोद्योतदिनकरसमानानां, शिवकरणगणधरपदधर-गौतमस्वामि-सुधर्म्माचार्य्य-तच्छिष्यजम्बूनामकेवलज्ञानलब्ध-शिवपदप्राप्तानाम्॥ २॥

तदनन्तरद्वादशाङ्गश्रुतसारासारविचारचतुरसज्जनजनमनोऽभिलषितपदार्थप्रकाशनशीलानां, गगनसहितदशवर्षपर्य्यन्तपरमागमघनवर्षणसन्तुष्टचित्तानां श्रीविष्णुयोगिनेन्दिमपराजितगोवर्द्धनभद्रवाहुनामाङ्कित-पञ्चश्रुतकेवलिकेवलीकल्पानां, सामायिकछेदोपस्थापनपरिहारविशुद्धिसूक्ष्मसांपराययथाख्यातपञ्चविधचारित्रप्रतिभारधुरंधराणाम्, अशीत्यधिकशतमर्य्यादस्तुतजलधिवर्द्धनपूर्णशशिलाञ्छनबिम्बशि-

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

ष्याणाम्, दशपूर्वसमयसारसलिलनिकरपारदुःप्राप्यसुखतरप्राप्तानां, व्रतधर-प्रौष्ठिलाचार्य्य-क्षत्रियाचार्य्य-जयसेनाचार्य्य-(सेन) धृतिषेण-विजयनाम-वुद्धि-गङ्गदेव-धर्म्मसेनाचार्य्याणां ॥ ३ ॥

ततः एकादशाङ्गशास्त्रद्वाविंशत्यधिकद्विशतसंवत्सरपरिमितपरमपावनसमर्थानां, नक्षत्राचार्य्य-जयपाल-मुनीन्द्र-पाण्डुनामाचार्य्य-ध्रुवसेन-कंसनामयोगीश्वराणां ॥४॥

अतएव आचाराङ्गपूर्णपवित्रवसुशशिशशधरवर्षमात्रसद्धर्म्मश्रीविस्तारकाणां, युगलनेत्रपरिषद्दसहनसिंहपराक्रमसुभद्राचार्य्य- यशोभद्र- भद्रवाहु-लोहाह्वजिनसेन-पूज्यपूज्यानाम् ॥ ५ ॥

तत्सूत्राणां सार्द्धत्रिकोटित्रयग्रथितटीकाप्रकृत्ज्येष्ठशुक्लपञ्चमीदिने निर्मापकलक्ष्मीसेन-पदकमल-रविषेणाचार्य्याणाम् ॥ ६ ॥

कुमतान्धकारभानुशिवायनस्वामिनां, व्याकरणमहेश्वराणाम् तार्किकशिरोमणीनां, रामसेन-कनकसेन-वन्धुषेण-विष्णुषेण-मल्लिषेण भट्टारकाणाम् ॥ ७ ॥

गणितशास्त्रप्रवीणपूर्वछतीसी-उत्तरछतीसीअनेकवस्तु-संख्याकथकश्रीमहावीराचार्य्याणां ॥ ८ ॥

परमशब्दब्रह्मरूपत्रिविद्याधिपपरवादिपर्वतवज्रदण्डश्रीभावसेनभट्टारकाणाम् ॥ ९ ॥

न्यायविद्या-निपुण--वारीन्द्रचतुर्विंशतियक्षीदेवताप्रत्यक्षीभूतश्रीअरिष्टनेमिभट्टारकाणाम् ॥ १० ॥

सेनसङ्घनन्दिसङ्घादिदशसङ्घनिरूपकमहानिमित्तकुशलश्रीअर्हद्दत्ता-चार्य्याणाम् ॥ ११ ॥

दक्षिणमथुरानगरनिवासिक्षत्रियवंशशिरोमणिदक्षिणतैलङ्गकर्णाटकदेशाधिपतिचामुण्डरायप्रतिवोधकवाहुवलिप्रतिबिम्बगोमट्टस्वामिप्रतिष्ठाचार्य्यश्रीअजितसेनभट्टारकाणाम् ॥ १२ ॥

चूलगिरिशिखरे पुरुषपाषाणदर्शनलब्धप्रमोदवावनश्रेष्ठिकृतवृषभनाथप्रतिबिम्बमहामहोत्सवकर्तृश्रीगुणसेनभट्टारकाणां ॥ १३ ॥

श्रीमदुज्जयिनीमहोकालसंस्थापनमहाकाललिङ्गमहीधरवाग्वज्रदण्डविष्यविस्फूतश्रीपार्श्वतीर्थेश्वरप्रतिद्वन्द्वश्रीसिद्धसेनभट्टारकाणाम् ॥ १४ ॥

नवतिलिङ्गदेशाभिरामद्राक्षाभिराममभीमलिङ्गस्वयंन्वादिस्तोटकोहत्कीरणरुद्रसान्द्रचन्द्रिकाविशदयशः श्रीचन्द्रजिनेन्द्रसद्दर्शनसमुत्पन्नकौतूहलकलितशिवकोटिमहाराजतपोराज्यस्थापकाचार्य्यश्रीमत्समन्तभद्रस्वामिनाम् ॥ १५ ॥

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सकलगुणमणिगणभरण-भूषित श्रीशिवकोटिभट्टारकाणाम् ॥ १६ ॥

यादवकुलकुमारदीक्षिताऽरिष्टनेमिक्रीड़ानिवासरैवतकपर्वतकाञ्चनगुहायाम् श्रीमत्सिद्धचक्रयन्त्रोद्धारभारधुरन्धरश्रीवीरसेनभट्टारकाणाम् ॥ १७ ॥

धवल महाधवलपुराणादिसकलग्रन्थकर्त्तारः श्रीजिनसेनाचार्य्याणां ॥ १८ ॥

उभयपरिग्रहपरित्यक्तोभयतपःकामिनीरूपावतारद्वादशाङ्गचतुर्दशपूर्वपञ्चप्रज्ञप्तिपञ्चविधवाङ्गादिसकलश्रुतपारावारपरायणसकलगुणमणिमणाभरणभूषितश्रीगुणभद्राचार्य्याणाम् ॥ १९ ॥

## संस्कृत सेनगणकी पट्टावलीका भाषानुवाद और उसकी संक्षिप्त नामावली ।

श्री१००८ श्रीआदितीर्थंकरके गणधरोंके निम्नलिखित नाम हैं ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| १०८ श्रीवृषभसेन स्वामी | १ | | श्री १०८ अरिष्टसेन | ११ |
| ,, सिंहसेन | ... २ | | ,, स्वयम्भू | १२ |
| ,, चारुसेन | ... ३ | | ,, कुम्भ | १३ |
| ,, वज्रनाभि | ... ४ | | ,, विशाख | १४ |
| ,, चामर | ... ५ | | ,, मल्लिषेण | १५ |
| ,, वलदत्त | ... ६ | | ,, सुप्रभ | १६ |
| ,, अनगार | ... ७ | | ,, वरदत्त | १७ |
| ,, कुन्थु | ... ८ | | ,, स्वयम्भू | १८ |
| ,, धर्म्ममन्दर | ... ९ | | ,, गौतम | १९ |
| ,, जय | ... १० | | | |

## श्री १००८ महावीर स्वामी (अन्तिम-तीर्थङ्कर)के मोक्ष पधारने पर ६२ वर्षतक निम्नलिखित महानुभाव आचार्य्योंने अपने उपदेशसे संसारका कल्याण किया ।

गौतम स्वामी १	सुधर्म्माचार्य्य २	जम्बू स्वामी ३ ( अन्तिम केवली )

इनके बाद १०१ वर्षपर्य्यन्त निम्नलिखित पांच श्रुतकेवलियोंने तत्वोपदेश किया ।

श्रीविष्णुमुनि स्वामी १
श्रीनन्दिमित्र २
अपराजित ३

Ac. Gunratnasuri MS	Jin Gun Aradhak Trust

| | |
|---|---|
| गोवर्द्धन | ४ |
| भद्रबाहु | ५ |

इन पांच श्रुतकेवलियोंके बाद १०८ वर्षतक इनके निम्नलिखित शिष्य हुए।

| | | | |
|---|---|---|---|
| श्रीव्रतधर स्वामी | १ | विजयनामाचार्य्य | ६ |
| प्रौष्ठिलाचार्य्य | २ | बुद्धिलाचार्य्य | ७ |
| क्षत्रियाचार्य्य | ३ | गङ्गदेव | ८ |
| जयसेनाचार्य्य | ४ | धर्म्मसेनाचार्य्य | ९ |
| धृतषेणाचार्य्य | ५ | | |

इनके बाद २२२ वर्षतक निम्नलिखित आचार्य्य एकादशाङ्गके धारी हुए।

नक्षत्राचार्य्य १ जयपालाचार्य्य २ मुनीन्द्र ३ पाण्डुनामाचार्य्य ४ ध्रुवसेनाचार्य्य ५ कंसाचार्य्य ६

इनके बाद ११८ वर्ष तक नीचे लिखे आचार्य्योंने धर्म्मप्रचार किया।

सुभद्राचार्य्य १ यशोभद्र २ भद्रबाहु ३ लोहाचार्य्य ४ जिनसेनाचार्य्य ५

यहींसे सेनसङ्घ प्रारम्भ हुआ अर्थात् यहींसे मूलसङ्घमें से सेनसङ्घ अलग हुआ और इस सङ्घमें क्रमशः निम्नलिखित आचार्य्य हुए।

रविषेणाचार्य्य १ शिवायन २ रामसेन ३ कनकसेन ४ बन्धुषेण ५ विष्णुसेन ६ मल्लिषेण ७ श्रीमहावीराचार्य्य ८ भावसेन ९

भट्टारकोंकी नामावली।

अरिष्टनेमी १० अर्हद्दत्तो ११ अजितसेन १२ गुणसेन १३ सिद्धसेन १४ समन्तभद्र १५ शिवकोटि १६ वीरसेन १७ जिनसेन १८ गुणभद्र १९

क्रमशः।

## वन्दे जिनवरम्।

जिन भगवान्‌ने लक्ष्मी वा देवकृत अनेक प्रकारकी चित्रकारीसे चित्रित अचल सुमेरु पर्वतके ऊंचे शिखरपर पाण्डुशिलास्थ श्रेष्ठ सिंहासनपर आरूढ होकर क्षीरसमुद्रके जलसे भरे अमूल्य रत्नोंके घडोंसे संसार-ताप दूर करनेके लिये स्नान किया। वह सकल-गुणोंके सूर्य, स्वर्ग मध्य पाताल तीन लोकके स्वामी, इन्द्रचक्रवर्ती धरणीन्द्रोंके स्वामी और अनन्तचतुष्टयादि अन्तरङ्ग समवशरणादि बाह्य लक्ष्मीके स्वामी वृषभजिनपति श्रीऋषभतीर्थंकर देव भव्यजीवोंको निरन्तर जिसप्रकार हो उसप्रकार रक्षा करें।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

# पट्टावलीका भाषानुवाद।

हे देव कल्याण हो। समस्तवस्तुके स्वरूपको प्रकाश करनेवाले, इन्द्रादि चतुर्निकायके देवोंके मुकुटोंमें लगे हुए बड़े बड़े और अत्यन्त मनोहर माणिक्यादि रत्नोंकी किरणोंसे सुशोभित-चरणकमल वाले अथवा माणिक्यादि रत्नोंकी किरणोंको जिनके चरणकमलोंने सुशोभित किया है ऐसे श्रीमान् आदिपरमेश्वर श्रीऋषभदेव कुबेर-रचित बीस हजार सीढ़ियोंसे शोभायमान, धूलिशालादि कोट, ग्यारह भूमियोंसे रमणीय समवसरणमें विराजमान, नीरक्षीरवत् अनादि-कर्म्म-बद्धनिजात्म-स्वरूप क्षीरको कर्म्म-रूप नीरसे अत्यन्त पृथक कर क्षायिक केवलज्ञानादि अनन्तचतुष्टयरूप निजस्वरूप क्षीरके अनुभवी, अपूर्व राजहंसावतार श्रीआदिनाथ भगवान्‌के मुखसे निकला हुआ, पंचास्ति-काय, षट्‌द्रव्य, सप्ततत्व और नवपदार्थरूप जलसे भरे श्रुतरूप समुद्रमें तत्पर श्रीमूलसंघ श्रीमान् वृषभसेन गणधरकी वंशपरंपरामें श्रीवृषभसेन, श्रीसिंह-सेन, श्रीचारुसेन, वज्रनाभि, चामर, बलदत्त, अनगार, कुन्थु, धर्म्ममन्दर, जय, अरिष्टसेन, वज्रायुध, स्वयम्भू और गौतम इस प्रकार सभामें प्रधान गणधर देव हुए।

अन्तरंग बहिरंग लक्ष्मीसे युक्त श्रीमान् परमदेव महावीरस्वामीके मोक्ष जानेपर ६२ वर्ष-पर्यन्त शुद्धधर्म्म यानि वीतरागधर्म्मके उपदेश करनेवाले मिथ्यात्वरूपी अन्धकारके समूहको मूलसे नाश करनेमें और सुन्दर उद्योत करनेमें सूर्य्यके समान, मोक्षके करनेवाले गणधर-पदके धारक गौतम स्वामी केवली और सुधर्म्माचार्य्य, उनके शिष्य जम्बूस्वामी केवल ज्ञान प्राप्त कर मोक्ष-पदको प्राप्त हुए।

३—उनके उपरान्त द्वादशाङ्ग-श्रुतकथित सार तथा असार पदार्थोंके विचारमें चतुर अर्थात् पदार्थोंके प्रकाश करनेवाले और १०० वर्ष तक जिन-सिद्धान्तरूप मेघ-वर्षासे सन्तुष्ट चित्तवाले श्रीविष्णुमुनि, नन्दिमित्र, अपराजित गोवर्द्धन, भद्रबाहु, पांच श्रुतकेवली—केवलीभगवान्‌के समान पांच चारित्रके धारक हुए।

४—१८० वर्षके भीतर ही कीर्त्तिको बढ़ानेके लिये चन्द्रमाके समान ऐसे शिष्य ११ अंग और १० पूर्वके धारी तथा जिनसिद्धान्तके पाठी व्रतधर, प्रौष्ठिला-

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

चार्य, जयसेनाचार्य, धृतषेण, विजयनाम, बुद्धिल, गंगदेव और धर्मसेनाचार्य हुए।

५—उनके उपरान्त २२२ वर्षमें ११ अङ्कके पाठी, शुद्ध और वीतराग चारित्रके धारक नक्षत्राचार्य, जयपाल, सुनीन्द्र, पाण्डुनामाचार्य, ध्रुवसेन और कंसनाम मुनीश्वर हुए।

६—उन्हींके शिष्य-परम्परागत आचाराङ्गके पूर्ण पाठी ११८ वर्षमें २२ परिसहोंके सहन करनेवाले श्रीशुभद्राचार्य, यशोभद्र, भद्रबाहु, लोहाचार्य और जिनसेन ये परमपूज्य आचार्य हुए।

७—और इन पूर्वोक्त आचार्य-निर्मित-सूत्रोंको साढ़ेतीन करोड़ श्लोकरचना कर टीकाको करते हुए ज्येष्ठ शुक्ल पञ्चमीके दिन श्रीलक्ष्मीसेन आचार्यके चरणकमल निर्माण करानेवाले रविषेणाचार्य जी हुए।

८—मिथ्यात्व-रूप कुमत अन्धकारके दूर करनेमें सूर्य्यके समान शिवायन स्वामी हुए।

९—व्याकरण शास्त्रके पारगामी न्याय-विद्यामें निपुण रामसेन, कनकसेन, वसुषेण, विष्णुषेण और मल्लिषेण भट्टारक हुए।

१०—गणितशास्त्रमें चतुर पूर्वछत्तीसी और उत्तरछत्तीसी आदि शास्त्रोंके कर्ता और अनेक वस्तुसंख्याके कहनेवाले गणकाग्रणी श्रीमहावीराचार्य हुए।

११—परमविद्या, शब्दविद्या और ब्रह्मविद्या इन त्रिविद्याओंके वेत्ता, परवादीरूप पर्वतोंके भेदन करनेमें वज्रके समान श्रीभावसेन भट्टारक हुए।

१२—न्याय-विद्यामें निपुण समुद्रके समान धीर और जिनके वंशमें चौवीस यक्षिणी देवता प्रत्यक्ष हुई वही श्रीअरिष्टनेमी भट्टारक हुए।

१३—सेनसंघ नन्दिसंघादि १० संघ निरूपण करनेवाले महानिमित्त शास्त्र जो अष्टांगनिमित्त शास्त्र ( ज्योतिष शास्त्र ) है उसमें प्रवीण श्रीअर्हद्बली आचार्य हुए।

१४—दक्षिण मथुरानगरके रहनेवाले, क्षत्रियवंशके शिरोमणि दक्षिण तैलंग कर्णाटक देशोंके स्वामी राजा चामुण्डरायको प्रतिबोध करानेवाले बाहुबल स्वामीका प्रतिबिम्ब और गौमट्टस्वामीकी प्रतिष्ठा करानेमें प्रतिष्ठाचार्य श्रीअजितसेन भट्टारक हुए।

१५—चूलगिरि पर्वतके शिखरपर पुरुष-प्रमाण पाषाणके दर्शनसे पाया है आनन्द जिसने ऐसा बावनश्रेष्ठीका किया हुआ श्रीऋषभनाथस्वामीके प्रतिबिम्ब का महामहोत्सव, पंच कल्याणकके कर्त्ता श्रीगुणसेन भट्टारक हुए।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

१६—श्रीउज्जयिनी नगरीमें श्रीपार्श्वनाथ तीर्थंकरके चैत्यालयपर कलश स्थापनाके समय महाकाललिङ्ग नामक राजाको वज्रदण्डमयी वाणीसे भृत्यों द्वारा सामने मंगाया श्रीपार्श्वनाथ स्वामीका प्रतिविम्ब उसका वदला लेनेवाले श्रीसिद्धसेन भट्टारक हुए।

१७—द्राक्षा फलोंसे रमणीय ऐसे नवीन तिलिङ्ग देशको सुशोभित करनेवाले तथा तिलिङ्ग देशस्थित द्राविड़ देशको भी आलङ्कृत करनेवाले भयानक शिवलिङ्गपर पैर रखकर सोते हुए वादियोंके लोहेकी शृङ्खलासे जकड़ी हुई महादेवकी पिण्डीको फोड़कर उज्ज्वल रजत-सदृश अपूर्व चन्द्र श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्र अर्थात् श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्रका प्रतिविम्ब प्रगटा। उनके दर्शनसे उत्पन्न हुए कौतुहलसे व्याप्त शिवकोटि नामक महाराजको तपोरूपी राज्यमें स्थापन करनेवाले आचार्य्य श्रीमान् समन्तभद्र स्वामी हुए।

१८—समस्त गुणरूपी मणि-रत्नादिकोंसे सुशोभित श्रीशिवकोटि भट्टारक हुए।

१९—यादव वंशमें उत्पन्न हुये। कुमार अवस्थाहीमें जिन-दीक्षा धारण करनेवाले श्रीअरिष्टनेमी बाईसवें तीर्थंकरदेव, उनकी क्रीडा करनेकास्थान, भूरैवतक पर्वतको कांचन-गुफामें श्रीमत् सिद्धचक्र यन्त्रके उद्धार करनेका भार उठानेवाले श्रीवीरसेन स्वामी हुए।

२०—धवल महाधवलादिक ग्रन्थोंकी महती टीका तथा और कई ग्रन्थोंके कर्त्ता परम विद्वान् श्रीजिनसेनाचार्य्य हुए।

२१—१४ प्रकार अन्तरङ्ग और १० प्रकार वाह्य-परिग्रहसे रहित ६ प्रकार अन्तरंग और ६ प्रकार वाह्य तपके धारक सकल श्रुतके अध्ययनमें तत्पर सकल गुणोंसे सुशोभित कई पदवीके धारक श्रीगुणभद्राचार्य्यजी हुए।

( क्रमशः )

Ac. Gunratnasuri MS  Jin Gun Aradhak Trust

# श्री १०८ भगवज्जिनसेनाचार्य्य और गुणभद्र स्वामीका पारमार्थिक वंशवृक्ष और इनका परिचय।

वीरसेन

- जिनसेन
  - गुणभद्र
  - अमोघवर्ष
- विनयसेन
- दशरथ

ये ही जिनसेन श्रीआदिपुराणके कर्त्ता हैं। प्यारे पाठको! यद्यपि हम भगवज्जिनसेनाचार्य्य और गुणभद्राचार्य्यका परिचय करानेका उद्योग करेंगे तौभी हमलोगोंको यह निर्विवाद स्वीकार करलेना पड़ेगा कि इनके समय आदि का निर्णय करना असम्भव नहीं तो महाकष्ट-साध्य अवश्य है। क्योंकि इन्होंने अपने ग्रन्थमें अथवा किसी काव्यमें अपने समयका कुछ वर्णन नहीं किया है। आपने अनेक महान् ग्रन्थोंकी रचना कर और अनेक सुन्दर काव्यका प्रणयन कर भारतवर्षके संस्कृत-साहित्यकी पूर्त्ति करनेके साथ साथ भारतीय दुर्द्धर्ष-विद्वन्मण्डलीमें सदा अपना स्थान सर्वोच्च रक्खा है तौभी अपने समयादिकोंका निर्णय कहीं नहीं किया और न अपनी पूरी पट्टावली ही किसी ग्रन्थमें दी। सम्भव है कि आपने अपने वंशका परिचय देनेमें अपनी आत्म-श्लाघा समझी हो और यही कारण है कि कुछ नहीं लिखा। परन्तु वर्त्तमान समयमें ऐतिहासिक दृष्टिसे एक ज्वलन्त आचार्य्य-प्रवरके समयादिके निर्णयकी सामग्रीका न होना यह पूरी त्रुटि रह जाती है। यदि वे अपना समय, जाति और कुलका कुछ भी परिचय दे जाते तो हम लोगों को इतना कष्ट नहीं उठाना पड़ता। अस्तु आपकी सांसारिक जाति अथवा कुलका परिचय न मिलनेसे उतनी हानि नहीं है जितनी कि उनके पारमार्थिक-वंशके परिचय न मिलनेसे।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इसमें तो कुछ सन्देह ही नहीं कि इन्होंने किसी उच्च जाति अथवा उच्च कुलको अपने जन्मसे अलङ्कृत किया होगा। जहांतक अनुमान किया जाता है तो यही मालूम होता है कि आपने दक्षिण देशमें जन्मग्रहण किया था। इसमें तो कुछ सन्देह ही नहीं कि आपने विद्योपार्ज्जन करनेमें कहीं अच्छी सफलता प्राप्त की थी। इसके बाद इनके विद्या-वृक्षसे ऐसे सौरभपूर्ण पुष्प विकसित हुए कि जिसकी गन्धसे सारा भारतवर्ष आमोदमय हो गया। प्यारे पाठको! महाकवि कालिदाससे किसका परिचय न होगा। आप भारतवर्षके महाकवियोंमें आदर्शरूप माने जाते हैं। बड़े बड़े विद्वानोंका कथन है कि यदि महाकवि कालिदास और काव्य ग्रन्थोंको नहीं रचकर केवल "मेघदूत" ही रचते तो भी इनकी पाण्डित्य-प्रकर्षता तथा काव्यकुशलताका भाव भारतीय विद्वानोंपर वैसा ही रहता। यानि जितने काव्य इन्होंने रचे हैं उन सबोंका नमूना एक छोटेसे "मेघदूत" हीमें संयोजित कर दिया है। हमारे चरित्रनायक श्री १०८ जिनसेनस्वामीने उसी मेघदूत काव्यके प्रत्येक चरणकी पूर्त्ति "पार्श्वाभ्युदय" नामक काव्यमें बड़ी योग्यतासे की है। महाकवि कालिदास इस काव्य (मेघदूत) की रचना कर उस समयके प्रधान प्रधान राजाओंकी राज-सभामें जाकर सुनाने लगे। और जब उन्होंने महाराष्ट्राधिपति राठौरकुलतिलक महाराज अमोघवर्षकी सभामें गये और वहां कविकेशरी जिनसेनस्वामीकी कवितासे सम्पूर्ण राजसभाको मुग्ध देखकर अपनी कविताकी उत्कृष्टता दिखानेके लिये बड़े अभिमानके साथ सभी विद्वानोंको तुच्छ-दृष्टिसे देखते हुए उस काव्यको सुनाया तब इसपर विनयसेनस्वामी जोकि श्रीजिनसेनस्वामीके सहपाठी यानि गुरुभाई थे इन्हीके अनुरोधसे मेघदूतका प्रत्येक चरण प्रत्येक श्लोकमें संयोजित कर जिनसेनस्वामीने एक अपूर्वही "पार्श्वाभ्युदय" नामक काव्य बनाया और सभामें कालिदाससे कहा कि यह तो पुराना प्रबन्धहै। चोरी करके तुमने इस काव्यका प्रणयन किया है। सुविज्ञ पाठको! इस बातको आप लोग समझ सकते हैं कि एक विरह-भाव-पूर्ण शृङ्गार काव्यका वैराग्य और पार्श्वनाथके चरित्र भरे विषयमें परिणत कर देना कितना कठिन काम है। हम यह मुक्तकण्ठसे कहेंगे कि ऐसे जटिल विषयकी पूर्त्ति करना विद्वच्छिरोमणि कवि-केशरी भगवज्जिनसेनस्वामीका ही काम था। यदि हो सकेगा तो "भास्कर" के अगले अङ्कमें कविवर कालिदास तथा भगवज्जिनसेनाचार्य्यकी समकालीनता पूरे

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

प्रमाणके साथ हम प्रकाशित करेंगे। "पार्श्वाभ्युदय" काव्यकी प्रशस्ति (१) में आपने कहा है कि "अमोघवर्ष राजा सदा पृथ्वीका शासन करता रहे"।

इससे मालूम होता है कि स्वामीजीने इस उत्तम काव्यकी रचना महाराज अमोघवर्षके राजत्वही कालमें की थी और महाराज अमोघवर्षका समय बहुतसे ऐतिहासिक प्रमाणों द्वारा शक ७३६ निश्चित होता है तथा यह स्वामीजीकी प्रथम कृति है इसलिये अनुमान किया जाता है कि इस काव्यकी भी पूर्त्ति लगभग शक सम्वत् ७३६ में हुई है।

---

१—पार्श्व० की प्रशस्ति—इति विरचितमेतत्काव्यमावेष्ट्य मेघं, बहुगुणमपदोषं कालिदासस्य काव्यम्। मलिनितपरकाव्यं तिष्ठतादाशशाङ्कम्, भुवनमवतु देवः सर्वदाऽमोघवर्षः ॥१॥ श्रीवीरसेनमुनिपादपयोजभृङ्गः, श्रीमानभूद्विनयसेनमुनि र्गरीयान्। तच्चोदितेन जिनसेनमुनीश्वरेण, काव्यं व्यधायि परिवेष्टितमेघदूतम्॥ २ ॥

पार्श्व०का कथावतार—कालिदासाह्वयः कश्चित्कविः ज्ञात्वा महौजसा। मेघदूताभिधं काव्यं श्रावयन् गणयो नृपान्॥ ५॥ अमोघवर्षराजस्य सभामित्य मदोद्धुरः। विदुषोवगणय्यैष प्रभुमश्रावयत् कृतिम्॥ ६॥ तदा विनयसेनस्य सतीर्थस्योपरोधतः। तद्विद्याहंकृतिच्युत्यै सन्मार्गोद्दीप्तये परम्॥ ७॥ जिनसेनमुनिशानस्त्वै विद्याधीश्वराग्रणीः। विंशत्यशसतग्रन्थप्रबन्धश्रुतिमात्रतः॥ ८॥ एकसन्धित्वतस्सर्वं गृहीत्वा पद्यमर्थतः। भूभृद्विद्वत्सभामध्ये प्रोचे परिहसन्निति॥ ८॥ पुरातन-कृतिस्तेयात्काव्यं रम्यमभूदिदम्। तच्छ्रुत्वा सोऽब्रवीद्रुष्टः पठ्यात्कृतिरस्ति चेत्॥ १०॥ पुरान्तरे सुदूरेऽस्ति वासराष्टकमात्रतः। आनाय्य वाचयिष्यामीत्यवोच द्यमिकुञ्जरः॥ ११॥ इत्येतदवलोक्याथ सभापतिपुरोगमाः। तथैवास्त्विति मध्यस्थाः समयं चक्रिरे मिथः॥ १२॥ श्रीमत्पार्श्वार्हदीशस्य कथामाश्रित्य सोऽतनोत्। श्रीपार्श्वाभ्युदयं काव्यं तत्पादार्धवेष्टितम्॥ १३॥ सङ्केतदिवसे काव्यं वाचयित्वा स संसदि। तदुदन्तमुदीर्य्याशु कालिदास ममानयत्॥१४॥

भाषानुवाद—कालिदासके "मेघदूत" काव्यसे परिवेष्टित "पार्श्वाभ्युदय" नामक काव्य एक दोषरहित और दूसरे काव्योंके लिये कसौटीकी तरह रचा। जो चन्द्रमाके अस्तित्व काल तक रहे और महाराज अमोघवर्ष इस पृथ्वीका सदा शासन करें। ७०।

श्रीवीरसेन मुनिके चरण-कमलके भ्रमर श्रीमान् विनयसेन मुनिवर थे।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

भगवज्जिनसेनाचार्य्यके पारमार्थिक वंशके परिचयके लिये "पट्टावली" ही एक मुख्य कारण है सो इसी अङ्कमें प्रकाशित है। इसकी मनोयोग-पूर्वक पर्य्यालोचना करनेसे पाठकोंको बहुतसी बातें सहजहीमें मालूम हो जायंगी।

---

इन्होंके कहनेसे जिनसेन मुनीश्वरने "मेघदूत" को परिवेष्टितकर इस काव्यको बनाया। ७१।

श्रीजिन-धर्म्मका समुद्र मूलसङ्घाकाशका सूर्य्य आचार्य्य-प्रवर श्रीवीरसेन नामक आचार्य्य थे। १।

इनके शिष्य मुनिवर श्रीजिनसेनाचार्य्य थे। देखिये इनकी कीर्त्तिकौमुदी आजतक चतुर्दिशु फैली हुई है। २।

बङ्कापुरमें श्रीजिनेन्द्रचरण-कमलके भ्रमरके ऐसे भाग्यशाली महाराज अमोघवर्ष राजा थे। ३।

ये श्रीजिनसेन मुनिको अपना परम गुरु मानकर अपनी प्रजाको पुत्रकेसे पालते हुए और सच्चे धर्म्मका उद्योत करते हुए थे। ४।

कालिदास नामक कोई कवि "मेघदूत" नामक एक काव्य बनाकर प्रायः सभी राजाको सुनाया करते थे। ५।

अभिमानोन्मत्त होकर श्रीमहाराज अमोघवर्षकी सभामें जाकर सब विद्वानोंको अवमानित करते हुए अपना काव्य (मेघदूत) महाराजको सुनाया। ६।

उस समय सहधर्म्मी विनयसेनके अनुरोधसे कालिदासके कविता-मदको चूर्ण करनेके लिये और सच्चे मार्गका प्रकाश करनेके लिये वैविद्याधीश्वर श्रीजिनसेन मुनीश्वरने १२० श्लोकोंको सुनतेके साथ अर्थानुसार पद्योंका संग्रह कर राजाकी सभामें हंसी उड़ाते हुए कहा कि पुरानी कृतिके चुरानेसे यह काव्य सुन्दर हुआ है। ऐसा सुन रुष्ट होकर कालिदासने कहा कि यदि पुरानी कविता है तो सुनावो। मुनिवर जिनसेनस्वामीने उत्तर दिया कि मेरी कुटी यहांसे बहुत दूर है इसलिये आठ दिनके भीतर ही भीतर लाकर सुना दूंगा। इसपर सभाके सभासदोंने कहा कि ऐसा ही हो। पीछे श्री-पार्श्व भगवान्‌का चरित्र लेकर मेघदूतके श्लोकोंका प्रत्येक चरण देकर "पार्श्वाभ्युदय" नामक काव्य बनाया और सङ्केत-तिथिको उन्होंने राज-सभामें अपना काव्य बांच सुनाया तथा इसका पूर्ण सच्चा वृत्तान्त कालिदाससे कह दिया। इस विद्वत्ताको देखकर कालिदासको जिनसेनस्वामीका कहना मानना पड़ा। ७।८।९।१०।११।१२।१३।१४।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

यह पट्टावली दक्षिण देशके शास्त्रभण्डारमें एक अत्यन्त प्राचीन ग्रन्थमें बड़े परिश्रमसे मिली है। इसमें जो आचार्य्योंके नाम मिलते हैं उनमेंसे बहुत आदिपुराणके मंगलाचरण तथा उत्तरपुराणकी प्रशस्तिमें मिलते हैं।

श्री १००८ महावीरस्वामीके मोक्ष सिधारनेके कुछ दिनोंके बाद दिगम्बर सम्प्रदायमें चार सङ्घ स्थापित हुए। अर्थात् नन्दि, देव, सेन और सिंह ये चार विभाग जैन सम्प्रदायमें हुए। हमारे भगवज्जिनसेन और गुणभद्र-स्वामीने सेनसङ्घमें ही दीक्षा ग्रहण की थी। अन्यत्र प्रकाशित पट्टावलीसे पाठकोंको विदित हो जायगा कि हमारे परम पूज्य न्याय-विद्या-शिरोमणि श्री १०८ समन्तभद्रस्वामीने भी इसी सम्प्रदाय ( सेनसङ्घ ) को सुशोभित किया था। और श्रीजिनसेनस्वामीके गुरु श्रीवीरसेन स्वामी श्रीसमन्तस्वामीके शिष्यके शिष्य थे। अर्थात् समन्तभद्रके शिष्य शिवकोटि, शिवकोटिके वीरसेन, इनके जिनसेन और जिनसेनके गुणभद्र थे। "विकान्तकौरवीय" (१) नाटकमें हस्तिमल्ल कविने भी इनकी गुरु-परम्परा अपने ग्रन्थकी प्रशस्तिमें ऐसी ही दी है। अस्तु इस पट्टावलीमें कुछ सन्देह नहीं रहता किन्तु श्रीजिनस्वामीने आदिपुराणके मंगलाचरणमें "श्रीजयसेन स्वामी" को गुरु रूपसे नमस्कार किया है इससे जान पड़ता है कि इनके दो गुरु थे। इसके सिवा इन्होंने सेन-सङ्घके तथा अन्यान्य सङ्घके मुनियोंको भी नमस्कार किया है। आपने मंगलाचर-

१—वि० कौ० ना० की प्रशस्ति—

तत्वार्थसूत्रव्याख्यानं गन्धहस्तिप्रसादतः।
स्वामी समन्तभद्रोऽभूद्देवागम-निदर्शकः॥
अवटुतटमिति झटिति स्फुटपटुवाचाटधूर्जटेर्जिह्वा।
वादिनि समन्तभद्रे स्थितवति का कथान्येषाम्॥
शिष्यौ तदीयौ शिवकोटिनामा शिवायनः शास्त्रविदां वरीष्ठौ
कृत्स्नश्रुतश्रीगुरु-पाद-मूले ह्यधीतिमन्तौ भवतः कृतार्थौ।
तदन्वये विदुषां वरिष्ठः स्याद्वाद-निष्ठः सकलागमज्ञः
श्रीवीरसेनोजनि तार्किकश्रीः प्रध्वस्तरागादिसमस्तदोषः॥
यस्य वाचां प्रसादेन ह्यमेयं भुवनत्रयम्।
आसीदष्टांगनैमित्तज्ञानरूपं विदां वरम्॥
तच्छिष्यप्रवरो जातो जिनसेनमुनीश्वरः।
यद्वाङ्मयं पुरोरासीत् पुराणं प्रथमं भुवि॥

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

णमें बहुतसे प्राचीन पुराणकारोंका भी बड़े आदरके साथ उल्लेख किया है इससे स्पष्टतया निश्चय होता है कि आपके पूर्व भी अनेक पुराणकार थे। "चन्द्रोदय" के रचयिता श्रीप्रभाचन्द्र कविको आपने बड़ी पूज्यश्रद्धा भरी स्तुति की है और इनकी बड़ी गौरवता दर्शायी है इससे मालूम होता है कि "चन्द्रोदय" काव्य उस समय सर्वश्रेष्ठ माना जाता था। श्री आदिपुराणमें जिन जिन आचार्योंकी स्तुति की गयी है उनमें श्रीसिद्धसेन (*) समन्तभद्र, यशोभद्र, शिवकोटि और वीरसेन तो सेनसङ्घके हैं और शेष आचार्य्य अन्यान्य सङ्घोंके हैं। लोग कहा करते हैं कि वीरसेन और जिनसेनके बीचमें पद्मनन्दीने आचार्य्यपद सुशोभित किया था। परन्तु यह बात एकदम निर्मूल मालूम होती है क्योंकि न तो पट्टावली ही में आपका नाम आया और न मंगलाचरण प्रशस्तिही में जिनसेन स्वामीने इनका कहीं उल्लेख किया है। दूसरी बात यह है कि सेनसंघके आचार्योंके नाम

---

तदीयप्रियशिष्योऽभूत् गुणभद्र-मुनीश्वरः।
शलाका पुरुषा यस्य सूक्तिभि र्भूषिताः सदा॥
गुणभद्रगुरोस्तस्य महात्म्यं केन वर्ण्यते।
यस्य वाक्सुधया भूमावभिषिक्ताः मुनीश्वराः॥

भाषानुवाद—तत्वार्थ सूत्रकी महाटीका जो गन्धहस्ती महाभाष्य है इसकी रचनाके आदिमें "देवागमस्तोत्र" के निदर्शक श्रीसमन्तभद्र स्वामी हुए।

इनके दो शिष्य शिवकोटी और शिवायन अच्छे विद्वान् थे। इन दोनोंने अपने गुरुके निकट सब श्रुत पढ़कर कृतार्थता पायी।

इनके शिष्य सप्तभङ्गी वाणीमें निष्ठा रखनेवाले, सकल शास्त्रके वेत्ता, वीतराग, और नैयायिकोंके भूषण श्रीवीरसेनाचार्य्य हुए।

इनके उपदेशके प्रसादसे तीनों लोक अपरिमित ज्योतिष-शास्त्रके ज्ञानसे परिपूर्ण थे।

इन्हीके शिष्य प्रवीण श्रीजिनसेनाचार्य्य हुए। जिनका आदर्शरूप पुराण (महापुराण) आज संसारमें प्रचलित है।

और इनके प्रिय शिष्य श्रीगुणभद्राचार्य्य हुए। जिनने तिरसठ शलाका पुरुषोंका चरित्र बड़े विशदतासे वर्णन किया है।

गुणभद्र गुरुका माहात्म्य कौन नहीं वर्णन कर सकता क्योंकि इनकी वाक्सुधासे सभी मुनीश्वर अभिषिक्त हुए।

---

(*)—सेनसंघकी पट्टावली १६ से १९ तक देखो।



Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

'सेन' तथा 'भद्र' उपाधिसे अलङ्कृत रहते हैं। यह बात पाठकोंको पट्टावलीसे मालूम हो जायगी।

श्री हरिवंशपुराणके कर्त्ता भी एक जिनसेन हो गये हैं। कई विद्वानोंकी राय है और जैन-समाजमें भी प्रायः यह बात प्रचलित है कि 'आदिपुराण' और 'हरिवंशपुराण', के कर्त्ता एकही जिनसेन हैं। परन्तु यह बात प्रमाण-संगत नहीं मालूम होती क्योंकि प्रथम तो हरिवंशपुराणमें जो पट्टावली दी गयी है उसका कोई नाम आदिपुराणके मंगलाचरणमें जो आचार्यों की लिखित नामावली है उससे नहीं मिलता। दूसरा यह कि हरिवंशपुराणके कर्त्ता जिनसेन स्वामीने अपने पुराण (हरिवंश)के मंगलाचरणमें स्पष्टतया जिनसेन स्वामीको बड़े पूज्य-भावसे नमस्कार किया है। और कदाचित् भ्रम न रह जाय इसलिये इनके पूर्व श्रीवीरसेन स्वामीकी स्तुति कर इस बातको और दृढ़ कर दिया है कि यह वीरसेनके शिष्य जिनसेन जुदे हो हैं। और आप अपना परिचय देते समय कहते हैं कि "सद्गुरु जयसेन कर्म प्रकृतिश्रुतके पारगामी, प्रसिद्ध वैयाकरण और महापण्डित इनके शिष्य अमितसेन पवित्र पुन्नाटगणके अग्रणी सौ वर्षसे अधिक अवस्थावाले और पण्डितोंमें मुख्य इनके बड़े भाई

---

२—हरि० पु० का मंगलाचरण—

जितात्मपरलोकस्य कवीनां चक्रवर्त्तिनः।
वीरसेनगुरोः कीर्त्तिरकलङ्का बभासते ॥ ३९ ॥
यामिताऽभ्युदये यस्य जिनेन्द्रगुणसंस्तुता।
स्वामिनो जिनसेनस्य कीर्त्तिः संकीर्त्तयत्यसौ ॥ ४० ॥
वर्द्धमानपुराणोद्यदादित्योक्तिगभस्तयः।
प्रस्फुरन्ति गिरीशान्ता स्फुटस्फटिक-भित्तिषु ॥ ४१ ॥

भाषानुवादः—

आत्मा और परजन्मको सर्वोत्कृष्टताको पहुंचाये हुए, कवियोंमें चक्रवर्त्ती श्रीवीरसेन गुरुकी अकलङ्क कीर्त्ति प्रदीप्त हो रही है। अभ्युदयावस्थामें वीरसेन स्वामीकी कीर्त्ति जिनेन्द्रगुणोंसे परिचित है यह बात तो श्रीजिनसेन स्वामीकी कीर्त्ति ही कह रही है। श्रीवर्द्धमान पुराणरूप प्रकाशमान सूर्यकी उक्तिरूप किरणें बड़े बड़े पर्वतोंकी अन्तर्वर्त्तिनी स्वच्छ स्फटिक भीत्तियोंमें जाज्वल्यमान हो रही हैं।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कीर्त्तिसेनके मुख्य शिष्य श्रीनेमिनाथ स्वामीके भक्त जिनसेनने प्राचीन ग्रन्थोंके अनुसार इस हरिवंशपुराणकी रचना की"। हमारे पाठकोंको इन बातोंसे स्पष्ट-रूपसे विदित हो जायगा कि आदिपुराण और हरिवंशपुराणके कर्त्ता एक नहीं किन्तु भिन्न हैं। ऐसे ऐसे प्रबल प्रमाण रहते भी न जाने क्यों हमारे पिटर्सन और भण्डारकर ऐसे बहुदर्शी विद्वानोंने दोनों जिनसेनको एक लिख डाला है। हरिवंशपुराणके रचयिता जिनसेनने ग्रन्थनिर्माणका समय शक सम्वत् ७०५ लिखा है इससे यही मालूम होता है कि दोनों जिनसेन सम-कालीन थे न कि एकही थे। हरिवंशपुराणके जिनसेनने आपकी स्तुति करते समय आपको 'स्वामी' उपाधिसे समलङ्कृत किया है और बड़े गौरवके साथ स्तुति की है। इससे विदित होता है कि उस समय हमारे चरित्रनायक जिन-सेनस्वामी एक प्रसिद्ध आचार्य्य तथा कवि होगये थे। क्योंकि स्वामीपद आचार्य्य-पदका संसूचक है।

यद्यपि इनका जन्मस्थान आज तक निश्चित नहीं हो सका किन्तु इतना हम अवश्य कहेंगे कि इन्होंने मान्यखेत्र (मानखेट) की भूमि अपनी स्थिति-से पावनमय कर दी थी। आज कल यह स्थान निजाम वादशाहके आधीन हो कर मलखेड़ नामसे प्रसिद्ध है। राष्ट्रकूटवंशीय (१) जैन महाराज अमोघवर्षकी मुख्य राजधानी यहीं थी। और यहां बराबर आचार्योंका रहना सप्रमाण सिद्ध होता है। इन्होंने प्रायः अपने सभी ग्रन्थोंमें महाराज अमोघवर्षकी चर्चा की है इसलिये वहीं इनकी आचार्य्य अवस्थाका बहुतसा भाग अतिवाहित हुआ होगा।

श्री १०८ वीरसेनाचार्य्यने श्रीजयधवल सिद्धान्त-ग्रन्थकी टीका करनेका प्रण किया और उस टीकाके बीस ही हजार श्लोक लिखने पाये थे कि अचानक काल-ने आक्रमण किया और यह टीका अधूरी छोड़कर आप स्वर्गधामको सिधारे उनके सुयोग्य शिष्य हमारे चरित्रनायक श्रीजिनसेन स्वामीको अपने गुरुकी अधूरी कीर्त्ति असह्यसी हुई और उन्होंने ४० हजार श्लोक बनाकर शाका सम्वत् ७५८ में ६० हजार श्लोकोंमें इस महान् ग्रन्थकी टीकाकी पूर्त्ति की। इसके बाद आपने श्रीआदिपुराणका लिखना प्रारम्भ किया किन्तु संस्कृत-साहित्यके अभाग्य-वश इसकी समाप्ति नहीं कर सकें। जब आपने 'आदिपुराण' लिखते लिखते समाधि-मरण-सहित स्वर्गधामका प्रयाण किया उससमय आपकी अवस्था लगभग १०० वर्ष अथवा एक सौ दो तीन वर्ष की होगी। क्योंकि 'हरिवंशपुराण' के

नोट—१ राष्ट्रकूटवंशका इतिहास इसी अङ्कमें अन्यत्र प्रकाशित है।

Ac. Gunratnasuri MS  Jin Gun Aradhak Trust

रचयिता जिनसेनने जो शक सम्वत् (१) ७०५ में आपको आचार्य्य-रूपसे नमस्कार किया है और वट्टकेर स्वामीने अपने "मूलाचार" सैद्धान्तिक-ग्रन्थमें साफ साफ लिखा है कि युवावस्थामें अचार्य्य पट्टाधिकारी कोई नहीं होता इस लिये यह बात ससिद्धान्त सिद्ध होती है कि उस समय आपकी अवस्था कमसे कम४० या ४२ वर्षकी होगी। जयधवलकी प्रशस्ति (२) में इसकी समाप्तिका समय स्वयं इन्होंने शक सम्वत् ७५९ लिखा है। तत्पश्चात् आपने श्रीआदिपुराणका लिखना प्रारम्भ किया होगा। इसके बयालिस अध्यायतक आपने लिखा है। सम्भव है कि इतने अध्याय इन्होंने छः वर्षमें लिखे होंगे। तो स्वामीजीकी अवस्था १०२ वर्षकी होती हैं नहीं तो ४ वर्ष माननेसे १०० वर्षकी अवस्था इनकी होनी सर्वथा सम्भव है। अर्थात् शक सम्वत् ७६० से ७६३ अथवा ७६५ तक आपका अस्तित्व भारतवर्षमें था। इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है। शक सम्वत् ७०५ से ७५९ तक ५४ वर्ष हुए। आदिपुराणकी रचनामें छः वर्ष लगे तो ६० वर्ष हुए। हरिवंश

---

१—शाकेष्वब्दशतेषु सप्तसु दिशं पञ्चोत्तरेषूत्तराम्
पातीन्द्रायुधनाम्नि कृष्णनृपजे श्रीवल्लभे दक्षिणाम्।
पूर्वां श्रीमदवन्तिभूभृति नृपे वत्साधिराजेऽपराम्
सौराणामधिमण्डलं जययुते वीरे वराहेऽवति॥

भाषा भावार्थः—

शाका सम्वत् ७०५ में जब कि उत्तर दिशाका श्रीइन्द्रायुध नामक राजा कृष्ण शासन कर रहे थे, श्रीवल्लभ राजा दक्षिण दिशाका पालन कर रहे थे, अवन्ती राजा पूर्वप्रान्तमें आधिपत्य कर रहे थे, वत्साधिराज पश्चिम दिशाकी रक्षा कर रहे थे और जयशाली वीरवराह नामक राजा जब सौर देशका मण्डल शासित कर रहे थे तब श्रीजिनसेनाचार्य्यने इस पुराण ( हरिवंश ) की समाप्ति की।

२—जयध० की प्रशस्ति—इति श्रीवीरसेनीया टीका सूत्रार्थ-दर्शिनी। मटग्रामपुरे श्रीमद्गुर्जरार्य्यानुपालिते॥ १॥ फाल्गुने मासि पूर्वाह्णे दशम्यां शुक्लपक्षके। प्रवर्द्धमान-पूजायां नन्दीश्वर-महोत्सवे॥ २॥ अमोघवर्षराजेन्द्रप्राज्यराज्यगुणोदया। निष्ठितप्रचयं याया दाकल्पान्तमनल्पिका॥ ३॥ षष्ठिरेव सहस्राणि ग्रन्थानां परिमाणतः। श्लोकेनानुष्टुभेनात्र निर्दिष्टान्यनुपूर्वशः॥ ४॥ विभक्तिः प्रथमस्कन्धो द्वितीये संक्रमोदयः। उपयोगश्च शेषस्तु तृतीयस्कन्ध-

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पुराणकी रचनाके पूर्व इनकी अवस्था ४२ वर्षके मिलानेसे १०२ वर्षकी होती है। अर्थात् ( ४२+५४+६=१०२ ) यानि आपका जन्म शक सम्वत् ६६३ के लगभग हुआ होगा और आपका स्वर्गारोहण ७६५ में हुआ। इसमें एक दो वर्षका हेरफेर हो जानेकी सम्भावना हो सकती है। विशेष भिन्नताका हमें प्रमाण नहीं मिलता।

ये दोनों पुराण ( महापुराण ) महाराज अमोघवर्ष (१) और अकालवर्षके समयमें लिखे गये हैं।

---

दृश्यते ॥ ५ ॥ एकोनषष्ठिसमधिकसप्तशताब्देषु शकनरेन्द्रस्य। समतीतेषु समाप्ता जयधवला प्राभृतव्याख्या ॥ ६ ॥ गाथासूत्राणि सूत्राणि चूर्णिसूत्रं तु वार्त्तिकम्। टीका श्रीवीरसेनीयाऽशेषापद्धति-पञ्जिका ॥ ७ ॥ श्रीवीरप्रभुभाषितार्थघटना निर्लोड़ितान्यागम-न्याया श्रीजिनसेनसन्मुनिवरै रादेशितार्थस्थितिः। टीका श्रीजयचिह्नितोरुधवला सूत्रार्थसम्बोधिनी, स्थेयादारविचन्द्रमुज्ज्वलतमा श्रीपाल-सम्पादिता ॥ ७ ॥

भाषानुवाद—श्रीगुर्जर आर्य्यपुरुषोंसे सुरचित मटग्रामपुरमें फाल्गुण शुक्ल दशमीके पूर्वाह्नमें जबकि अष्टाह्निका-पर्व नन्दीश्वर महोत्सवमें वर्द्धमान स्वामीकी पूजा होरही थी उसी समय सूत्रार्थ प्रतिपादन करनेवाली, महाराज अमोघवर्षके प्रभूत राज्य गुणोदयका कारणभूत, बड़ी वीरसेनरचित ( प्रारम्भित ) श्रीजयधवल सिद्धान्तशास्त्रकी प्राभृतव्याख्या टीका जो साठ हजार अनुष्टुप श्लोकोंमें सूत्रक्रमानुसार है वह शक सम्वत् ७५९ में समाप्त हुई। इसमें तीन स्कन्ध हैं— (१) विभक्ति ( कर्म्मका विभाग ) (२) संक्रमोदय ( कर्म्मोंका संक्रम और उदय ) (३) उपयोग ( दर्शनोपयोग और ज्ञानोपयोगका वर्णन है ) इसमें गाथारूपसे सूत्र हैं, चूर्णिकासूत्र-रूप वार्त्तिक है। श्रीजिनस्वामीने श्रीवीरसेनकी टीका होका अवशेष भाग पञ्जिका नामकी टीका करके पूर्ण किया। यानि श्रीवीरसेनकी अर्थ-घटनापर अन्य आगम और न्यायको मथनेवाली टीका मुनिवर जिनसेनने की। ऐसी सूत्रार्थ जतानेवाली श्रीपालसे सम्पादित यह उज्ज्वल टीका सूर्य्य और चन्द्रमाकी अवधि तक वर्त्तमान रहे तथा कल्पों तक परिवर्द्धित हुआ करे।

---

१ नोट—आगे अमोघवर्षका संक्षिप्त इतिहास दिया गया है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

## दोनों आचार्य्यों के ग्रंथोंकी नामावली।

**श्रीजिनसेनाचार्य्य।**

१ पार्श्वाभ्युदय काव्य।

२ जयधवलकी टीका।

३ वर्द्धमान पुराण।

४ आदि पुराण।

**श्रीगुणभद्राचार्य्य। (१)**

१ उत्तरपुराण।

२ आत्मानुशासन।

---

१ नोट—इनके बनाये 'जिनदत्तचरित' तथा 'जीवन्धरचरित' भी हैं किन्तु ये आदिपुराण तथा उत्तर पुराणही के अन्तर्गत हैं इसलिये इनकी गणना अलग नहीं की गयी।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

## श्रुतस्कन्ध यन्त्रका चित्र।



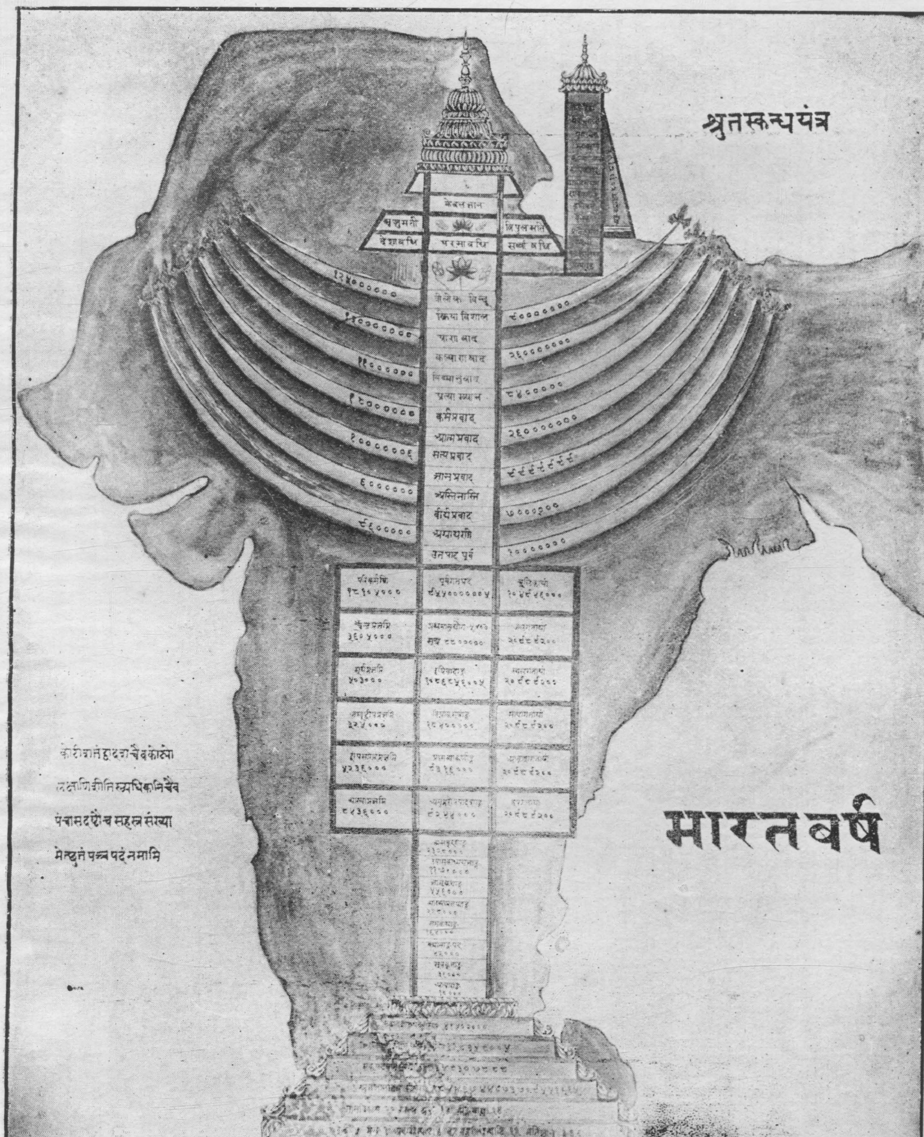


२

या हरा यह यन्त्र-द्रुम पठनादि पाठन कर्म्मसे।
थी सुवर्णसमा ये भारत-भूमि भी बहु-धर्म्मसे॥

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

# श्रुतस्कन्ध-यन्त्रका चित्र-परिचय।

( पद्य )

( १ )

पाठको ! इस यन्त्रका विवरण सुनाता हूं सुनो।
जैनपूर्वाचार्य्यकी प्रतिभा दिखाता हूं सुनो॥

( २ )

है श्रुतस्कन्धोंकी शाखाओंके विषयोंसे भरा।
और सम्यग्ज्ञान सत्पुष्पोंकी गन्धोंसे भरा॥

( ३ )

अङ्ग द्वादश अङ्ग पदका है परिक्रम भी वही।
पूर्वगत चौदह तथा है चूलिका भी पांच ही॥

( ४ )

है प्रकीर्णक अङ्ग बाह्यक सूत्रमें चौदह यहां।
एक शत अठ कोटि लक्ष तिरासिकी संख्या जहां॥

( ५ )

अष्ट पंचाशत सहस्र व पांच पद भी अङ्ग का।
है सभी व्यौरा यही इस यन्त्रके सर्वाङ्ग का॥

( ६ )

था हरा यह यन्त्रद्रुम पठनादि पाठन कर्म्मसे।
थी सुवर्ण-समा ये भारतभूमि भी बहु धर्म्मसे॥

( ७ )

आज पंचम-काल-वश सब लोग अन्धे हो चले।
पूर्वजोंकी कीर्त्तियोंको आपसे ही खो चले॥

( ८ )

सूखकर श्रुतयन्त्रद्रुम सबको चिताता है यही।
गर हमें रक्षा सुधासे सींच तो होजं वही॥

( ९ )

है अभी जिनधर्म्म का अस्तित्व इमपर विज्ञवर!
अन्य साहित्योंसे भी समता दिखाता विज्ञवर!॥

( १० )

बस यही कहना हमारा है सुनो तुम ध्यानसे।
अब न चेतोगी तो पछतावोगी तुम अज्ञानसे॥

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

# श्रुतस्कन्धयन्त्रके चित्रका परिचय।

प्रिय सुहृत्पाठको! आज हम आपका ध्यान २४३८ वर्ष यानि २५ शताब्दिके पूर्वकी ओर आकर्षित करना चाहते हैं। जब श्री १००८ अन्तिम तीर्थङ्कर श्रीवर्द्ध-मान-स्वामी इस भारतभूमिको अपने उपदेश-द्वारा पवित्र कर रहे थे। श्रावण मासकी प्रतिपदाको सूर्य्यों-दयके समय रौद्र मुहूर्त्तमें जब कि चन्द्रमा अभि-जित नक्षत्र पर था, भगवान् महावीर-स्वामीने चिरदुःखित सांसारिक प्राणियोंके संसार-समुद्रसे पार होनेमें कारणभूत यथार्थ मोक्ष-मार्गका उपदेश दिया। श्रीइन्द्रभूति गौतम गणधरने भगवान्की इस हितकारिणी वाणीको उसी दिन सायंकालमें अङ्ग और पूर्वकी युगपत् ( एक साथ ) रचना की। अर्थात् भगान्के कहे हुए तत्वोंको गणधर देवने ग्यारह अङ्ग और चौदह पूर्व रूपमें विभक्त कर दिया। अर्थात् अनेक भिन्न भिन्न विषयोंको इन ग्यारह अङ्ग, चौदह पूर्वोंके अन्तर्गत सन्निवेशित किया और अपने सहधर्म्मी सुधर्म्मा स्वामीको पढ़ाया, सुधर्म्मा स्वामीने जंबू स्वामीको और जंबू स्वामीने और अनेक ऋषि-मुनियोंको इस द्वादशाङ्ग-रचना-श्रुतको पढ़ाया। इसी प्रकार उस समयमें इसका प्रचार बहुलतासे होता रहा।

हमारे उपर्युक्त तीनों ऋषिराजोंने अर्थात् इन्द्रभूति, सुधर्म्मा और जंबू स्वामीने परम केवल विभूति ( सर्वज्ञता ) को पाया। उस समय तक इस भारतवर्षमें सर्वज्ञताकी अखण्ड ज्योति चारो तरफ देदीप्यमान होरही थी। इस वृत्तान्तके हुए आज २४३८ वर्ष हुए।

मह यन्त्र उसी द्वादशाङ्ग वाणीका है। इसमें ११ अङ्ग १४ पूर्व ५ प्रकी-र्णक और १४ अङ्ग वाह्य वाणीका वर्णन है। यह यन्त्र श्रवण वेलगुलाका बना हुआ अष्टधातुका "भवन" की वेदीपर विराजमान है। इसमें स्पष्ट तरहसे श्लोकोंकी संख्या अङ्कित है। सबसे नीचे प्रथम कोष्टमें ( ३३६ भेद-मतिज्ञानके हैं ) दूसरे कोष्टमें ( ज्ञानविकला २० ग्रन्थ अङ्ग १२ अङ्गवाह्य १४ हैं ) तीसरे कोष्टमें ( श्रुतज्ञानकी अक्षर-संख्या १८४४६७४४० ७३७०९५५१६-१५ हैं ) इसके वाद चौथे कोष्टमें ( एक पद वर्ण-संख्या १६३४८३०७८८८ है ) पांचवें कोष्टमें ( द्वादशाङ्ग नाम पद-संख्या ११२८३५८००५ है ) छठवें कोष्टमें

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

( एकादशाङ्ग पदसंख्या ४१५०२००० है ) इसके बाद श्लोकोंकी संख्याके साथ साथ ११ अङ्ग हैं। दहिनी ओरके कोष्टमें श्लोक-संख्याके साथ ५ प्रकीर्णक हैं। बाईं तरफके कोष्टमें श्लोकसंख्या-सहित ५ चूलिकाएं हैं। जहांसे श्रुत-स्कन्धकी शाखायें निकली हैं वहां चौदह पूर्व श्लोक-संख्याके साथ हैं। सबसे ऊपर ध्वज-दण्डके आकारमें अङ्गवाह्य १४ हैं और उसकी ध्वजामें अक्षर-संख्या है।

कोटीशतं द्वादशचैव कोव्यो, लक्षाण्यशीतिस्त्र्यधिकानि चैव।
पञ्चाशदष्टौ च सहस्रसंख्या मेतच्छ्रुतं पञ्चपदं नमामि॥

इस प्रकार ऐहिक तथा आमुष्मिक समस्त शास्त्रीय विषयपूर्ण इस ग्यारह अङ्ग चौदह पूर्व-रूप श्रुतका पठन पाठन हमारे अन्तिम श्रुतकेवली श्री १००८ भद्रबाहु स्वामीकी स्थिति तक प्रचलित रहा। जिनका समय महावीर स्वामीके १६२ बर्ष बाद निश्चित होता है। इनके समयतक यह भारतवर्ष उस श्रुतज्ञानकी अमृतमय उपदेश-धारासे निरन्तर परिप्लावित रहा। इसके पश्चात् सुवर्णमय-धनधान्य-परिपूरित तथा चिरविद्या-रञ्जित इस भारतवर्षने अपनी भावी अव-नतिकी ओर पदार्पण किया। सहसा इसके विद्या-प्रभाकरकी किरणोंमें मन्द-ता पड़ गयी और भारतके भाग्य-ललाटपर भावी दौर्भाग्यकी रेखा चित्रित होगयी। क्रमश: पतनोन्मुख अङ्ग-ज्ञानकी प्रवृत्ति वीर-निर्वाण सम्वत् ६८३ बर्ष तक कुछ कुछ रही। इसके बाद कालदोषसे बची बचायी प्रवृत्ति भी लुप्तप्राया होगयी। कुछ ही कालके बाद श्रीअर्हद्वलि मुनि अवतीर्ण हुए। इन्हींके समयमें मुनियोंके सङ्घकी स्थापना हुई। अर्थात् दिगम्बराम्नायधारी मुनियोंके चार विभाग हुए।

अर्हद्वली स्वामीके कुछही दिन बाद धरसेनाचार्य्य हुए। इन्हें अग्रायणी पूर्वके अन्तर्गत पञ्चम वस्तुके चतुर्थ महाकर्म्म प्राभृतका ज्ञान था। अर्थात् उपर्युक्त श्रुतज्ञानके एक अंशके आप ज्ञाता थे। वाह्य शकुनों द्वारा आपको जब यह मालूम होगया कि अब मेरी आयु थोड़ी रह गयी है और मेरा यह सामान्यशास्त्र-ज्ञान भी संसारका एकमात्र अवलम्ब होगा। अर्थात् इससे अधिक शास्त्र-ज्ञान आगे नहीं होगा। यदि इस बची बचायी विद्याकी रक्षा का प्रयत्न न किया जायगा तो सम्भव है कि इस ज्ञानका विच्छेद हो जाय। यह विचार उन्होंने इसकी रक्षा करनेके लिये पुष्पदन्त और भूतवलि दो मुनियोंको इस विद्या-ग्रहणके पात्र समझकर पढ़ाया तथा आप स्वर्गधामको



Ac. Gunratnasuri MS	Jin Gun Aradhak Trust

सिधारे। श्री १०८ भूतवलि स्वामीने देखा कि विद्याकी अवनति प्रतिदिन हो रही है और जो मौखिक ज्ञान है उसका भी रहना असम्भवसा जान पड़ता है, ऐसा विचारकर तथा मनुष्यकी स्मरणशक्तिका ह्रास देखकर इन्होंने "षट-खण्डागम" नामका ग्रन्थ रचकर लिपिवद्ध किया और ज्येष्ठ शुक्ल पञ्चमीके दिन बड़े समारोहके साथ चतुर्विध संघके साथ वेष्टनादि उपकरणोंके द्वारा उसकी पूजा की। जो कि आजतक वह तिथि जैन-समाजमें "श्रुत पञ्चमी" के नामसे प्रसिद्ध है और आजकल भी जैन-धर्म्मावलम्बी विज्ञ उक्त तिथिके दिन अपने अपने शास्त्रोंकी बड़ी विधिके साथ पूजा करते हैं। इसके बाद अनेक जैनाचार्य्य हुए जिन्होंने आवश्यकतानुसार अनेक विषयोंके असंख्य ग्रन्थ रच रचकर संस्कृत-साहित्य-भण्डारकी पूर्त्ति की। यद्यपि अनेक आपत्तियां आचुकी थीं तो भी जैन-धर्म्मका प्रभाव संसारपर कुछ कम नहीं था। इसके थोड़े ही दिनोंके बाद नवाङ्कुरित वौद्ध-धर्म्म तरुणावस्थाको प्राप्त होगया और अनेक राजा महाराज नवीनताकी छटासे मुग्ध हो जैन-धर्म्मको छोड़कर वौद्धधर्म्म अङ्गीकार करने लगे। परन्तु ऐसे समयमें भी अनेक आचार्य्योंका अस्तित्व था और उन्होंने बड़े प्रभावके साथ बड़ी बड़ी राजसभाओंमें जा जा कर निर्भीकतासे अन्यमतका खण्डन तथा अपने मतका मण्डन किया। इसीका प्रभाव है कि जैनधर्म्म अभीतक अपने उद्देश्योंकी घोषणा डंकेकी चोटसे सब जगह उद्घोषित कर रहा है। जिस समय वौद्धोंका प्रताप-सूर्य्य मध्याह्नावस्थापर था। जिस समय वौद्धाचार्य्य जैन-धर्म्मके शास्त्रोंको जला जलाकर और नदियोंमें डुबोकर इसको नष्ट भ्रष्ट कर रहे थे। मन्दिर और मूर्त्तियोंको तोड़ फोड़कर अपनी मूर्त्तियोंकी स्थापना कर रहे थे ठीक उसी समय जैनधर्म्मके पुनरुद्धारक प्रधान-रक्षक तथा न्याय-मार्तण्ड हमारे श्रीमदकलङ्कका अवतार हुआ। आपको विद्याध्ययन तथा धर्म्म-रक्षा करनेमें कितना कष्ट हुआ है इसका पूर्ण वृत्तान्त हम इनके जीवन-चरित्र लिखतीवार देंगे। इन्होंने काञ्ची देशके रत्न-सञ्चयपुर नगरके राज्य दरबारमें वौद्ध-धर्म्मके गुरु संघश्री और उनकी आराधिता तारादेवीके साथ छः महीनों तक अविरत शास्त्रार्थ कर उन्हें पराजित किया और राज्य-सभामें आपने सिंहनादके समान घोषणाकी कि यदि जैन-धर्म्मके विषयमें किसीको कुछ शङ्का हो अथवा कुछ बात करना चाहें तो मैं उपस्थित हूं। आप जैनधर्म्म-मण्डन और अन्यमतके खण्डनके अनेक ग्रन्थ रचकर इस जैनधर्म्मको एक दुर्भेद्य-दुर्गमें रक्षित कर गये। धीरे धीरे वौद्ध-धर्म्म-

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

रूपी सूर्य्य भी जब अस्ताचलको जा रहा था कि ठीक इसी बीचमें हिन्दूधर्म्मके नेता श्रीशङ्कराचार्य्य हुए। इन्होंने भी जैनधर्म्मकी अनेक मूर्त्तियां तथा ग्रन्थोंको बड़ी बड़ी नावोंमें भरकर समुद्रमें डुबो दिया तथा अनेक बड़े बड़े शास्त्र-भण्डारोंमें आग लगा दी कि जिससे जैनधर्म्मकी बड़ी भारी हानि हुई। किन्तु ऐसे दुर्दमनीय भयानक समयमें भी हमारे आचार्य्योंके उद्दीप्त प्रचण्ड तपोबल-से जैनधर्म्मकी जाग्रति बनी रही। इसके बादही मुसलमानोंके भी भाग्यो-दय का चिराग़ टिम टिमा उठा। इनके समयमें जैनधर्म्महो पर क्या बल्कि हिन्दू धर्म्मपर भी जिस निष्ठुरताके साथ कुठाराघात किया गया उसको लिखते हमारी लेखनी कांप उठती है। वर्षों तक मुगलराज-वाहिनीके सिपाहियोंकी रसोई हमारे धर्म्म-ग्रन्थोंसे ही बनती रही। इससे असंख्य अलभ्य, और अपरि-मित ग्रन्थ-भण्डारोंका अस्तित्वही संसारसे उठ गया तथा अगणित मन्दिर और मूर्त्तियाँ तोड़ी गयीं। अनेक जैनमन्दिरोंके स्थानमें मसज़ीदें बनायी गयीं। उसी समय फिरोजशाह तोग़लकने लगभग सम्वत् १४०३ में दिल्लीके साम्राज्य-सिंहासनाधिरूढ़ हो भारतवर्षकी भाग्यडोरको अपने हाथमें लिया। वह अपने राज्यशासन-कालमें भारतवर्षके सभी धर्म्मोंकी परीक्षा करने लगा। अन्यान्य धर्म्मोंके साथ साथ जैनियोंको भी अपने धर्म्मकी परीक्षा देनेकी आज्ञा मिली। परन्तु उस समय उत्तर भारतमें जैनियोंके गुरु अथवा विद्वान् न थे जो उनसे शास्त्रार्थ कर सकते इसलिये बादशाहसे छः महीनेका अवकाश माँग कर दुःखितहृदय जैनी गुरुको खोजमें दक्षिण देशको गये। भद्दिलपुर भूपालके नजदीक जो कि आजकल भेलसा नामसे प्रसिद्ध है वहीं सब लोग आये। वहींसे 'महासेन' नामके आचार्य्यको वहां लेगये। महासेन स्वामीने दिल्लीके बादशाहके दरबारमें आकर 'राधो' और 'चेतन' नामक विख्यात दो राजमान्य विद्वानोंको शास्त्रार्थ और मन्त्रवादमें पराजित कर वहाँ बड़े प्रभावके साथ जैनधर्म्मकी ध्वजा फहरायी। उस समयकी बादशाही सनदें (१) अभीतक कोल्हापुरके भण्डारमें हैं। उसी समयसे भट्टारकोंकी गद्दी वहां स्थापित हुई और ये लोग राजगुरु माने गये। इन लोगोंको बादशाहने वस्त्र धारण कराया और अनेक बादशाही खिल्लत छत्र चमरादि और पट्टस्थकी बत्तीस उपाधियां दे बड़े सम्मानके साथ इनका गौरव बढ़ाया। इस समयमें भी हमारे

नोट—(१) इस सनदके चित्रके साथ साथ इसका विशेष वृत्तान्त अगले किसी अङ्कमें देनेकी चेष्टा की जायगी।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आचार्य्योंने अनेक ग्रन्थ रचकर धर्म्म-रक्षा की। परन्तु इसके बाद रक्षा करनेमें जब आचार्य्योंको अत्यन्त कठिनाई जान पड़ने लगी तब उन्होंने इन धर्म्म-ग्रन्थोंकी रक्षा करनेहो धर्म्म-रक्षाका एक मात्र उपाय समझा और उन लोगोंने बड़े परिश्रमके साथ जहां जैनियोंका समूह था वहां उनके घरोंकी कोठरियोंमें और जहां भट्टारकोंका मठ था वहां तहखानोंमें रखकर सुरक्षित किया और लोगोंको यहां तक मना कर दिया कि किसीको इसकी ज़रासी भी सूचना न मिलने पावे नहीं तो यह भी बची बचायी धर्म्मिक तथा ऐतिहासिक सामग्रियां नष्ट हो जायँगी।

उपर्य्युक्त समयमें जब जैनधर्म्म-विद्वेषी अन्यधर्म्मावलम्बी राजा तथा विद्वानोंके कारण लाखों ग्रन्थका नाश हुआ तब हमारे महर्षियों ने तथा पूर्वपुरुषोंने धर्म्मकी हानि होती हुई देख अपनी जानपर खेलकर जैनधर्म्मको ग्रन्थरक्षण-द्वारा बचाया, किन्तु अब हमारी न्यायशीला गवर्नमेन्टके शासनकालमें तथा सबोंकी स्वाधीनधर्म्म-जाग्रतिके समयमें भी मूर्खतासे जैन-धर्म्मावलम्बी उसी परम्परा को निबाहते हुए यानि शास्त्रों को तहखानेमें सड़ाते हुए संसार हितैषिणी भावी धार्म्मिकउन्नति तथा पवित्र श्रीजिनवाणी माताके प्रचारका मार्ग रोक रहे हैं।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

शास्त्रोंके जीर्णपत्र-वृक्षका चित्र।



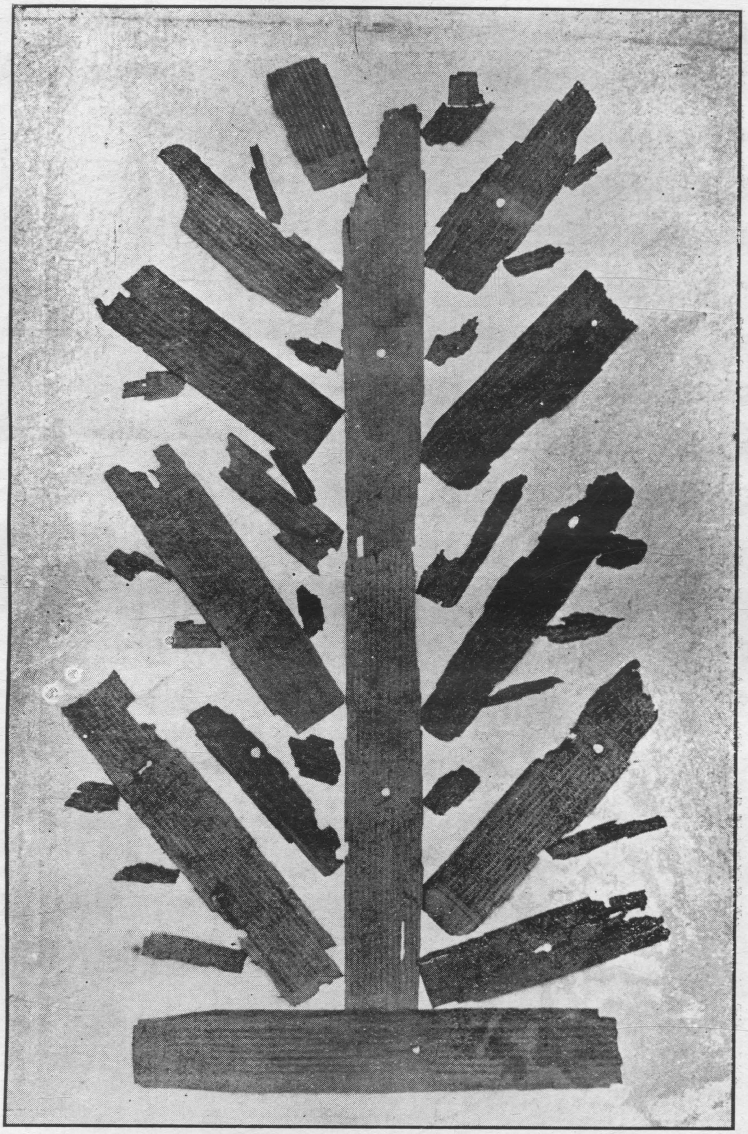

२

हा! वे ही शास्त्र-पर्ण प्रशिथिलित हुए और भी जीर्ण शीर्ण।
होते हैं देखके हा! ऋषि-मुनियोंके चित्त चिन्ता-विदीर्ण॥
लाखो ही ग्रन्थ होते जिनमतके यां नित्य कीटादिभक्ष्य।
क्या तूने हा! किया है निज-मनसे भी एतदुद्दिश्यलक्ष्य?

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

# शास्त्रोंके जीर्ण-पत्र-वृक्षका चित्र-परिचय ।

( स्रग्धरा )

( १ )

देखो है चित्र कैसा भविक-मन सदा देखके दुःख पूर्ण
होती ऐसी व्यवस्था अवुधजनोंकी और भी नाश तूर्ण ।
आचार्य्योंके जो सर्वस्व प्रतिपल रहे और धर्म्माभिमान
सत्कृत्योंके प्रणेता प्रकटितमहिमा उच्चताके निदान ॥

( २ )

हा! वेही शास्त्रपर्ण प्रशिथिलित हुए और भी जीर्ण शीर्ण
होते हैं देखके हा ! ऋषि-मुनियोंके चित्त चिन्ता-विदीर्ण ।
लाखो ही ग्रन्थ होते जिन मतके यां नित्य कीटादि-भक्ष्य
क्या तूने हा ! किया है निज मनसे भी एतदुद्दिश्य लक्ष्य ?

( ३ )

रक्षा हैं लोग करते वसन-अशनकी जो मिले नित्य नव्य
होगी जन्मान्तरोंमें नहीं नयन-गता वस्तु खोते भी भव्य ।
ऐसी ही जो विरक्ति प्रबल रहेगी शास्त्रसे जैनियोंकी
होवेगी धर्म्म-लुप्ति प्रकटित होगी नीचता जैनियोंकी ॥

( ४ )

होती शास्त्रीय-रक्षा जिन सदनोंमें और सत्कीर्त्ति-रक्षा
सिद्धान्तोंकी समीक्षा जिन-मतकी हो उच्च-शिक्षा सुरक्षा ।
होनी ही चाहिये वाँ सुवुधजनोंकी कार्य्य-कर्त्तव्य-निष्ठा
होती है अज्ञ लोगोंकी रुचि कभी नहीं और सत्कर्म-निष्ठा ॥

( ५ )

ऐसी शास्त्रीय बातें प्रविदित करके चित्त चोरी करोगी
तो सारा दोष तेरे शिर मढ़ता हो जायगा क्या करोगी ?
जो तेरी पूर्ण प्रीति निज मतसे हो छोड़ आलस्य शीघ्र
हो तू उद्धार-कर्त्ता सतत तव करें श्रेय अर्हन्त शीघ्र ॥

Ac. Gunratnasuri MS  Jin Gun Aradhak Trust

# शास्त्रोंके जीर्ण-पत्र-चित्रका पूर्ण परिचय।

विज्ञ पाठक! हम लोगोंको इस जीर्णग्रन्थके पत्रद्वयका चित्र देखकर अपनी असावधानता तथा धर्म्मविमुखताका चित्र अपने मस्तिष्कमें सहसा खिंच जाता है। हाय! हमारे पूर्व ऋषि महर्षियोंने जिन-ग्रन्थोंको अपने सारे जीवनका लक्ष्य समझ कर तथा अनेक कष्टोंको सहकर रचा था वे आज लाखों हम लोगों के हाथसे नष्ट हो रहे हैं। बड़े शोकके साथ कहना पड़ता है कि जिस जैन-साहित्यकी सर्व-श्रेष्ठताकी प्रसिद्धि सर्वत्र व्याप्त थी और जिन सूक्ष्मदर्शी आचार्य्योंके विचारपूर्ण तथा सार-गर्भित विषयोंको देखकर सब किसीको आश्चर्य्यित होना पड़ता था सो आज उसी जैन-साहित्यमें अनेक विषयोंकी कमी दिखलायी जा रही है? ठीक है जब हमलोगोंने अपने पूर्वाचार्य्योंकी कीर्त्तियोंको तथा जीवन-सर्वस्वधनको कीटों और चूहोंको आहार-दान देना ही पसन्द किया है तो भला शास्त्रकी कमीकी बात कौन कहे? भाइयो! यदि ऐसी ही लापरवाही आप लोगोंने कुछ दिनोंतक जारी रक्खी तो सम्भव है कि थोड़े ही दिनोंमें हमलोग जैन-धर्म्मसे हाथ धो बैठें। विशेषतर तो हमें व्यवहार-व्यस्त धनिक भाइयों ही को चिताना है कि आप सब किसके भरोसे अपने सर्वमान्य-ऋषि-प्रणीत शास्त्रोंकी रक्षासे मुंह मोड़े बैठे हैं। हाय! शास्त्रोंकी जीर्ण-शीर्ण अवस्थाका यह चित्र आप लोगोंके कर्ण-कुहरपर सचेत होनेके लिये ज़ोर शोरसे नक्कारा पीट रहा है पर आप लोग न जाने किस गहरी नींदमें खर्राटा मार रहे हैं कि ज़रासी भी उसकी आवाज सुनते ही नहीं।

प्रिय पाठक भाइयो! यदि हमलोग अबसे शास्त्रोंकी रक्षा करने लगें तथा रक्षा करनेवाली संस्थाओंसे सहानुभूति रक्खें तो अब भी हम लोग इन बची बचायी प्राचीन सामग्रियोंसे बहुत कुछ अपने धर्म्मको बना सकेंगे।

हमे लिखते हृदय विदीर्ण होता है कि एक जैनशास्त्र-भण्डार जिसका अभी हम नाम प्रकाशित नहीं करना चाहते, कुछ ही दिन पहले जिसमें भिन्न भिन्न विषयके लाख ग्रन्थों की सूची मौजूद थी किन्तु हाय! आज उनकी सूची दस हजार ग्रन्थकी है। भाइयो! हमारे जैन ग्रन्थ-रक्षकोंने अपनी उदारता तथा बहु-वदान्यतासे चूहों तथा दीमकोंके आहार-दानके लिये जैन-साहित्य की जगमगाती ज्योति, आचार्य्यों तथा महर्षियोंका चिर-रचित-प्रतिभा-विकाश, और पण्डित-मण्डलीके कण्ठ-भूषण नब्बे हजार ग्रंथोंको भी कुछ

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

श्रीजिनवाणीकी वर्त्तमान हीनावस्थाका चित्र।

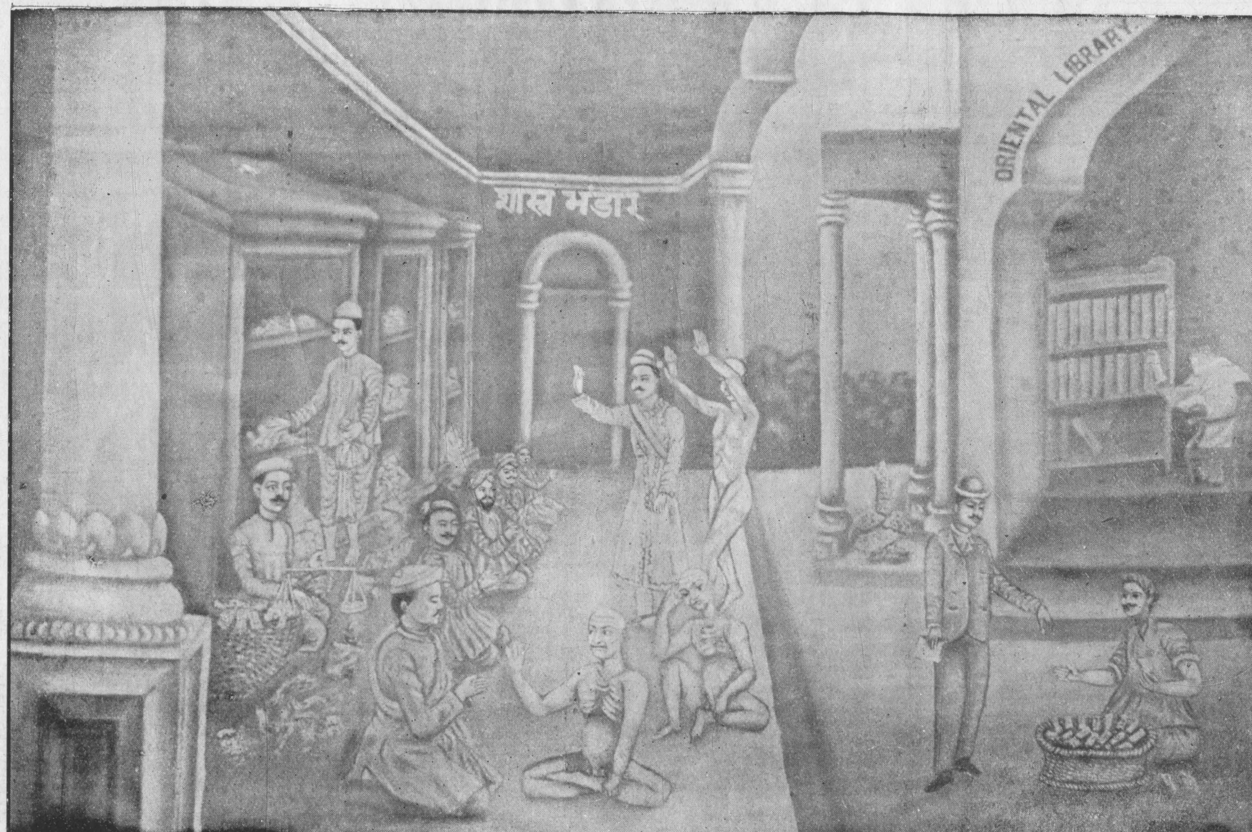


सब जिनमत-शास्त्रोंकी दशा क्या हुई है? नहीं तनिक बिचारा कार्य्य सारा बिगाड़ा।
निजगत पुरुषोंकी सत्कृति क्या हुई है? चिर-रचित-प्रतिष्ठा-मण्डपोंको उजाड़ा॥ १

Ac. Gunratnasuri MS
Jin Gun Aradhak Trust

नहीं समझा। आप लोग इसीसे जैन धर्म्मकी भावी उन्नति तथा अवनतिका अन्दाज कर सकते हैं। वर्त्तमान समयमें भी धनिक जैन-धर्म्मावलम्बियोंकी दृष्टि सच्ची और स्वाभाविक प्रभावनाको छोड़कर केवल कृत्रिम प्रभावना ही की ओर जा रही है। वे क्षणभरके लिये भी इस बातका विचार नहीं करते कि हमारी अज्ञानता ही अर्थात् जैन शास्त्र-भण्डारोंकी रक्षा न करनी ही इस परम-पवित्र-जैन-धर्म्मके मूलोच्छेदका कारण हो जायगी। यद्यपि हम-लोगोंने प्रमाद-पयोनिधिमें असंख्य डुब्बियां लगाकर अपने सर्वाङ्गपूर्ण जैन-साहित्यके अनेक रत्नोंको घोंघा समझकर तिरस्कृत कर दिया किन्तु अबसे भी यदि हम लोग चेतनावस्थापन्न होकर और जैन-साहित्यके महत्व समझकर इनकी रक्षा करने लग जांय तो सम्भव है कि यह अपनी बची खुची सामग्रियोंसे एकबार फिर इस भारतवर्षको प्रकाशमय कर दे। किन्तु भाइयो! अब भी हम यदि उसी चिर परिचित धर्म्म-विद्रावक प्रमादकी दासत्व-शृङ्खलासे परिबद्ध हुए रहेंगे तो फिर सदाके लिये हमें पश्चात्ताप की अविश्रान्त अश्रुधारा बहानी पड़ेगी।

---

## श्रीजिनवाणीकी वर्त्तमान हीनावस्थाका चित्र-परिचय।

(मालिनी)

(१)

यह जिन-जननी श्रीभारतीका है चित्र।
करुण रस भरा है दृश्य मानो विचित्र॥

(२)

सब जिनमत-धारीकी निराली प्रवृत्ति।
मतिगति सब भी तो भिन्नही और वृत्ति॥

(३)

गृह-निहित-महर्द्धि लूट ले और कोई।
निज मत-गत वृद्धि रोकले और कोई॥

(४)

पर कुछ न विचारें क्या है कर्तव्य मेरा।
प्रतिदिन बढ़ता है मूर्खताका अन्धेरा॥

(५)

सब जिनमत शास्त्रोंकी दशा क्या हुई है?
निजगत पुरुषोंकी सत्कृति क्या हुई है?

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

( ६ )

नहीं तनिक विचारा कार्य्य सारा बिगाड़ा।
चिर-रचित-प्रतिष्ठा-मण्डपोंको उजाड़ा॥

( ७ )

रविशशिअनिलोंका गम्य है ही नहीं है।
मूषिक-शलभ-कीटोंका अड़ंगा वहीं है॥

( ८ )

इक निपट अंधेरी कोठरी क्षुद्रसी है।
प्रकृति कुजन लोगोंकी यथा क्षुद्रसी है॥

( ९ )

अब जिनवरवाणी हा! पड़ी हैं वहां हीं।
निज समय बितातीं कष्ट पातीं वहां हीं॥

( १० )

इकदिन बरसों पै शास्त्र-भण्डार-स्वामी।
निज नियति सुधारे आगये वामगामी॥

( ११ )

झटपट सब शास्त्रोंको वहांसे निकाला।
प्रकृत सुजिनवाणीका दिवाला निकाला॥

( १२ )

कुछ इत उत फेंका और टकेसेर बेंचा।
निज ऋषि मुनियोंका मूल सर्वस्व बेंचा॥

( १३ )

इन विविध अनर्थोंको अभी देखके वे।
विचलितमन होके और उद्दाड़ु हो वे॥

( १४ )

ऋषि-मुनि कहते हैं धर्म्म-प्रेमी-जनोंसे।
तुम निजमत-रक्षा हा! करो वाङ्मनोंसे॥

( १५ )

अब समय नहीं है नींदका शीघ्र जागो।
प्रतिपल सत्कीर्त्ति-रक्षण-प्रेम पागो॥

( १६ )

यदि ऋषि-मुनियोंकी उक्तिमें हो प्रतीति।
अविरत अबसे भी धर्म पालो सप्रीति॥

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

## जिनवाणीकी वर्त्तमान हीनावस्थाके चित्रका परिचय।

प्रिय पाठकगण! आगेके पृष्ठमें जो आपलोग चित्र देख रहे हैं यह श्रीजिन-वाणीकी वर्त्तमान हीनावस्थाका चित्र है। इनकी क्या अवस्था है यह बात तो आपको प्रत्यक्षही दीख पड़ती है कि अंधेरे घरकी टूटी फूटी कोठरीमें जहां धूप और हवाका गम्य नहीं, बिना किवाड़की आलमारी तथा सन्दूकोंमें सारे शास्त्र भरे पड़े चूहों तथा दीमकोंके आहार बन रहे हैं। भण्डारके स्वामी कहीं वर्षोंपर भूले भटके आकर कटे फटे ग्रंथोंको कूड़ों में फेक रहे हैं। हाय! कहांतक कहा जाय जिनके एक पदके पसँघे पर सारे त्रिभुवनकी भी सम्पत्तियां नहीं तुल सकती थीं तथा दूसरी विद्यासे एकविद्या बदली जानेपर भी जो विद्या दिन दिन बढ़ती थी वेही ग्रंथ अब बनियोंके हाथ टके सेर बेचे जारहे हैं और सदाके लिये हल्दी धनियापर बदले जा रहे हैं। देखिये सब शास्त्रों को बनिया टोकरीमें रख रहा है और उन जीर्ण शीर्ण शास्त्रोंको अंग्रेज सब संग्रह करके प्रकाशित कर अपनी असीम गुण-ग्राहकता तथा सौभाग्यशा-लिताका परिचय दे रहे हैं। बल्कि सब प्रान्तोंके नेता लोग असावधानीसे उसकी ओर पीठ देकर बैठे हुए हैं। अब यह "मूलं नास्ति कुतः शाखा" वाली अवस्था देखकर हमारे स्वर्गवासी देवताओंका आसन एकबार डोल उठा है। और घबराये हुए आप सब धर्म्मात्माओंसे उनकी रक्षाके लिये प्रेरणा कर रहे हैं। देवताओंके पास ही महाराज गायकवाड़ बड़ौदानरेश जो आधुनिक राजाओंमें विद्वान् तथा धार्म्मिक समझे जाते हैं वह भी आप भाइयों से शास्त्र-रक्षाके लिये कह रहे हैं।

——०——

## राजकीय ओरियंटल लायब्रेरीका परिचय।

अङ्गरेज लोग भारतवर्षकी विद्या तथा कलाकुशलताकी प्रशंसा बहुत दिनोंसे सुनते आते थे। इससे सबसे पहले उनको यह उत्कण्ठा हुई कि जिन ग्रन्थोंको भारतवर्षके आचार्य्योंने अपने सारे जीवन समर्पण कर बड़े परिश्रमसे अपनी सन्तानके लाभके लिये लिखा है उनका संग्रह करना चाहिये। ऐसा विचार कर लाखों रुपयोंकी लागतसे पूना, बम्बई, मद्रास तथा कलकत्ता आदि प्रान्तोंमें "ओरियंटल एसियाइटिक" नामकी लायब्रेरियां खोलीं। जिनमें प्रत्येक देशसे प्रत्येक भाषाके प्राचीन शास्त्रोंके संग्रह करनेके लिये



Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

बड़े बड़े वेतनोंपर उच्च हिन्दुस्तानी तथा अंग्रेज विद्वान् नियुक्त किये गये हैं। वे लोग नगर नगर गांव गांव घूमकर शास्त्रोंका पता लगा लगा कर संग्रह कर रहे हैं। जिनको आपके भण्डारके रक्षक रद्दी समझकर बेचते हैं या कूड़ेमें फेंक देते हैं उन्हें अंग्रेज महोदय रक्षापूर्वक अपनी लायब्रेरियोंमें रखकर तथा उनका पर्य्यालोचन कर और भाषान्तरोंमें अनुवाद कर अपूर्व ऐतिहासिक सामग्री आपलोगोंके सामने उपस्थित करते हैं। उल्लिखित विभागोंने ऐसे ऐसे ग्रन्थ तथा शिला-लेखोंका संग्रह भारतवर्षसे किया है कि जिससे अब उन्हीं भारतवासियोंको अपनी मूर्खता तथा अज्ञानतासे उन्हें देखकर आश्चर्य्यित होना पड़ता है।

## पुरातत्व संग्रह विभाग।

इस विभागमें भी सैकड़ों विद्वान् नियुक्त हैं जो प्राचीन राजाओंके शिला लेख, ताम्रपत्र, पदक और टूटे फूटे मन्दिरोंके नकाशीदार पत्थरोंके टुकड़े आदि प्राचीन ऐतिहासिक सामग्रियोंका संग्रह कर रहे हैं। इन लोगोंको जैनी ऋषि महर्षि तथा आचार्य्योंके अनेक शिला-लेख ऐसे महत्वपूर्ण मिले हैं कि जिनका तत्व समझ कर पाश्चात्य विद्वान् जैनधर्म्मके बड़े जिज्ञासु हो रहे हैं।

कहिये भाइयो! जो जाति पांच छः सौ वर्ष पहले जबकि भारतवर्ष उन्नति अवस्थासे गिरकर अवनतावस्थाका अग्रसर हो रहा था जिनको आप जंगली तथा पशु समझते थे, अब उन्हींको विद्या बुद्धि तथा कला-कौशलकी प्रकर्षता सीमाके बाहर समझी जाती है। कहिये भला इसका क्या कारण है? तो इसका उत्तर सभीको मुक्तकण्ठसे यही देना होगा कि हमी लोगोंके महर्षियों तथा पूर्वपुरुषोंकी कीर्त्तिकी रक्षाका यह फल है और इन्हीं कीर्त्तियोंको अवज्ञा तथा नष्ट करनेका यह फल है कि हम लोगोंकी प्रतिदिन हीनावस्था हो रही है।

भ्रातृ-वर्गो! यह बात आप लोग निश्चय समझिये कि किसी धर्म्मकी हानि तथा वृद्धि धर्म्मग्रन्थोंहीकी हानि और वृद्धिपर निर्भर है। जिन वाणीकी वर्त्तमानावस्थाका प्रत्यक्ष उदाहरण आप लोगोंको इस चित्र-द्वारा प्रकटित हो जायगा।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

# राष्ट्रकूटवंशीय-महाराज अमोघवर्ष और उनके समयके जैनाचार्य्योंका परिचय।

प्रिय सुहृद्पाठको! आप लोगोंको विदित होगा कि इस भारतवर्षीय इतिहासका प्रारम्भ हमारे ऋषियोंने चौदहवें कुलकर जिनको चौदहवें मनु भी कह सकते हैं उनके समयसे किया है। इन्हीं चौदहवें कुलकर श्रीनाभिराजाके गृहमें श्रीमती मरुदेवीसे जगत्पूज्य भगवान् श्री १००८ आदि तीर्थङ्कर ऋषभदेव स्वामीका जन्म हुआ। और उनके समयमें ही कर्मभूमिकी रचनाका प्रारम्भ हुआ। इसीसे आदितीर्थंकर भगवान् ऋषभदेव स्वामी जगत्के कर्त्ता कहलाये। इन्होंने अपने वंशका नाम इक्ष्वाकु रक्खा। और आपके समयमें अनेक वंश प्रकट हुए। उन महावंशोंमें जन्म ले लेकर अनेक महानुभावोंने इस भारतभूमिको पवित्र किया। परन्तु आज हम उतनी दूर न जाकर अपने पाठकोंका ध्यान छठवीं शक शताब्दिकी ओर आकर्षित करते हैं, जिससे कि इस इतिहासके भागका विशेष सम्बन्ध है।

महाराष्ट्र शब्दका सार्थक्य।

उस समयमें भारतवर्षके शासनाधिपति राजाओंके नामके पूर्व राजकवि लोग 'महा' यह उपाधि लगाकर अपने राजाओंका गौरव बढ़ाया करते थे और राजा लोग भी इस उपाधिसे अपने गौरवकी अधिकता समझते थे। क्योंकि भोजवंशीय राजाओंने तथा उनके समयके बहुतसे कवियोंने कई शिला लेखोंमें भोजके पूर्व 'महा' यह उपाधि देकर इनका गौरव-प्रकर्ष दिखलाया है। इसी तरह रट्टा, राठा, राठौर, या राष्ट्रके पूर्व 'महा' लगाकर महाराष्ट्र आदि नाम प्रचारित किये गये हैं।

महाराज इन्द्र तृतीयके ८३७ शकके नौसारीके दानपत्रमें लिखा है कि राष्ट्रकूटवंश सोमवंशके यदुवंशी है और इनका गोत्र सात्यकी है। इसके बाद भी कई शिला-लेखोंमें राष्ट्रकूटवंशियोंको सोमवंश लिखा है। इतिहासखोजी रामकृष्ण भण्डारकर और वर्णेल साहब राष्ट्र शब्दको रट्टा या रेड्डीका विक-

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

ल्पित शब्द मान राष्ट्रकूटवंशियोंको द्राविड़ी कहते हैं। इनका कथन है कि "रट्टा शब्द रेड्डी शब्दका तद्रूप है और यह शब्द कनड़ी अथवा तेलगूका है। जिसका अर्थ कोषोंमें एक 'कृषक जाति' दूसरा 'ग्रामाधीश' है। राष्ट्रकूटोंका आदि निवास मध्य हिन्दुस्तान या बम्बई हातेका उत्तरीय भाग है। परन्तु राष्ट्रकूट शब्दको रट्टा या रेडीका कल्पित शब्द मानना अनुचित मालूम पड़ता है। क्योंकि प्राय: प्राचीन लेखोंमें तो राष्ट्रकूट शब्दही मिलता है। अभिमन्युके दानपत्र, नन्दराज्यके मलटाईके दानपत्र तथा दन्तिदुर्गके सामङ्गदके दानपत्रमें स्पष्टतया राष्ट्रकूट शब्दका प्रयोग किया गया है। रट्ठ शब्दका प्रयोग छन्दोबद्ध सौदन्तीके सरदारोंके लिखे हुए थोड़ेसे दानपत्रोंमें मिलता है। जो छन्दरचनाके कारणही इस शब्दका प्रयोग किया हुआ मालूम पड़ता है। दूसरी बात यह है कि बम्बईके उत्तरीय भागोंमें रेड़ी नामकी कोई जाति देख ही नहीं पड़ती। इससे निश्चय होता है कि राष्ट्रकूट शब्द आदिशब्द है या राठौरका संस्कृतरूप है।

राठौरोंका आदिवास राजपुताना कन्नौज पश्चिमोत्तरादि स्थानोंहीको मानना ठीक होगा। यह भी निस्सन्देह सिद्ध होता है कि राष्ट्रकूटवंशीय राजगण क्षत्रिय थे क्योंकि गोविन्द तृतीयकी पुत्रीका व्याह वंगनरेश धर्म्मपालसे हुआ था और महाराज अकालवर्षका व्याह सर्वोच्च हैहयवंशीय क्षत्रिय चेदीनरेशकी लड़कीसे हुआ था।

राष्ट्रकूट राजाओंकी उपाधि लाटानुराधीश अनेक स्थानोंमें लिखी गयी है जिससे मालूम होता है कि इनका आदि वास लाटानुर होगा किन्तु वर्त्तमान समयमें लाटानुरका पता नहीं लगता। परन्तु विलासपुर जिलान्तर्गत रत्नपुर वस्तीको यदि लाटनुरका वर्तमानरूप कहा जाय तो हो सकता है। इसमें कोई सन्देह ही नहीं है कि राष्ट्रकूट उस समय एक सर्वमान्य और सर्वोच्च क्षत्रियवंश था। क्योंकि और राजाओंकी अपेक्षा इनकी प्रसिद्धि सर्वत्र व्याप्त थी। इनके सौभाग्यकी इयत्ता सीमासे बाहर थी। इनके वंश-वृक्षमें जितने राजाएं हैं उनमें यही जैन इतिहासके उन्नायक कहे जा सकते हैं। प्राय: ऐसा कोई नहीं जैनइतिहास है जिसमें इनकी कुछ चर्चा न हो।

---

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

# राष्ट्रकूटवंशका वंशवृक्ष ।

- दन्तिवर्मा ( प्रथम )
  - इन्द्र ( प्रथम )
    - गोविन्द ( प्रथम )
      - कर्क या कक्क ( प्रथम )
        - इन्द्र ( द्वितीय )
          - खड्गावलोक दन्तिदुर्ग या दन्तिवर्म्मा ( द्वितीय ) शाका ६७४
        - अकालवर्ष, सभातुङ्ग, कृष्ण ( प्रथम ) शाका ६७५-८७
          - गोविन्द (द्वितीय) शाका ६८७–७०५
          - धारावर्ष, निरूपम, कलिवल्लभ, ध्रुव शाका ७०५-१६
            - गोविन्द ( तृतीय ) शाका ७१६-७३६
              - सर्व या अमोघवर्ष शाका ७३६-७९८
                - अकालवर्ष शाका ८००-४३
                  - इन्द्र (तृतीय) शाका ८३७-८३८ या ८३९
                  - वद्दिग, अमोघवर्ष (तृतीय)
                    - कृष्ण (तृतीय) शाका ८६२-८७८
                      - इन्द्र (चतुर्थ) शाका ९०४ ।
                    - खोटिका
                    - निरूपम
                      - कर्क द्वितीय या अमोघवर्ष चतुर्थ शाका ८९४ और ८९५ ।
            - इन्द्र
              - कर्क
              - गोविन्द

              गुजरातके राजा

यदि इस महाराष्ट्र-वंशका पूर्ण ऐतिहासिक विवरण लिखा जाय तो एक बड़ा भारी स्वतन्त्र इतिहासका ग्रन्थ तयार होजाय इसलिये हम इस वंशका पूर्ण विवरण न लिख कर जिनके राजत्व-कालमें अनेक दिग्गज जैनाचार्य्य होगये हैं उन्हींका यथोपस्थित ऐतिहासिक सामग्रीसे कुछ वर्णन करेंगे। क्योंकि

Ac. Gunratnasuri MS　　Jin Gun Aradhak Trust

हमारा मुख्योद्देश्य जैनाचार्य्योंहीका समय निश्चित करना है।

शक सम्वत् १५० के लगभग भारतवर्षकी भाग्यडोर अन्ध्रवंशीय राजाओं-के हाथमें थी। इन्होंने करीब तीन सौ वर्ष तक राज्य किया। इसके बाद प्रायः २२५ वर्ष तक चालुक्यवंशीय राजाओंने इस पवित्र भूमिका शासन किया था। चालुक्यवंश उत्तरीय राजपूत वंशका एक अंश है। जिन्होंने मध्य दक्षिण और द्राविड़ देशपर अपना आधिपत्य जमाया था। इस वंशके प्रथम स्थापनकर्त्ता वीरोंमें प्रसिद्ध वीर और अपने समयके एक बड़े भारी प्रतापी राजा महाराज पुलकेशी थे। जिन्होंने शक सम्बत् ४७२ के लगभग बड़े पराक्रमके साथ वातापी नगरीमें अपनी राजधानी स्थापित की। जो कि आजतक दक्षिण प्रदेशमें बीजापुर जिलान्तर्गत बदामी नाम (गुजरात) से प्रसिद्ध है। इनके बाद इस वंशमें और भी अनेक पराक्रमी राजा हुए। शक सम्वत् ६६२के लगभग में विक्रमादित्य द्वितीय हुए। इनके पुत्र कीर्त्तिवर्म्मा द्वितीय इस वंशके अन्तिम राजा हुए। इन्हींसे राष्ट्रकूट-वंशके प्रधान और संस्थापक वीर-श्रेष्ठ महाराज दन्तिदुर्ग जिनकी उपाधि वल्लभराज, पृथ्वीवल्लभ, महाराजाधिराज परमेश्वर और परमभट्टारक थी। इन्होंने शक सम्वत् ६७५ के लगभग बड़ी वीरताके साथ भारतवर्षीय दक्षिण राष्ट्रमें घोर विप्लव उपस्थित कर उस प्रदेश-का शासन-भार अपने हस्तगत कर लिया। वल्कि दन्तिदुर्गने कर्नाटक, चोल, काञ्ची, पाण्ड्य हर्ष और बज्जट देशके राजाओंको भी जीता। इनके समयके एक दान-पत्र रियासत कोल्हापुरके सामङ्गदमें लिखा है कि शक सम्वत् ६७४ माघ शुक्ल सप्तमीको ब्राह्मणोंको दान दिया। इससे स्पष्ट ज्ञात होता है कि इनके राजत्वकालका आरम्भ शक सं० ६७५ में हुआ। इन्होंने वातापी नगरीमें चालुक्यवंशीय राजाओंको सिंहासन-च्युत कर अपनी राजधानी स्थापित की। और चालुक्य राजाओंके आधीनस्थ अन्य अन्य देशोंपर भी अपना प्रभुत्व प्रचार-करनेकी कोशिश की परन्तु उनका राजत्व प्रजा-प्रिय न होनेके कारण उनके चचा कृष्ण प्रथम-द्वारा वे सिंहासन-च्युत कर दिये गये। इनकी उपाधि 'अकालवर्ष' और 'सभा तुङ्ग' है। इन्होंने चालुक्यवंशीय राजा-ओंके आधीनस्थ सब प्रदेशोंपर अपना राजत्व किया और इन्हींके वंशधरोंने गुजरातमें राजधानी स्थापित की और बहुत दिनों तक वहां राज्य-शासन किया। महाराज कृष्ण (१) प्रथमने वर्त्तमान निजामराज्य-स्थित एलुरामें

नोट-(१) इनका नाम अकालवर्ष और सभातुङ्ग भी था।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

बहुत बड़े बड़े और प्रसिद्ध उस समयके भारतवर्षकी शिल्पचातुरीके आदर्श-भूत अनेक जैन-मन्दिर बनवाये और गुफाएं खुदवायीं। जो आजतक भारत-वर्षकी आश्चर्य-जनक चीजोंमें एक प्रसिद्ध रूपसे परिगणित हो रही हैं।

इनके दो पुत्र हुए। एकका नाम गोविन्द द्वितीय और दूसरेके नाम धारावर्ष, निरूपम कलिवल्लभ और ध्रुव थे। इनके बाद गोविन्द द्वितीयने राज्य भार ग्रहण किया। यद्यपि गोविन्द द्वितीयके राजत्व कालका कुछ विशेष परिचय नहीं मिलता और न इनके समयमें कुछ ऐतिहासिक घटनाही हुई है तो भी हरिवंश पुराणके रचयिता जिनसेनने हरिवंश पुराणकी प्रशस्तिमें लिखा है कि कृष्णके पुत्र श्रीवल्लभके राजत्व कालमें शक सम्वत् ७०५ में यह 'हरिवंश' पुराण समाप्त हुआ। महाराज गोविन्दकी उपाधि श्रीवल्लभ थी। परन्तु ये पूर्ण-रूपसे राज्यको शृङ्खलाबद्ध भी न करने पाये थे तथा राज्य लक्ष्मीके सुखका आस्वादन भी न किया था कि इनके भाई महापराक्रमी युद्धप्रेमी महाराज ध्रुवने घोर युद्ध कर लगभग शक सम्वत् ७०५ में उनसे सिंहासनाधिपत्य छीन लिया। क्योंकि इस प्रमाणकी पुष्टि वाणी डिंटोरी और राधनपुरके दान पत्रसे भी होती है। और उन्होंने बड़े पराक्रमके साथ गुज-रात प्रदेशस्थ भिन्न-मल्लदेशीय राजवंशको पराजित कर उनके बंगाल देशके जय चिन्ह स्वरूप लाये। ए दो श्वेत छत्र छीन लिये और काञ्ची कौशाम्बी तथा कोशल देशके राजाओंको भी पराजित किया। इनके राजत्वकालका कुछ विशेष परिचय नहीं मिलता तो भी यह स्पष्टतया विदित होता है कि इन्होंने बहुत दिनों तक राज्य नहीं किया क्योंकि इनके पूर्वाधिकारी इनके भाई गोविन्द द्वितीयका समय शक सम्वत् ७०५ निश्चय होता है और उनके उत्तरा-धिकारी इनके पुत्र गोविन्द तृतीय का राजत्व-समय शक सम्वत् ७१६ निश्चित होता है। इससे अनुमान होता है कि आपने लगभग दस या ग्यारह वर्ष राज्य किया होगा। आप बड़े युद्धप्रेमी थे और आपने इस थोड़ेसे राजत्व-समयमें भी कई घोर युद्ध किये। केवल युद्धही तक नहीं वल्कि सब जगह विजय भी प्राप्त की। उनके पराक्रमकी प्रकर्षताहीसे उनको 'निरूपम' 'महाराजाधिराज' 'परमेश्वर' और 'भट्टारक' आदि उपाधियां मिली थीं। इन्होंने अपना गौरव बहुत बढ़ाया। इनके पुत्र गोविन्द तृतीयने शक सम्वत् ७१६ के लगभग पैतृक-राज्य-भार ग्रहण किया। ये महाराज इस प्रबल वंशके एक प्रधान और प्रतापी राजा और प्रसिद्ध वीररूपसे परिगणित हुए थे। इन्होंने अपने राजत्वकी सीमा

Ac. Gunratnasuri MS　　Jin Gun Aradhak Trust

दक्षिण देशमें काञ्ची-पर्य्यन्त उत्तरमें विन्ध्यपर्वत तथा मालवा-पर्य्यन्त परिवर्द्धित की थी और अपने अधीनस्थ भिन्न भिन्न देशोंमें अनेक राज्य स्थापित किये थे। और कहांतक कहा जाय इनकी विजयवैजयन्ती तुङ्गभद्रा नदी तक बड़े प्रभावके साथ फहराया करती थी। इन्होंने अपने भाई इन्द्रको दक्षिण गुजरात देशपर शासन करनेके लिये प्रतिनिधि-स्वरूपसे नियत किया। इनके समयमें इस जैन-धर्म्मका उदयाभिमुख सूर्य्यकी लालिमा उदयाचलपर छिटक रही थी। बौद्ध धर्म्मावलम्बियोंका प्रभाव दिन दिन घट रहा था। इन्होंने शक सम्वत् ७३० में राधनपुर, वाणी और डिण्डोरीमें दानपत्र लिखवाये।

उन दानपत्रोंसे आपकी दान-वीरताका अच्छा परिचय मिलता है। आप बड़े पितृ-भक्त थे। आपके पिता महाराज ध्रुवने अपने जीवितकालमें ही इनको राज-सिंहासन देनेकी इच्छा प्रकटित की थी। परन्तु इन्होंने पिताकी उपस्थितिमें राजत्वको स्वीकार न कर युवराजत्व ही से सन्तोष किया। जब आप सिंहासनपर वैठे तब उनके अधीनस्थ बारह राजाओंने एकत्रित होकर गुजरात प्रदेशस्थ एकस्तम्भ नामक राजाको मुखिया बनाकर स्वराज्य स्थापन करनेके लिये राजाज्ञा भङ्गकर घोर राजद्रोह उपस्थित कर दिया। यानि उस शान्तिमय राष्ट्रकी चिरवासिनी शान्ति भङ्ग कर दी। परन्तु महाराज गोविन्द तृतीय इससे कुछ भी विचलित नहीं हुए और उन्होंने बड़े पराक्रमके साथ उन सम्मिलित प्रतिपक्षी राजाओंके पराक्रमका विध्वंस कर बड़ी वीरता दिखलायी और वेङ्गी नरेश जिनका नरेन्द्र, मृगराज और विजयादित्य द्वितीय होना सम्भव है। जिन्होंने १०८ बार राष्ट्रकूट और गंगावंशीय राजाओंसे बड़े बड़े युद्ध किये थे सो इनको भी महाराज गोविन्द तृतीयने अपने अधीन कर लिया।

इन घोर युद्धोंसे छुट्टी पा महाराजने अपनी राजधानी मयूरखण्डी जो नासिक मोरखण्ड मालूम होता है उससे बदलनेकी इच्छा प्रकटित की और वेङ्गी नरेश को बुलवा कर मान्यखेट (१) की प्राकार (चहार दिवाली) से घिरवाने की आज्ञा दी। उन्होंने महाराजकी आज्ञा शिरोधार्य्य कर शक सम्वत् ७२८ में वर्षा ऋतुके थोड़े ही दिन पहले इस कार्य्यको प्रारम्भ कर दिया। इधर महाराज गोविन्द अगणित सैन्यको सजाकर केरल, मालव, सौत, गुर्जर और चित्रकूट आदि अनेक देशोंपर आक्रमण कर सबको अपने

नोट=१ यह मान्यखेट सोलापुरसे ९० माइलपर अग्निकोणमें निजामराज्यमें है और वर्त्तमान समयमें उसको मलखेड़ कहते हैं।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अधीनस्थ कर आप लौट आये। इनका राज्य पश्चिमी उपकूलसे लेकर पूर्व उपकूल तक और उत्तरमें विन्ध्य पर्वतसे लेकर मालवा तक और दक्षिणमें तुङ्ग नदी तक विस्तृत था। इन्होंने अपने भाई गुजरातके राजा इन्द्रको लाटा प्रदेश प्रदान किया। महाराज गोविन्द तृतीयको एक पुत्री थी। इसका नाम राणा देवी था। इसीका व्याह बंगालके महाराज धर्मपालसे हुआ था। इनकी उपाधियां प्रभूतवर्ष, श्रीवल्लभ, जगत्तुङ्ग, जनवल्लभ, कीर्त्तिनारायण, प्रबल, पृथ्वी-वल्लभ, श्रीपृथ्वीवल्लभ, श्रीवल्लभ, नरेन्द्र, महाराजाधिराज, भट्टारक और परम भट्टारक थीं। इनके राज्यका अन्तिमकाल शक सम्बत् ७३६ के लगभग मालूम पड़ता है। इनके समयमें जैनधर्मकी बड़ी उन्नति हुई है। इनके समयका एक दानपत्र मैसोरमें शक सम्बत् ७३५ का लिखा हुआ मिलता है। जिसमें गोविन्द तृतीयके राज्यकालका तथा चालुक्य वंशीय राजा बलवर्म्मा इनके पुत्र यशोवर्म्मा यशोवर्म्माके पुत्र कुनुङ्गिल देशमें राज्य करता था इत्यादि उल्लेख है। यह दानपत्र ताम्रपत्रपर संस्कृत भाषामें कनड़ी लिपिमें खुदा हुआ है। इस दानपत्रका सारांश यह है कि विमलादित्य नामक एक जैन राजपुत्र कांजोलिन (१) प्रदेशके शासनकर्त्ता थे। इनके पिताका नाम यशोवर्म्मा और इनकी माता गंगा मण्डलके शासनकर्त्ता चाकी राजाकी भगिनी थीं। उक्त विमला-दित्यके ऊपर शनिग्रहका पूर्ण प्रकोप था। इस प्रकोपके निवारणार्थ इनके मामाने चाकीराजके अनुरोधसे बल्‌भभ नरेन्द्र प्रभूतवर्ष गोविन्द तृतीय जब मयूरखंडीमें थे, जैन-शिक्षक गुप्त गुप्ताचार्य्योंके समूहसे पूज्यमान आचार्य्य, कीर्त्तिकी परम्परामें नन्दिसङ्घ, पुन्नागवृक्ष मूलगणके आचार्य्य कविके शिष्य अर्ककीर्त्तिको मान्य-पुर (२) में एक जैन-मन्दिर बनानेके लिये इदीगुर देशमें जलमंगल नामक एक ग्राम दिया। इसका समय शक सम्बत् ७३५ ज्येष्ठ शुक्ल दशमी सोमवार है। इससे महाराज गोविन्द तृतीयका अन्तिम राजत्व-समय शक सम्बत् ७३५ निश्चित होता है। इसके बाद शक सम्बत् ७३६ अर्थात् ईस्वी सन् ८१४ या ८१५ में गोविन्द तृतीयके उत्तराधिकारी इनके पुत्र महाराज अमोघवर्षने भारतवर्षका शासन-भार ग्रहण किया। आप बड़ेप्रतापी और विद्वान् राजा थे इसीसे उस समयके कवियोंने आपको अनेक उपाधियों से विभूषित किया है। आपकी मुख्य मुख्य उपाधि नृपत्तुङ्ग, महाराजाधिराज, सर्व, ऋतिधवल, परमे-

नोट=१ काञ्जोलिन आधुनिक दक्षिण प्रदेशस्थ काशिगाल हो सकता है।

नोट=२ यह मान्यपुर आजकल मणिपुर नामसे प्रसिद्ध है।



Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

श्वर, भट्टारक, परमभट्टारक, श्रीवल्लभ, पृथ्वीवल्लभ और दुर्लभ आदि है। वास्तवमें आपकी प्रत्येक उपाधिने पद पदमें अपनी सार्थकता दिखलायी थी। अनेक राजाओंने अनेक दानपत्रोंमें महाराज अमोघवर्षको कई नामसे सम्बोधन किया है। शक सम्वत् ८३७ अर्थात् ६१५ ई० में नौसारीके दानपत्रमें इन्द्र तृतीयने आपको "श्रीवल्लभ" की उपाधिसे विभूषित किया है। इसी प्रकार कङ्कण देशके शिलाहार वंशके राजाने अपने शक सम्वत् ६१८ के भदैना दानपत्रमें आपको "दुर्लभ" नामसे सम्बोधित किया है। महाराज अमोघ-वर्षके लेखोंमें "महाराजाधिराज" "भट्टारक" "परमभट्टारक" "परमेश्वर" इत्यादि पदवियोंका विशेषरूपसे व्यवहार किया गया है।

शक सम्वत् ७३६ के लगभग जब महाराज गोविन्द तृतीयका स्वर्गारोहण हो चुका था और महाराज अमोघवर्ष राज्य-शासन-भार ग्रहण कर चुके थे तब उनके अधीनस्थ राजाओंने अधीनताकी शृङ्खलाको तोड़ स्वतन्त्रता धारण करली। उस समय उन्होंने अपने चचेरे भाई गुजराताधिपति महाराज कृष्णसे सहायता मांगी और उनको साथ ले दुर्दमनीय पराक्रमके साथ पहले वेंगीराज पर आक्रमण किया तथा उस राज्यको छार खार कर डाला। इसी युद्धका सम्बन्ध लेकर उल्लिखित नौसारीके दान पत्रमें आपको लेखकोंने "वीर नारायण" उपाधिसे विभूषित किया है। उसकी व्याख्या इस प्रकार की है कि जैसे नारायणने महासमुद्रमें डूबी हुई पृथ्वीका उद्धार किया उसी प्रकार चालुक्य महासागरमें निमग्न हुई अपनी पैतृक-राज्य-लक्ष्मीका उद्धार किया। शक सम्वत् ८८५ के कारड़ा दानपत्रमें चालु-क्योंके नाश करनेके लिये आपको अग्निकी उपमा दी गयी है। आपने चालुक्यवंशीय राजाओं पर आक्रमण कर वेंगीके चालुक्योंको वंगावलीमें भया-नकरूपसे पराजित किया और इनके बहुतसे नगरोंको आग लगाकर जला डाला। आप पैतृक-राज्यको पूर्णरूपसे उद्धार कर बड़े प्रतापके साथ राज्य करने लगे। आपका बहुतसा समय इन चालुक्य राजाओंके साथ तुमुल युद्ध करनेमें ही व्यतीत हुआ। इनके पिता गोविन्द तृतीयकी राजधानी परिवर्त्तन करनेकी जो अत्युत्कट इच्छा और उद्योग था उसकी पूर्त्ति आपने बड़े उत्साह और पूज्य-पितृभक्तिसे की। आपने मयूरखण्ड नासिकसे अपनी राजधानी उठा मान्यखेत्र वर्त्तमान मलखेड़में स्थापित की। इसी मान्यखेत्रकी परिखा आपके पूज्य पिताकी आज्ञानुसार वेंगीनरेशने बड़ी चतुरताके साथ

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

निर्माण कराई थी। आपहीके समयसे राष्ट्रकूटवंशियोंकी राजधानी मान्यखेत्रमें स्थापित हुई थी। इसका प्रमाण 'करड़ा' 'देवली' और 'वर्द्ध' दानपत्रों में मिलता है। वर्द्ध दानपत्रमें लिखा है कि जगत्तुङ्ग ( गोविन्द तृतीय ) के लड़के नृपत्तुङ्ग (अमोघवर्ष) ने मान्यखेत्र वसाया। अङ्ग, वङ्ग, मगध, मालव और वेंगी नरेशगण बड़ी भक्तिके साथ आपकी आज्ञाका प्रतिपालन किया करते थे। जिसका प्रमाण आजतक भी सुरूर शिला-लेखमें खुदा हुआ है। मलखेड़में राजधानी स्थापन करने के बाद आपने बड़े पराक्रमके साथ दिगन्त-व्यापिनी प्रसिद्धि कर ली थी। यदि यह कहा जाय कि उस समय सारे भारतवर्षमें आपका एक-छत्र राज्य था तो हमारी समझमें कुछ अत्युक्ति न होगी। आप बड़े विद्या-प्रेमी थे। आपके समयमें संस्कृतसाहित्य-भण्डारकी पूर्त्ति खूब बढ़ी चढ़ी थी। आपकी सभाको बड़े बड़े दिग्गज ध्वजाधारी पण्डित और कवि सदैव अपनी अपनी विद्या और कविताकी चमत्कृतिसे सुशोभित किया करते थे। आप जैनधर्म्मावलम्बी थे। स्वयं भी आप बड़े भारी पण्डित और कवि थे। आपकी कवित्वोत्कर्षताका नमूना आपकी बनायी हुई है "प्रश्नोत्तर-रत्नमाला" से सहजही में मालूम होता है। बल्कि इसकी काव्य-चातुरी और विषय-सौन्दर्य्यने लोगोंको यहां तक मुग्ध किया कि सनातनधर्म्मावलम्बियोंने श्रीशङ्कराचार्य्य-रचित और श्वेताम्बरसम्प्रादायोंने उसके मङ्गलाचरण और प्रशस्तिके श्लोक बदल कर अपने आचार्य्यके नामसे प्रसिद्ध कर दिया। परन्तु बहुत प्राचीन हस्त-लिखित ग्रन्थोंमें जो मंगलाचरण (१) और प्रशस्ति(२) मिलती हैं उनसे निश्चित होता है कि महाराज अमोघवर्षही की यह बनायी है। आपके समयकी बहुतसी सत्य घटनाएं वर्तमानसमयमें महाराज भोजकी किम्वदन्तियांकी सी परिणत हो गयी हैं। इनके महादानी होनेका पूर्ण प्रमाण अनेक प्राचीन दानपत्रों द्वारा प्रमाणित होता है। इनके समयमें जैन-धर्म्मकी और जैन-साहित्यकी अद्वितीय उन्नति हुई है और इनके समयमें बड़े प्रसिद्ध प्रसिद्ध जैनाच्चार्य्य हुए तथा अनेक महत्व-शाली

---

नोट—१ प्रणिपत्य वर्द्धमानं प्रश्नोत्तररत्नमालिकां वक्ष्ये। नागनरामरवन्द्यं देवं देवाधिपं वीरम्।। १ ।।

भावार्थ—देव और मनुष्योंसे वन्दनीय देवाधिदेव वर्द्धमान श्रीमहावीर स्वामीको नमस्कार कर मैं इस प्रश्नोत्तररत्नमालाको रचता हूं।

नोट—२ विवेकात्यक्तराज्येन राज्ञेयं रत्नमालिका। रचितामोघवर्षेण सुधियां सदलङ्कृतिः।

भावार्थ—विवेकसे राज्य छोड़े हुए महाराज अमोघवर्षने यह प्रश्नोत्तररत्नमाला विद्वानोंके लिये सदलङ्कारकी सी रची।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

ग्रन्थोंकी रचना हुई। इनके समयमें श्री १०८ भवगज्जिनसेनाचार्य्य और स्वामी गुणभद्राचार्य्यकी बड़ी प्रसिद्धि हुई है। इन्होंने बौद्ध-धर्म्मको तो बड़ी प्रबलताके साथ घटाया। जिसका फल यह हुआ नवमी शक शताब्दिके प्रारम्भमें ही दक्षिण भारतसे बौद्ध-धर्म्मका अस्तित्व उठ गया।

क्षत्रियकुलचूड़ामणि राठौरकुल-सूर्य्य महाराज अमोघवर्ष हमारे परमपूज्य श्री १०८ भगवज्जिनसेनाचार्य्यके प्रिय शिष्य थे। जिसका उल्लेख स्वामीजीने भी अनेक स्थानोंपर किया है। गुणभद्रस्वामीने भी अपने उत्तरपुराणकी प्रशस्ति में महाराज अमोघवर्षकी गुरुभक्तिका अच्छा उत्कर्ष दिखलाया है। इन्हीके राजत्वकालमें श्रीवीरसेनाचार्य्यने एक परमोत्कृष्ट सारसंग्रह (१) नामक गणित-शास्त्रकी रचना की है। यही वीरसेन स्वामी जिनसेनाचार्य्यके गुरु थे। इन्होंने भी इसी सारसंग्रह ग्रन्थमें महाराज अमोघवर्षका उल्लेख किया है।

---

(१) सारसंग्रहका मंगलाचरण :—

प्रीणितः प्राणिसस्यौघो निरीतिर्निरवग्रहः।
श्रीमतामोघवर्षेण येन स्वेष्टहितैषिणा ॥ १ ॥
पापरूपा परा यस्य चित्तवृत्ति हविर्भुजि।
भस्मसात् भावमीयुस्ते वन्ध्यकोपो भवेत्ततः ॥ २ ॥
वशीकुर्वन् जगत्सर्वं योऽयं नानुवशः परैः।
नाभिभूतः प्रभुस्तस्मादपूर्वमकरध्वजः ॥ ३ ॥
यो विक्रमक्रमाक्रान्तचक्रीशक्रशतक्रियः।
चक्रिकाभञ्जनो नाम्ना चक्रिकाभञ्जनोऽञ्जसा ॥ ४ ॥
यो विद्यानद्यधिष्ठातो मर्य्यादा वज्रवेदिका।
रत्नगर्भो यथा ख्यात श्चारित्रजलधिर्महान् ॥ ५ ॥
विध्वस्तैकान्तपक्षस्य स्याद्वादन्यायवादिनः।
देवस्य नृपतुङ्गस्य वर्द्धतां तस्य शासनम् ॥ ६ ॥

भावार्थ—जिन श्रेष्ठ हितैषी अमोघवर्षसे जीवधारी रूपी धानके समूह निरुपद्रव और बिना प्रतिरोधके प्रसन्न किये गये। जिनके ध्यानरूप अनलमें पापरूप शत्रु भस्म हुए। इसके बाद इन्होंने अपने क्रोधादि कषायोंको रोका। जिन्होंने सारे संसारको वश किया पर आप किसीके वश नहीं हुए और जिनकी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

परन्तु इस सार्वसंग्रह ग्रन्थका त्रैराशिक अध्याय तक ही लब्ध है। इसकी प्रशस्ति नहीं मिलती जिससे कि इस ग्रन्थके समयका पूर्ण निश्चय किया जाय परन्तु इसमें तो कुछ सन्देह ही नहीं कि इस ग्रन्थकी रचना महाराज अमोघवर्षके राजत्वकालमें हुई है। क्यों कि मंगलाचरणके श्लोक इसके लिये अकाट्य प्रमाण हैं। श्रीवीरसेन स्वामीने जयधवलकी टीका लिखना प्रारम्भ किया था किन्तु वे उसको पूर्ण न कर सके। केवल बीस हजार श्लोकोंको ही लिखकर स्वर्गको पधारे। इस अधूरे ग्रन्थको भी जिनसेन स्वामीने शक सम्वत् ७५९ में चालीस हजार श्लोकोंको और लिखकर साठ हजार श्लोकोंमें पूर्ण किया। इन्होंने "सिद्धभूपद्धति" की भी टीका लिखी है। वीरसेनके तीन शिष्य थे १ जिनसेन २ विनयसेन ३ दसरथगुरु। इन्हीं विनयसेनके अनुरोधसे कालिदासके अभिमान दमनार्थ जिनसेनने "मेघदूत" के श्लोकोंसे परिवेष्टित करते हुए "पार्श्वाभ्युदय" रचा। जिनसेन स्वामी अपने समयके एक अद्वितीय कवि तथा बड़े भारी सैद्धान्तिक-मर्मज्ञ थे। कई स्थानोंमें इन्होंने बौद्धोंको पराजित कर विजय-डंका बजायी थी और इनके समयमें जैन धर्मका महत्व बहुत बढ़ा चढ़ा था। यही कारण है कि आपके समयका सुवर्णमय चमकता हुआ दृष्टान्त आजतक भारतवर्षके इतिहास ललाटमें जैनधर्मावलम्बियोंके लिये खुदा हुआ है। महाराज अमोघवर्ष अपने गुरु जिनसेना-चार्य्यके वैराग्यमय उपदेशसे इस भूमण्डल-व्यापिनी राजलक्ष्मीसे विरक्त हो जिनदीक्षा धारण करली और इन्होंने अपना अन्तिम समय मुनि अवस्थामें ही व्यतीत किया। इसबातकी साक्षिता इनकी रचित "प्रश्नोत्तर रत्नमालिका"का अन्तिम श्लोक ही पूर्णरूपसे दे रहा है। महाराज अमोघवर्षके शासनकालका अन्तिम समय कान्हरी दान पत्रोंमें शक सम्वत् ७९९ लिखा हुआ है। जो इनके राज्य-कालसे तिरसठवां अथवा चौसठवां वर्ष होता है। परन्तु यह बात निर्विवाद सिद्ध होती है कि उस समयतक इन्होंने जिनदीक्षा लेली थी। पर इनके विद्यमान रहते इनके पुत्रकी प्रधानताकी ओर कुछ ध्यान न देकर करड़ा

---

अवनति कभी नहीं हुई अतः आप अपूर्व कामदेव हैं। जो अपने पराक्रमसे नारायण तथा इन्द्रकी क्रियाओं पर भी आक्रमण करने वाले हैं और जो रत्नगर्भ समुद्रके ऐसा विद्या-रूपिणी नदियोंके आश्रय हैं। और कहां तक कहा जाय मर्यादाकी तो वे रत्न-वेदिका हैं। इन्होंने एकान्तवादियोंको विध्वस्त कर अपने स्याद्वादकी डंका बजायी। ऐसे नृपतुंग अमोघवर्षका शासन सदा वर्तमान रहे।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

दानपत्रमें लेखकोंने इन्हींका नाम लिख दिया होगा। क्योंकि उस समय तक इनको जिन-दीक्षा लेनेका सुदृढ़ प्रमाण एक और मिलता है कि शक सम्वत् ७९७ के सौदत्ती लेखमें राजाके स्थानमें अकालहो वर्षका नाम लिखा हुआ है। इससे इस बातका भी निश्चय होता है कि शक सम्वत् ७९७ के पूर्वही महाराज अकालवर्ष सिंहासनारूढ़ हो चुके थे।

अमोघवर्ष प्रथमके बाद उनके पुत्र अकालवर्ष वा कृष्ण द्वितीय सिंहासन पर बैठे। इनका विरुद सभातुङ्ग और उपाधियां महाराज, परमेश्वर और परम भट्टारक थीं। आपने हैहयवंशी शङ्कुककी बहन यानि चेदीनरेशकी लड़कीसे विवाह किया था। इसका विवरण शक सम्वत् ८९६ के कारड़ा दान-पत्रमें लिखा हुआ है। लेखमें इनका सबसे प्रथम समय शक सम्बत् ८१० मिलता है परन्तु ये करीब शक ७९७ में अवश्य सिंहासन पर बैठे होगें। क्यों कि उस समय तक उनके पिता अमोघवर्षको राज्य करते साठ एकसठ वर्ष हो गये थे। इनका अन्तिम समय शक सम्बत् ८३३ या ८३४ के करीब होता है। गुणभद्राचार्य्य-रचित 'आत्मानुशासन'की टीकामें लिखा हुआ है कि गुण भद्राचार्य्य अकालवर्ष वा कृष्ण द्वितीयके गुरु थे।

जिस समय इस ग्रन्थकी रचना हुई है उस समय अकालवर्ष युवराज थे। इससे यह स्पष्ट विदित होता है कि सिंहासन पर बैठनेके पूर्वही अकाल-वर्ष राज्य-कार्य्यमें पूर्ण दक्ष हो गये थे और राज्यशासनमें अपने पिताकी सहायता किया करते थे। दूसरा यह कि "आत्मानुशासन" का समय लगभग शक सम्बत् ७९६ या ७९७ निश्चित होता है। इन्हीं महाराज अकालवर्षके राज्यकालमें श्री आदिपुराणकी पूर्त्ति और उत्तरपुराणकी रचना हुई थी। उत्तरपुराणकी प्रशस्तिमें लिखा है कि शक सम्वत् ८२० के पिङ्गल नामक सम्वत् में यह ग्रन्थ पूर्ण हुआ हैं। उस समय चेल्लध्वज या चेल्लकेतन वंशका एक लोकादित्य नामक राजा महाराज अकालवर्षके आधीनमें बनवास प्रदेश के बंकापुरमें राज्य करते थे। इसी बंकापुरमें यह उत्तरपुराण पूर्ण हुआ है। यह लोकादित्य महाराज अमोघवर्षके अधीनमें सूबेदारके अधिकारसे उक्त प्रदेशको शासन करते थे। इनके समयमें उस प्रदेशमें जैन-धर्म्मकी अच्छी उन्नति हुई थी। इन्होंने जैन-धर्म्मकी उन्नति बड़े उत्साहसे की थी। गुणभद्र स्वामीने उत्तर पुराणकी प्रशस्ति(१)में महाराज अकाल वर्षके हाथियोंके विषयमें

नोट—१ इस अङ्कके २८ वें पत्रमें उत्तर पुराणकी प्रशस्तिका तीसवां श्लोक देखिये।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अच्छा वर्णन किया है। इससे विदित होता है कि महाराज अकालवर्ष भी अपने पिताकी तरह बड़े भारी प्रतापी राजा थे। इनके आधिपत्य और प्रचण्ड प्रभुत्व का साहित्य वर्द्ध और नौसारीके दानपत्र भी मुक्तकण्ठसे दे रहे हैं। लिखा है कि इन्होंने गुर्जरके राजाको भय दिखलाया, लाटा नरेशका दर्प्प-दलन किया, गौड़ निवासियोंकी नम्रताकी शिक्षा दी तथा सागरोपकूल-निवासियोंकी शान्ति हरली। यह महाराज अकालवर्षहीका प्रताप था कि इन्होंने अन्ध्र, गंग तथा मगधके राजाओंसे अपनी आज्ञाका पालन कराया। इनके समयमें जैनधर्म्म-सम्बन्धी दो दान पत्रोंका पता लगता है। पहला धार-वाड़ ज़िलाके मलगुंडेमें एक शिलालेख है जिसमें लिखा है कि "शक सम्वत २२४ में अरसार्य्य नामक एक जैनने अपने पिता चिकार्य्यके बनाये हुए मलगुंडेके जैनमन्दिरके लिये दान दिया"। पर दानकी वस्तुका कुछ उल्लेख नहीं मिलता। दूसरा लेख सौदन्तीमें है जिसका काल शक सम्वत् ७९७ है। उसमें लिखा है कि "अकालवर्षके किसी एक सूबेके मालिक पृथ्वीरामने जैनमन्दिरके लिये पृथ्वी-दान किया"। महाराज अकालवर्षका अन्तिमकाल शक सम्वत् ८३४ निश्चित होता है।

इन राष्ट्र वंशीय राजाओंके समयमें बौद्धधर्म्मका भी निर्वाणोन्मुख प्रदीप झिलमिला रहा था। परन्तु जिनसेन और गुणभद्र आदि आचार्य्यों की धर्म्म-तत्परतासे जैनधर्म्मका सूर्य्य पुनः प्रचण्डकिरणोंके साथ उदित होआया। इन आचार्य्योंने भी इस धर्म्मकी वैसी उन्नति की जैसी कि इनकी वंशपरम्परामें समन्तभद्र आदि आचार्य्योंने की थी। ये सब दिगम्बर सम्प्रदायके थे।

इन राष्ट्रकूटवंशी राजाओंकी ध्वजाका नाम "पालीध्वज" और "ओककेतु" था। ये लोग गरुड़लाञ्छन और लाटानुराधीश कहे जाते थे। त्रिवली नाम के एक बाजेसे इनके आगमनकी सूचना हुआ करती थी। इनकी मोहर और सिक्कोंपर गंगा यमुना और पालीध्वजका चित्र रहा करता था। इन लोगोंके आधीन राज्यका नाम रट्टापट्टी था। जिसमें साढ़े सात लाख ग्राम थे। इनके गरुड़लाञ्छनका चिन्ह शक सम्वत् ७१६ के गोविन्द तृतीयके पैथेन दान-पत्रमें, दन्तिदुर्गके शक सम्वत् ७४६ के सामङ्गद दानपत्रमें, गोविन्द तृतीयके शक सम्वत् ७२६ और ७२९ के वाणीके दानपत्रमें और गुजरातके राजा कक्क सुवर्णवर्षके बड़ोदा दानपत्रमें मिलता है। परन्तु कक्क द्वितीयके शक सम्वत् ८९५ के करड़ा दानपत्रकी मुहरमें किसी एक बड़े भारी वृषभका चित्र है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इस वंशके आदिके चार राजा दन्तिवर्म्मा, इन्द्र, गोविन्द और कक्कका केवल लेखही मात्र मिलता है और इन्द्र द्वितीयके बारेमें शिर्फ इतनाही पता लगता है कि इनकी स्त्री सोमवंशी चालुक्य राजाकी लड़की थी। राष्ट्रकूट वंशियों के पूर्ण इतिहासका प्रारम्भ महाराज दन्तिदुर्गसे होता है जैसा कि हम पीछे वर्णन कर आये हैं।

चालुक्य और राष्ट्र वंशियोंका परस्पर सम्बन्ध।

यद्यपि महाराज दन्तदुर्गने चालुक्योंको पूर्ण पराभव कर राज्य-लक्ष्मीपर अपना पर्य्याप्त अधिकार प्रचारित किया था तौ भी चालुक्य वँशीय राजालोग उक्त दक्षिण देशके बहुतसे भागोंमें शासन किया करते थे। इतिहाससे इसबातका भी पता लगता है कि चालुक्य और राष्ट्रकूटमें परस्पर घरेलू सम्बन्ध था। यह भी निश्चय होता है महाराज गोविन्द तृतीयके समयसे चालुक्य वँशीयोंसे बराबर युद्ध छिड़ा करता था। और इन दोनों वंशोंमेंसे जहां किसीने मौका पाया कि एक दूसरेको धर दबाया। परन्तु उल्लिखित समय तक जहांतक प्रमाण मिलता उससे यही मालूम होता है कि राष्ट्रकूटवंशीय राजाओंकी ही सदा प्रधानता थी।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

# आवश्यक सूचना और समाचार।

निवेदन। हम लोगोंने निश्चय किया था कि "भवन" के संगृहीत शास्त्रोंकी सूची रिपोर्टहीमें प्रकाशित हो जाय किन्तु रिपोर्ट बड़ी हो जाने तथा विलम्बके कारण उसमें हम लोग प्रकाशित नहीं कर सकें। इसके बाद "भास्कर" में प्रकाशित करना हम लोगोंको सर्वथा निश्चय हो चुका था। परन्तु हम सबोंको ग्रन्थोंके केवल नाम ही और संख्या देनेका अभिप्राय न था। हम लोग चाहते हैं कि सूची ऐसी बने जिससे ग्रन्थोंकी बाहरी बातें पाठकोंको दर्पणके ऐसा प्रतिबिम्बित हो जाय। ऐतिहासिक विषयोंसे सुसज्जित सूची बनानेमें हमलोगोंने बड़ी शीघ्रता की किन्तु आप सब जानते ही हैं कि "भवन" में अधिकांश पुस्तकें कनड़ी और द्राविड़ी लिपिमें हैं। यद्यपि सूची तयार करनेमें दो कर्मचारी "भवन"में अनवरत काम कर रहे हैं तोभी ग्रन्थोंकी जीर्णशीर्णता तथा अक्षर-वैचित्र्यसे अभीतक सर्वाङ्ग-पूर्ण सूची तयार नहीं हो सकी। इसलिये "भास्कर"की इस किरणमें भी पाठकोंके समक्ष "भवन"के ग्रन्थोंकी विवृति प्रकाशित करनेमें हमे बञ्चित रहना पड़ा। अतः हम अपने गुण-ग्राहक ग्राहक महोदयोंसे निवेदन कर आशा करते हैं कि "भवन" के सुरक्षित-शास्त्रोंकी तालिका बहुत शीघ्र आप महोदयोंकी सेवामें समुपस्थित होगी।

* * *

"भास्कर"के छपनेमें विलम्बका कारण—यद्यपि हम लोगोंने "भास्कर" की समाग्रीकी सुशृङ्खलतासे इसको सबसे पहले निकालदेनेकी घोषणा तथा चेष्टा कीथी। किन्तु सर्कारी डिक्लेरेशन और प्रेसकर्म्मचारियोंकी अस्वस्थता आदि अड़चनोंसे हम लोगोंकी चेष्टा निष्फल हुई इस लिये हम अपने "भास्कर" के प्रकाशन-विलम्बके जिज्ञासु हितैषी ग्राहक महोदयोंसे निवेदन करते हैं कि वे विलम्बका कारण अनिवार्य्य समझ कर तथा इस कार्य्यकी प्रारम्भावस्था जानकर "भास्कर" को अपनी अनुग्रहभरी सुधामयी दृष्टिसे सदा सींचनेकी कृपा करेंगे। "भास्कर" की अग्रिम किरणके लिये हमने अभीसे छपनेके लिये प्रेसको सब सामग्री दे दी है अतः अग्रिम किरणें ठीक समय पर पाठकोंकी सेवामें पहुंचा करेगीं।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

*    *    *

भवनकी कार्य्यवाही—आजकल "श्रीजैनसिद्धान्तभवन" आरामें अंग्रेजी और संस्कृतके ज्ञाता तीन पुस्तकालयाध्यक्ष हैं। ये लोग बाहरकी आई हुई शास्त्रोंकी सूचियोंको अक्षरानुसार लिखने के साथ साथ भवनके आवश्यक अन्यान्य कार्य्य भी कर रहे हैं। मद्रास तथा बम्बई प्रान्तमें दो सुविज्ञ पुरातत्वान्वेषी जैनऐतिहासिक वस्तुओंकी खोज कर रहे हैं। भवनके चार सुलेखक मूड़विद्री और कारकलमें कनड़ी संस्कृत शास्त्रों को बालबोधी अक्षरोंमें प्रतिलिपि कर रहे हैं। कलकत्तेमें एक ग्रेजुएट बंगाली महाशय महीनोंसे इम्पीरियल लायब्रेरीमें अंग्रेजी ऐतिहासिक पुस्तकोंसे जैनपुरातत्व सम्बन्धी इतिहासकी खोज कर रहे हैं।

*    *    *

स्वागत—मैं नवोन्नत खंडेलवालोंके सौभाग्यसूर्य्य अपने सहयोगी "सत्यवादी" का बड़े स्निग्ध भावसे स्वागत करता हूं। यह "महाराष्ट्रीय खंडेलवाल दिगम्बर जैन पञ्च महासभाका" मुखपत्र है। इसके सर्वाङ्ग-सुन्दर होनेमें सर्वथा सम्भव है क्योंकि इसके मुख्य संचालक पण्डित धन्नालालजी हैं। इसकी भाषा परिमार्जित तथा आकार प्रकार प्रशंसनीय है। हमे पूर्ण प्रतीति है कि जैनसिद्धान्तके रहस्योंको प्रकाशित कर सहयोगी "सत्यवादी" जैनसमाजको कृतज्ञभाजन करेगा।

*    *    *

ग्राहकोंसे सूचना—जिन महोदयोंको "भास्कर" के ग्राहक होना हो वे इसकी पहली ही किरणसे हमे शीघ्र सूचना दें। नहीं तो "भास्कर" की पहली किरणकी प्रतियाँ बहुत कम छपी हैं। विलम्बसे ग्राहक होनेकी सूचना मिलनेसे भास्कर की पहली किरण हम नये ग्राहकोंको नहीं दे सकेंगे।

*    *    *

अशुद्धि की सम्भावना—शीघ्रतासे छपनेके कारण सम्भव है कि कहीं अशुद्धियां रह गयी हों। पाठकगण उन्हें सुधारकर पढ़नेका कष्ट उठायेंगे।

*    *    *

पत्र सम्पादकोंसे प्रार्थना—सभी हिन्दीपत्र-सम्पादकोंसे हमारी प्रार्थना है कि वे "भास्कर" के परिवर्त्तनमें अपने पत्र भेजकर तथा अपनी शुभ सम्मतिसे हमे अनुगृहीत करें।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

*　　*　　*

पाठकोंकी सम्मति—अपने प्रिय पाठकोंसे हमारा निवेदन है कि भास्करके विषयमें उनका जैसा विचार हो वे उससे निस्सङ्कोचतासे शीघ्र सूचित कर हमे कृतज्ञभाजन बनावें। क्योंकि यदि किसी प्रकार की त्रुटि हमलोगोंको मालूम पड़ेगी तो उसको अगली किरणसे सुधारने की चेष्टा करेंगें।

*　　*　　*

भवन-द्वारा एक नवीन पुरातत्वका अविष्कार—कलिङ्गदेश वर्त्तमानमें कटकके निकट भुवनेश्वरसे चारपांच माइल चलकर श्री उदयगिरि खण्डगिरि नामके एक अत्यन्त प्रचीन तथा जैनधर्म्मका प्राचीनता-प्रदर्शक दो पहाड़ोंका पता लगा है। जिनमें अशोक तथा उनसे भी प्राचीन अनेक राजा महाराजाओं तथा आचार्य्योंके शिलालेख हैं। कहा जाता है कि इन दोनों पहाड़ों में सात सौ गुफाएं हैं। खण्डगिरि पर्वतपर कटकनिवासी परवारोंके पूर्वजों का एक बड़ाभारी जैनमन्दिर बनाया हुआ है। परन्तु कालके प्रभावसे वह अत्यन्त जीर्ण शीर्ण हो रहा है। उसका जीर्णोद्धार करने तथा धर्म्मशाला आदि बनानेका पूर्ण प्रबन्ध हो रहा है। इसके विषयमें जिसको जो कुछ पूछना हो वे हमसे पूछ सकते हैं।

*　　*　　*

भारतवर्षीय दिगम्बर जैनधर्म्म-प्रवोधिनी सभाका वार्षिकोत्सव—इस सभाके स्थापित हुए आज एक वर्ष पूर्ण हो गया। वास्तवमें यह अपने रूपकी एकही सभा है। वर्त्तमान समयमें प्रायः ऐसीही चरित्रसुधारिणी और सन्मार्ग-प्रदर्शिनी सभाओंकी आवश्यकता है। इस सभाके आज तक अट्ठारह अधिवेशन हो चुके हैं। इसने और सभाओंकी तरह कोरे प्रस्ताव (पश्चात्ताप) पास न कर बहुत कुछ सफलता प्राप्त की है। अभीतक इसके साढ़े तीन सौ मेम्बर हो चुके। इसके सच्चरित्रधारी मेम्बरोंमें बड़ा ही उत्साह है। और मैं हृदयसे इस सभाकी वृद्धि चाहता हूं। जिसको नियमावली अथवा फार्म मंगाना हो वे हमसे मंगा सकते हैं। हम श्रीजिनवाणीसे प्रार्थना करते हैं कि इस सभाके उत्साहकी ऐसीही वृद्धि हुआ करे।

*　　*　　*

शास्त्रभण्डाराधिपतियोंसे प्रार्थना—जिन विज्ञोंके पास किसी भाषा तथा किसी लिपिके जीर्ण शीर्ण शास्त्र हों वे कृपा करके "श्रीजैनसिद्धान्त भवन आरा"

Ac. Gunratnasuri MS　　Jin Gun Aradhak Trust

को भेज दें। क्योंकि भवन में कई पण्डित जीर्ण शीर्ण शास्त्रोंको सुधार रहे हैं। आशा है कि वे अपने जीर्ण शीर्ण शास्त्रोंको भवन-द्वारा परिष्कार और सुरक्षा करवाकर जैनधर्म्मको बचायेंगे।

* * *

सहायकोंसे प्रार्थना—"श्रीजैन-सिद्धान्त भवन" की अनेक महोदयोंने असाधारण सहायता की है। स्थानाभावके कारण सहायता की विवृति तथा सहायकोंकी नामावली धन्यवादपूर्वक हम अगली किरणमें प्रकाशित करेंगे।

* * *

वार्षिकोत्सव—"भवन" के वार्षिकोत्सवका समय तुरन्त निश्चित होनेवाला है। कई अनिवार्य्य कारणोंसे वार्षिकोत्सव ठीक समय पर नहीं हो सका।

* * *

स्त्रियोंकी उदारता—जब आरामें त्यागी श्रीमान् ऐलक पन्नालालजी आये हुए थे, उसवक्त आपके उपदेशसे आरा जैन-समाजकी धर्म्मपरायणा स्त्रियोंने "श्रीजैन-सिद्धान्त भवन" आराके भवन बननेके लिये बातकी बातमें पन्द्रहसौ रुपये दे दिये। यदि समाजके और लोग भी ऐसी उदारता दिखावें तो धार्म्मिक और सामाजिक उन्नतिका एक बड़ा भारी कार्य्य होसकता है।

* * *

सूचना—हमारे जिन पाठकोंने पत्रद्वारा अथवा फार्म भेजकर ग्राहक या सभासद होनेकी सूचना दी है उनके यहां भास्कर की अग्रिम किरण वी० पी० द्वारा पहुंचेगी। जिन्हें नये ग्राहक होना हो शीघ्र सूचना दें नहीं तो बहुतसे महाशय नमूना मांग रहे हैं। भास्कर नमूनेमें किसीको नहीं दिया जायगा।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

# श्रीजैनसिद्धान्त-भास्करके नियम।

१। यह पत्र तीन तीन महीनेपर प्रकाशित हुआ करेगा।

२। सर्वसाधारणके लिये डाक व्यय-सहित इसका वार्षिक मूल्य ३) रु० है किन्तु राजा महाराजाओंके सम्मानार्थ १००) रु० रहेगा। प्रति किरणका मूल्य १) रु० है। बिना अग्रिम मूल्यके यह पत्र नहीं भेजा जा सकता। इसकी पुरानी प्रतियां देनेके लिये "भवन" बाध्य नहीं होगा। यदि पुरानी प्रति मिलेगी भी तो उसका मूल्य कुछ विशेष लिया जायगा।

३। यदि किसीको पता बदलवाना हो तो वे सम्पादक-कार्य्यालय कलकत्तेसे पत्र व्यवहार कर ठीक कर लें।

४। यदि निर्यमित तिथिपर पाठकोंके यहां "भास्कर" नहीं पहुंचे तो वे हमें सूचना देंगे। हम डाकखानेमें इसकी पूरी खोज करेंगे।

५। लेख, समालोचनाके लिये पुस्तक, बदलेके पत्र, मूल्य और प्रबन्ध-सम्बन्धी पत्र सम्पादक "श्रीजैन-सिद्धान्त-भास्कर" नं० ८ जगमोहन मल्लिक ष्ट्रीट कलकत्तेके पतेसे आना चाहिये। किन्तु "भवन" के सहायतार्थ शास्त्र और पुरातत्व-सम्बन्धी शिलालेखादि मन्त्री "श्रीजैनसिद्धान्त-भवन आरा" के पतेसे भेजना चाहिये।

६। किसी ऐतिहासिक अथवा सैद्धान्तिक-लेख प्रकाशित करने वा न करनेका तथा लौटाने वा नहीं लौटानेका पूर्ण अधिकार सम्पादकको है। यदि कोई लेख सम्पादक लौटाना चाहें तो उनका डाक व्यय और रजिष्टरीका खर्च लेखकको देना पड़ेगा। अन्यथा नहीं लौटाया जा सकता।

७। अधूरे लेख नहीं छापे जायंगे। स्थानके अनुसार लेख एक वा अधिक किरणोंमें प्रकाशित होते रहेंगे।

८। इस पत्रमें ऐतिहासिक अथवा सैद्धान्तिक लेखोंके सिवा राजनैतिक आदि विषयोंकी चर्चा तक नहीं की जायगी।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मुनि श्री
पुस्तक का नाम
नंबर

## चित्र-सूची।


१ स्वर्गीय बाबू देवकुमारजी ... ... ...
२ चन्द्रगिरि पर्वत पर श्री१०८ भद्रबाहु स्वामीका शिलालेख ...
३ चन्द्रगिरि पर्वतके शिलालेख की स्पष्ट प्रतिलिपि ... ...
४ श्रुतस्कन्ध-यन्त्र ... ... ... ...
५ जीर्णपत्रवृक्ष ... ... ... ...
६ जिनवाणीकी वर्त्तमान हीनावस्था ... ... ...


## विज्ञप्ति।

पाठकोंसे निवेदन है कि आप लोग "भास्कर" की प्रति साधारण पत्रोंकी तरह असावधानीसे मत खोवें। इसकी प्रति बहुत कम छपेगी। एक किरणसे दूसरी किरणका अधिकांश सम्बन्ध रहेगा। एक भी किरण भूल जानेसे सभी किरण अधूरीसी रह जायँगी इसलिये निवेदन है कि सावधानतासे आप लोग इसकी सभीकिरणोंकी रक्षा करनेकी कृपा करेंगे।

विनीत-विज्ञापक

**सम्पादक—पद्मराज रानीवाला।**
नं० ९ जगमोहन मल्लिक स्ट्रीट,
कलकत्ता।

Ac. Gunratnasuri MS
Jin Gun Aradhak Trust